ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा शरीफ़ का दीनी व समाजी तर्जुमान

तिमाही

# बरकत नामा

मुहर्रमुलहराम ता रबीउ़लअव्वल 1437 हिजरी — जि० 1 शुमारा 1

**सरपरस्ते आला**

अमीने मिल्लत हज़रत **सय्यद मुह़म्मद अमीन मियाँ** क़ादरी
सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे बरकातिया, मारहरा शरीफ़

**मजलिसे मुशावरत**

शरफ़े मिल्लत हज़रत **सय्यद मुह़म्मद अशरफ़** मारहरवी
चीफ़ इन्कमटैक्स कमिश्नर कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

फ़ज़्ले मिल्लत हज़रत **सय्यद मुह़म्मद अफ़ज़ल** क़ादरी
ए.डी.जी (लोकायुक्त) भोपाल, (मध्य प्रदेश)

रफ़ीक़े मिल्लत हज़रत **सय्यद नजीब हैदर** नूरी
सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे बरकातिया, मारहरा शरीफ़

**मजलिसे इदारत**

डॉ0 अह़मद मुजतबा सिद्दीक़ी — सय्यद मुह़म्मद अमान क़ादरी
सय्यद मुह़म्मद उस्मान क़ादरी — सय्यद ह़सन हैदर क़ादरी

**मुदीर**

**तौहीद अह़मद बरकाती**

कम्पोज़र व डिज़ाइनर: मुह़म्मद हाशिम ख़ान बरकाती

ख़त व किताबत का पताः तिमाही बरकत नामा

**Barkat Nama (Quarterly)**
**Al-Barkaat Islamic Research & Training Institute, Jamalpur, Aligarh (U.P) 202122**
**E-mail: mybarkatnama@gmail.com**

क़ीमत फी शुमारा : 30/— ₹
सालाना : 100/— ₹

*पब्लिशर और प्रोपराइटर सय्यद मुह़म्मद अमान क़ादरी ने सुन्नी पब्लिकेशन अनीस प्रिन्टर गली गढ़ियाँ कूचा चेलाँ निज़्द दरियागंज नई दिल्ली 2 से छपवाकर दफ़्तर तिमाही बरकत नामा (ABIRTI) अलबरकात अलीगढ़ से शाऐ किया। एडीटर तौहीद अह़मद बरकाती*

नोटः रिसाले से मुताल्लिक़ कोई भी मुक़द्दमा सिर्फ अलीगढ़ की अदालत में क़ाबिले समाअ़त होगा।

| मज़ामीन | पेज न0 | मज़मून निगार |
|---|---|---|
| **पैग़ामात** | | |
| कलेमाते आलिया | 4 | अमीने मिल्लत हज़रत सय्यद मुहम्मद अमीन मियाँ क़ादरी |
| गुलहाऐ शफ़क़त | 5 | हज़रत सय्यद हुसैन ज़ैदी |
| कलेमाते शरफ़ | 6 | हज़रत सय्यद मुहम्मद अशरफ़ मारहरवी |
| पैग़ामे फ़ज़ीलत | 9 | हज़रत सय्यद मुहम्मद अफ़ज़ल क़ादरी |
| हर्फ़े रिफ़ाक़त | 10 | रफ़ीक़े मिल्लत हज़रत सय्यद नजीब हैदर नूरी |
| मेरी बात | 11 | हज़रत सय्यद मुहम्मद अमान मियाँ क़ादरी |
| इदारिया | 12 | एडीटर |
| **अनवारे कुरआन** | | |
| अऊज़ुबिल्लाह व बिसमिल्लाह की तफ़सीर | 14 | मौ0 नोमान अहमद अज़हरी |
| **तजल्लियाते हदीस** | | |
| नीयत की अहमियत व फ़ज़ीलत | 16 | मौ0 मुहम्मद इरफ़ान अज़हरी |
| **आम मज़ामीन** | | |
| अपने अक़ीदों को जानिए | 19 | अल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही |
| सीरते रसूले अकरम ﷺ | 21 | मौ0 तौहीद अहमद बरकाती |
| हज़रत फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اَللّٰہُ عَنہُ | 24 | डॉ0 ज़ियाउल हबीब काज़मी |
| हज़राते हसनैन करीमैन رضی اللہ عنہما | 26 | मौ0 साजिद अली मिस्बाही |
| हज़रत शाह ऐनुलहक़ क़ादरी अलैहिर्रहमा | 30 | मौ0 उसैदुल हक़ क़ादरी अलैहिर्रहमा |
| चश्मो चिराग़े ख़ानदाने बरकात | 35 | मौ0 सय्यद मुहम्मद अमान क़ादरी |
| यौमे आशूरा की फ़ज़ीलत | 39 | मौ0 इक़बाल अहमद नूरी |
| ख़ानक़ाहे बरकातियाः एक ताअरूफ़ | 41 | डॉ0 अहमद मुजतबा सिद्दीक़ी |

| मज़ामीन | पेज न0 | मज़मून निगार |
|---|---|---|
| यौमे जम्हूरिया–ए–हिन्द | 44 | डॉ0 सय्यद मुहिब्बुल हक़ |
| **मशाइख़े ख़ानदाने बरकात** | | |
| हुजूर साहिबुल बरकात अलैहिर्रहमा | 45 | अमीने मिल्लत हज़रत सय्यद मुहम्मद अमीन मियाँ क़ादरी |
| हज़रत शाह हमज़ा ऐनी अलैहिर्रहमा | 48 | सय्यद मुहम्मद उस्मान क़ादरी |
| हज़रत शाह आले अहमद अलैहिर्रहमा | 50 | डॉ0 अहमद मुजतबा सिद्दीक़ी |
| हज़रत शाह इस्माईल हसन अलैहिर्रहमा | 53 | रफ़ीके मिल्लत हज़रत सय्यद नजीब हैदर नूरी |
| **ख़्वातीने इस्लाम** | | |
| सय्यदा महबूब फ़ातिमा नक़्वी कुद्दिसत सिर्रुहा | 56 | आलिमा फ़रहाना तबस्सुम |
| **नात व मन्क़बत** | | |
| हमदे बारी तआला | 58 | हज़रत सय्यद मुहम्मद अशरफ़ मारहरवी |
| मुहम्मद आबरूऐ मोमिनाँ हैं। | 59 | हुजूर अहसनुल उलमा अलैहिर्रहमा |
| सलाम ब हुज़ूर इमामे आली मक़ाम | 60 | हुजूर सय्यदुल उलमा अलैहिर्रहमा |
| **तिब व सेहत** | | |
| सही डॉक्टर कैसे चुनें? | 61 | डॉ मुहम्मद अफ़ज़ाल बरकाती |
| **बच्चों का कॉलम** | | |
| बड़ों का बचपन | 64 | हाफ़िज़ राशिद खान बरकाती |
| **मुर्शिदाने मारहरा के तब्लीग़ी दौरे** | | |
| हुजूर अमीने मिल्लत के तब्लीग़ी दौरे | 66 | मुहम्मद अकबर क़ादरी |
| हुजूर रफ़ीक़े मिल्लत के तब्लीग़ी दौरे | 69 | क़ारी मुहम्मद क़ौसर बरकाती |
| मुश्किल अलफ़ाज़ की तशरीह | 72 | इदारा |


**नोटः** मज़मून निगार के अफ़कार व ख़्यालात से इदारे का मुत्तफ़िक होना ज़रूरी नहीं है।

# कलेमाते आ़लिया

بسم الله الرحمن الرحيم
نحمده و نصلی علیٰ رسولہٖ الکریم

**सआ़दत आसार** सय्यद मुह़म्मद अमान सल्लमहू की तह़रीक पर मुतवस्सिलीने ख़ानदाने बरकात के लिये यह रिसाला मुरत्तब किया गया। इसकी सब से बड़ी इफ़ादियत तो सरेदस्त यह है कि हमारे तमाम अह़बाब व मुतवस्सिलीन ज़रूरी इस्लामी मालूमात के साथ–साथ ख़ानक़ाह के कवाईफ़ (ह़ालात) से ब ख़ूबी आगाह हो सकेंगे। **"अहले सुन्नत की आवाज़"** के क़दीम शुमारे जो काम माज़ी में किया करते थे, वह इंशाअल्लाह इस रिसाले के छपने से आगे जारी रह सकेंगे। इसका एक फ़ायदा यह भी है कि हमारे सिलसिले से वाबस्ता नौजवान अपनी क़लमी सलाहियतों को भी इस रिसाले के ज़रिये ख़ूब निखार सकते हैं। मैं अपने नौजवान बरकातियों को हुक्म देता हूँ कि जितनी भी जिसकी इल्मी लियाक़त और सलाहियत है, उसके ह़िसाब से इस रिसाले में अपनी इल्मी काविशों को ज़रूर इरसाल करें (भेजें)। ताकि तमाम अह़बाब व मुतवस्सिलीन को इससे तहरीक मिल सके। यह रिसाला आम फ़हम इसलिए भी है कि इसके ज़रिये वह हज़रात भी फ़ायदा उठा सकें जो बहुत मुश्किल उर्दू नहीं पढ़ सकते हैं। उम्मीद करता हूँ कि बहुत जल्द यह रिसाला बरकातियों में मक़बूल और मा'रूफ़ होगा, और हमारे भाई–बहन इससे अपनी मज़हबी दिलचस्पियों में इज़ाफ़ा कर सकेंगे। अल्लाह तबारक व तआ़ला इस रिसाले की इशाअ़त को जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये, और हम सब के वक़्त में ख़ूब बरकत दे, ताकि हम इसमें इल्मी तआ़वुन कर सकें।

आमीन बिजाही सय्यिदिल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व अ़ला आलिही व बारिक वसल्लिम

वस्सलाम्
**सय्यद मुह़म्मद अमीन क़ादरी**
ख़ादिमे सज्जादा आस्ताना–ए–बरकातिया मारहरा शरीफ़

# गुलहाऐ शफ़क़त

**अज़ीज़ो! अस्सलामु अलैकुम**

मेरे जीते जी हमारे बच्चों ने यह ख़ुशी भी हमको दिखाई कि जो काम मेरे ख़ाले मुहतरम (मामू) और बिरादराने मुहतरम ने ख़ानक़ाहे बरकातिया की अक़दार के एहया (ज़िन्दा करने) के लिये किया था, आज उसको उनके लायक़ फ़रज़न्द नये तर्ज़ से आगे बढ़ा रहे हैं।

मेरे भाई साहब हज़रत सय्यदुल उलमा और मेरे भाई जान हज़रत अहसनुल उलमा यह दोनों ही मेरे नाना मुजद्दिदे बरकातियत हज़रत सय्यद शाह इस्माईल हसन अलैहिर्रहमा के ऐसे नाएब थे कि जिन्होंने ख़ानक़ाह से जुड़े हुए तमाम लोगों को अपने सीने में सजा कर रखा, और उसी तरबियत का हिस्सा है कि ख़ानक़ाहे बरकातिया का मुरीद अपने पीरों पर जान छिड़कता है।

मैं दुआ करता हूँ कि खुदा वन्दे कुद्दूस इन देरीना (पुरानी) निस्बतों को और गहरा करे। तरीक़त के रिश्ते दोनों जानिब से बेहद मज़बूत हों। **"बरकत नामा"** वाले शाह बरकतुल्लाह अलैहिर्रहमा का फैज़ान हमारी झोलियों में बरसता रहे। मेरी जानिब से मेरे सब बच्चों के लिये दिली दुआऐं और नेक ख़्वाहिशात।

वस्सलाम़

**सय्यद हुसैन ज़ैदी**

ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा शरीफ़

# कलेमाते शरफ़

نحمده و نصلی علیٰ رسولہ الکریم

**ख़ानक़ाहे बरकातिया** से अक़ीदत और मुहब्बत का जज़्बा रखने वाले तमाम अहले सुन्नत को मुबारक कि उनके हाथों में इमामे सिलसिला–ए–बरकातिया सय्यदना शाह बरकतुल्लाह मारहरवी का **''बरकत नामा''** है।

हज़राते गिरामी! माहनामे, रिसाले और ख़बर नामे, शख़्सियत साज़ी और सलाहियतों को उभारने में हमेशा मददगार रहे हैं, और हमेशा रहेंगे। मालूमात ख़्वाह दीनी हों या दुनियावी, इन्सान को बावज़न और बावक़ार बनाने में हमेशा अहम किरदार निभाती रही हैं। इन तमाम चीज़ों के राब्ते में रह कर ही इन्सान अच्छे काम ख़ुद भी कर सकता है, और अच्छे कामों की दूसरों को भी रग़बत दिला सकता है। ज़बानें सब अल्लाह तआ़ला की अ़ता की हुई नेअ़मत हैं। बस अपनी बात पहुँचाने का हुनर और सलीक़ा चाहिए। यह हमारी कम नसीबी है कि हमने मादरी ज़बान (उर्दू) को सीखने, समझने, लिखने और बोलने में ख़ुद को पीछे रखा हुआ है, वर्ना उर्दू से प्यारी और मीठी ज़बान कहाँ है। ख़ुशी, ग़म, मुहब्बत और नफ़रत सभी का इज़हार जिस ख़ूबसूरती के साथ उर्दू के ज़रिये हो सकता है वह दूसरी ज़बानों में शायद इतना आसान नहीं। ख़ुदा वह दिन जल्द लाए जब हम सब उर्दू ज़बान बोलना, लिखना और पढ़ना जान जायें। अल्लाह तबारक व तआ़ला नीयत देखता है और उसी पर फैसले फ़रमाता है। दिल तो यह था कि **''बरकत नामा''** तिमाही रिसाला उर्दू में छपता और आप हज़रात पढ़ते, लेकिन आज हमारे नौजवान बच्चे बच्चियाँ उर्दू कम जानते हैं, और वक़्त की ज़रूरत यह है कि इस ज़वाल आमादा वक़्त में मज़हब, अक़ीदा, ईमान सबको मज़बूत करने के लिये कुछ न कुछ ऐसा फ़राहम कराया जाये कि समाज कुछ सोचने पर मजबूर हो, लिहाज़ा यह रिसाला हिन्दी रसमुल ख़त में निकला करेगा, और लोग उर्दू ज़बान पढ़ा करेंगे। अलबरकात के क़याम का मक़सद भी यही है कि अपने समाज में मुख़तलिफ़ अन्दाज़ से मुफ़ीद क़दम उठाऐ जाऐं। **''अलबरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट''** माशा अल्लाह मुतहर्रिक हो गया है। यह देख कर बेहद ख़ुशी होती है कि माशा अल्लाह 35 फ़ाज़िल नौजवान उलमा–ए–किराम अपनी शख़्सियतों को मज़ीद मुअ़तबर बनाने के लिये एक नये और मुअस्सिर अन्दाज़ में कोशिश कर रहे हैं। इस रिसाले की इशाअ़त उसी माहौल का नतीजा है। सआ़दत आसार सय्यद मुहम्मद अमान सल्लमहु की तजवीज़ थी कि एक रिसाला शाए किया जाये, ताकि ख़ानक़ाह से मुहब्बत करने वाले सभी भाई बहन भी इल्मी तौर से कुछ फ़ायदा उठा सकें। हम सब

को भी यह तजवीज़ बहुत मुफ़ीद महसूस हुई और फिर इसमें संजीदा कोशिशें की गईं और अच्छा नतीजा **''बरकत नामा''** की शक्ल में मौजूद है। नौजवान आलिम मौलाना तौहीद अह़मद बरकाती को इस का मुदीर मुन्तख़ब किया गया है। उम्मीद है कि वह इस काम को काम नहीं बल्कि अपने पीरखाने से अक़ीदत का एक ह़िस्सा समझेंगे।

राक़िमे हुरूफ़ के ज़ेहन में इस रिसाले की इशाअ़त के जो फ़ायदे फ़ौरी त़ौर पर समझ में आये, मैं सोचता हूँ अपने नौजवान बच्चों और बच्चियों तक पहुँचा दूँ ताकि रिसाले को पढ़ने में मज़ीद दिलचस्पी पैदा हो।

1. घरेलू सादा व सलीस ज़बान में मुरीदों और पीरों के दर्मियान गुफ़्तगू से रिश्तों में मज़बूती पैदा होगी।

2. बरकातियों में नस्र व नज़्म लिखने का रूझान पैदा होगा।

3. अह़बाब व मुतवस्सिलीन को ख़ानक़ाही मरासिम से ख़ातिर ख्वाह आगाही होगी।

4. बुज़ुर्गों के वाक़्यात जानने से अक़ीदा और अक़ीदत में बालीदगी होगी।

5. हर शुमारे में इस बात का ख़ास ख़्याल रखा जायेगा कि नौजवानों को उर्दू सीख़ने की तरग़ीब दी जाये, ताकि आने वाले वक़्त में वह लोग अपनी ज़बान में पढ़ लिख सकें।

6. इस रिसाले के ज़रिये बरकाती जो पूरे मुल्क और दुनिया में फैले हुये हैं, वह एक दूसरे को जान सकेंगे, और एक दूसरे की खुशी और ग़म में शरीक हो सकेंगे, जिससे उनमें मज़ीद मुह़ब्बत पैदा होगी।

7. इस रिसाले के ज़रिये ख़ानक़ाह शरीफ़, जामिया अलबरकात, जामिया अह़सनुल बरकात, मारहरा पब्लिक स्कूल और ख़ानक़ाह के जेरे असर चलने वाले इदारों की रूदाद बरकातियों को मिलती रहेगी, जिससे बरकाती अपनी ख़ानक़ाह की कारगुज़ारियों और ख़िदमात को जान सकेंगे और फ़ख़र महसूस कर सकेंगे।

8. ख़ानक़ाह में होने वाली तक़रीबात को जान सकेंगे।

9. जिस–जिस शहर में जो जो बरकाती तन्ज़ीमें काम कर रही हैं, उन सब के कामों की ख़बर एक दूसरे को मिलती रहेगी।

11. अह़बाब की दीनी और दुनियावी तरबियत होती रहेगी, और इस रिसाले के ज़रिये बरकातियों की दीनी और समाजी इस्लाह का ज़रूरी काम हो सकेगा।

12. तलबा को तालीमी रहनुमाई मिल सकेगी कि वह तालीम कैसे ह़ासिल करें, क्या कोर्स करें, किस मुक़ाबले में बैठें और कहाँ से स्कॉलरशिप ह़ासिल करें?

13. इस रिसाले के ज़रिये बरकाती जानेंगे कि किस तरह़ से वह दीने इस्लाम की ख़िदमत कर सकते हैं, और कैसे ख़ानक़ाह और तसव्वुफ़ की तालीम को आम कर के एक सालेह मुआशरा तैयार

किया जा सकता है।

14. इस रिसाले के तवस्सुत से बरकाती उश्शाक़ साल में चार दफ़ा अपनी ख़ानक़ाह में ह़ाज़िरी दे सकेंगे।

15. इस रिसाले के ''सेहत के कालम'' के ज़रिये हम बरकातियों की सेह़त का ख़्याल रख सकेंगे। अगर सेह़त अच्छी न हो तो इंसान इबादत का फ़रीज़ा भी बख़ूबी अन्जाम नहीं दे सकता।

16. इस रिसाले में नये मज़ामीन के अलावा दूसरे सुन्नी रिसालों के अच्छे मज़ामीन शामिल किये जायेंगे, ताकि हिन्दुस्तान और बैरूने (बाहर) हिन्द छपने वाले अहले सुन्नत के बेहतरीन रिसालों (जिनकी तादाद अच्छी ख़ासी है) के अच्छे इस्लाह़ी मज़ामीन हम तक पहुँच सकें।

17. इस रिसाले के ज़रिये बरकातियों में इस्लामी तरीक़े से ख़िदमते ख़ल्क़ का जज़्बा पैदा किया जायेगा, जिसका इस्लाम और ख़ानक़ाही निज़ाम में अहम मक़ाम है।

मुझे बहुत ख़ुशी है कि बरकाती नौजवानों में अपने पीरख़ाने से अक़ीदत और मुह़ब्बत में फरावानी अमल के ह़वाले से आई है। सोशल मीडिया पर हमारे नौजवान बरकाती अह़बाब बहुत मुतहर्रिक हैं, और अपनी–अपनी रोज़ मर्रा की ज़रूरतों के साथ–साथ अपनी ख़ानक़ाह शरीफ़ के लिये वक़्त निकाल रहे हैं। अलह़मदुल्लिाह हज़रत अमीने मिल्लत और बिरादरम रफ़ीक़े मिल्लत से मुह़ब्बत करने वाले अपने अ़मल और अपनी ख़िदमात को ख़ूब आगे बढ़ा रहे हैं। रब तबारक व तआ़ला इन मसनद नशीनों की उम्र व सेह़त में बरकत अ़ता फ़रमाये और मज़हबे इस्लाम और सुन्नियत व बरकातियत को फ़रोग अ़ता फ़रमाये। (आमीन)

आप सब को **''बरकत नामा''** बहुत मुबारक! इसको पढ़िए, समझिए, अ़मल कीजिए और हमेशा ख़ुश रहिए।

आपका

**सय्यद मुह़म्मद अशरफ़**

चीफ़ इनकमटैक्स कमिश्नर

कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

# पैग़ामे फ़ज़ीलत

بسم الله الرحمن الرحيم

**ख़ानक़ाहे बरकातिया** की पूरी तारीख़ इल्म की इशाअ़त और अहले इल्म के कारनामों से भरी पड़ी है। हमारे मशाइख़ की सबसे बड़ी करामत ही यह है कि दुनिया में रह कर दीन का काम करते रहे। दीन की इशाअ़त के लिये दुनिया और दुनिया वालों को अहम समझा, और दुनियादारों को सीधी राह पर लाने के लिये दीन को उन तक पहुँचाया। मैं समझता हूँ कि यह बहुत बड़ा कारनामा और तसव्वुफ़ की तालीम में एक सुनहरा बाब है।

आज पूरी दुनिया जिस बेराहरवी का शिकार है, उस सियासी, समाजी और इक़्तिसादी बुह़रान से छुटकारा पाने के लिये इल्म को बढ़ावा देना ज़रूरी है। जिहालत मौत का दूसरा नाम है, और जिहालत की एक ही ज़िद है, वह है ''इल्म''। लिहाज़ा सूफ़ियों, सालिकों, दरवेशों, दरगाहों और ख़ानक़ाहों से जुड़े लोग अब इल्म ह़ासिल करें, और दूसरों को भी जिहालत के अंधेरों से निकालें। ख़ानक़ाहे बरकातिया के इस तर्जुमान रिसाले से हम सब को बहुत तवक़्क़ुआत (उम्मीदें) हैं। ख़ुदा करे यह लिखने लिखाने–पढ़ने पढ़ाने का सिलसिला यूँ ही दराज़ रहे। हम सब का यह मुबारक क़दम हम सब को मुबारक हो।

आपका

**सय्यद मुह़म्मद अफ़ज़ल**

ए.डी.जी (लोकायुक्त) भोपाल (मध्य प्रदेश)

# हर्फ़े रिफ़ाक़त

بسم الله الرحمن الرحيم

**बरकातियों** को बहुत–बहुत मुबारक कि आज हम सब की बरकातियत से मुहब्बत में एक और बाब का इज़ाफ़ा हो रहा है। यानी बरकातियत का तर्जुमान रिसाला **''बरकत नामा''**बरकातियों को मुहब्बत, उलफ़त और अक़ीदत के जाम पिलाने के लिये हमारे दरमियान छपने जा रहा है।

बहुत दिनों से दिल में यह ख़्वाहिश थी कि कुछ ऐसा हो कि हम अपने दूर दराज़ के रहने वाले बरकातियों को अपने हाल बता सकें, और उनको जान सकें। सादा–सादा तरीक़े से घर की बातें कर सकें। उनकी ख़ुशियाँ जानें, उनके दुखों का अन्दाज़ा कर सकें। उनकी इस्लाह़ के लिये कुछ सामान मुहय्या कर सकें। उनकी अक़ीदतों को दोबाला करने के लिये कुछ ख़ानक़ाह की बातें हों। कुछ हम तुमको कुछ तुम हमको सुनाओ। अपने पीरख़ाने से जुड़े रहने के लिये सबसे अहम ज़रिया रिसाले और जरीदे की इशाअ़त है। जिससे राबता भी बढ़ेगा, और मुहब्बत का रास्ता भी हम्वार होगा। **''अलबरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट''** की पूरी टीम का शुक्रिया ख़ुसूसन मौलाना तौहीद अहमद बरकाती का जिनकी मेहनतें इस रिसाले की इशाअ़त में ख़ास तौर से नज़र आ रहीं है। रब्बे करीम ब तुफ़ैले सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस रिसाले को हमारे तमाम बरकाती अहबाब के हाथों में नफ़ा बख़्श बनाये और उनके इल्म में इज़ाफ़े का बाइस बने।

आमीन बिजाही सय्यिदिल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व अ़ला आलिही व बारिक वसल्लिम

वस्सलाम्
**सय्यद नजीब हैदर नूरी**
ख़ादिमे सज्जादा आस्ताना–ए–बरकातिया मारहरा शरीफ़

# मेरी बात

بسم الله الرحمن الرحيم

मेरे प्यारे सुन्नी, जन्नती, बरकाती भाईयों की ख़िदमत में **''बरकत नामा''** का पहला शुमारा हाज़िर है। अल्लाह तआ़ला का शुक्र है कि उसने अपने ह़बीबे पाक हज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सदक़े में इस ख़्वाहिश को पूरा फ़रमाया कि आज हमारी टीम आपके सामने ''बरकाती रिसाला'' लेकर ह़ाजिर है। यह बरकातियों का ख़ास रिसाला है। जिसके ज़रिये हम तमाम बरकाती भाई अपने मुर्शिदाने किराम की तह़रीरों, नसीह़तों और पैग़ामात को बराहे रास्त पढ़ने का शरफ़ ह़ासिल कर सकेंगे, और इसके अलावा एक दूसरे को बेहतर तरीक़े से जान सकेंगे। यह रिसाला बरकाती मुर्शिदाने किराम से हमें क़रीब करेगा, और इंशाअल्लाह तआ़ला इसके ज़रिये उनकी नसीह़तें और मुह़ब्बतें हमें मिलती रहेंगी।

पिछले कुछ दिनों से दिल में ख़्वाहिश थी कि ख़ानक़ाह की तरफ़ से कोई आसान और आम फ़हम रिसाला छपे जिससे हमारे बरकाती भाइयों की तरबियत होती रहे। अलह़म्दुलिल्लाह सबसे पहले अपने बरकाती भाइयों और दूसरे अह़बाब से मश्वरा किया कि रिसाला किस ज़बान में निकले जिससे ज़्यादा से ज़्यादा लोग फ़ायदा उठा सकें तो तक़रीबन 80 फ़ीसद लोगों की राय थी कि रिसाला हिन्दी रस्मुल ख़त में निकले । हमने अह़बाब के मश्वरों पर अ़मल करते हुए हिन्दी में ही रिसाला निकालने का फ़ैसला किया। अलह़म्दुलिल्लाह यह रिसाला हिन्दी में छपकर आपके हाथों की ज़ीनत बन रहा है। आप इस रिसाले को ख़ुद भी पढ़िए, अपने घर वालों को पढ़ाइए और दिगर अह़बाब को भी पढ़ने की तरग़ीब दीजिए ताकि इस रिसाले के ज़रिए ज़्यादा से ज़्यादा लोग फ़ायदा उठायें और अपनी दुनिया व आख़िरत को सवाँरें।

मैं मौलाना तौहीद अह़मद बरकाती मिस्बाही, मौलाना अब्दुल ह़कीम साह़ब, टाईपिस्ट मुह़म्मद हाशिम ख़ान बरकाती, जनाब सय्यद आमिर हुसैन रिज़वी, ABIRTI की पूरी टीम, जामिया अह़सनुल बरकात की पूरी टीम और उन तमाम हज़रात का शुक्र गुज़ार हूँ जिन्होंने किसी भी तरह से इस काम में हमारी मदद फ़रमाई, और दुआ़ करता हूँ कि अल्लाह तआ़ला हम सब को शाद व आबाद रखे, और दीन के कामों में बढ़–चढ़ कर ह़िस्सा लेने का हौसला अता फ़रमाए।

आमीन बिजाही सय्यिदिल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व अ़ला आलिही व बारिक वसल्लिम

आपका

**सय्यद मुह़म्मद अमान क़ादरी**

वली–ए–अहद सज्जादा नशीन आस्ताना–ए–बरकातिया मारहरा शरीफ़

## तौह़ीद अह़मद बरकाती ★

# इदारिया

अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों की हिदायत व रहनुमाई के लिये बहुत से अम्बिया–ए–किराम को इस दुनिया में भेजा और ''تِلْکَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰی بَعْضٍ'' (**तर्जमाः** यह रसूल हैं कि हमने इनमें से एक को दूसरे पर अफ़ज़ल किया। [अल बक़राः 253,]) के मुताबिक़ बाज़ अम्बिया को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी, और हमारे नबी–ए–पाक ﷺ को सारी काइनात से अफ़ज़ल बनाया। इसी तरह़ अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर की उम्मत को भी दूसरी तमाम उम्मतों पर फ़ज़ीलत दी। इस फ़ज़ीलत की वजह क़ुरआ़ने पाक में यह बताई गई कि उम्मते मुह़म्मदिया लोगों में इस्लाह़ और दावतो तब्लीग़ का काम करती है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः तर्जमाः तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुईं, भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मना करते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो। [आले इमरानः110] यानी इन्हें ''बेहतरीन उम्मत'' का दर्जा इसलिए दिया गया कि यह लोगों में दावत व तब्लीग़ का काम करते हैं।

सह़ाबा–ए–किराम और ताबईने एज़ाम ने अपने–अपने ज़माने में दावते दीन और तब्लीग़े इस्लाम का काम बख़ूबी अन्जाम दिया। उनके बाद सूफ़िया–ए–किराम ने इस सिलसिले को आगे बढ़ाया, और दुनिया के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में जा–जा कर अल्लाह के बन्दों तक इस्लाम के पैग़ामे अमन व सलाम को पहुँचाया। आज युरोप व अफ़्रीक़ा में बहुत से ऐसे मक़ामात हैं जहाँ मौजूदा ज़माने के वसाइल को इस्तेमाल कर के भी आसानी के साथ नहीं पहुँचा जा सकता, मगर सूफ़िया–ए–किराम तब्लीग़–ए–इस्लाम की ख़ातिर वहाँ तक पहुँच गये। यह सूफ़िया–ए–किराम की दावती और तब्लीग़ी कोशिशों का नतीजा है कि आज दुनिया के चारों ओर करोड़ों मुसलमान अपने दिलों में ईमान के चिराग़ रोशन किये हुए हैं। ह़ैरत की बात यह है कि जो लोग सूफ़िया, तसव्वुफ़ की तालीमात और ख़ानक़ाही निज़ाम के सख़्त मुख़ालिफ़ हैं वह भी इस ह़क़ीक़त का खुलेआ़म एतराफ़ करते हैं।

किसी शख़्स से बात करने और उस तक अपना पैग़ाम पहुँचाने के लिये आ़म तौर पर दो चीज़ों का सहारा लिया जाता है, ज़बान (तक़रीर) और क़लम (तह़रीर)। अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआ़ने पाक में इन दोनों का ज़िक्र फ़रमाया है। ज़बान की अहमियत का ज़िक्र करते हुये इरशाद हुआ हैः **तर्जमाः** अल्लाह ने इन्सान को पैदा किया और उस को बोलने की ताक़त दी। [अल–रह़मानः 3–4,] और क़लम के फ़वाईद की तरफ़ इशारा करते हुये यूँ बयान हुआ हैः **तर्जमाः** और पढ़ो! तुम्हारा रब ही सब से बड़ा करीम जिसने क़लम से लिखना

सिखाया। [अल अ़लक़ 3–4] लेकिन इन दोनों में फ़ायदे के लिहाज़ से तह़रीर पहले नम्बर पर है, इसलिए कि क़लम से लिखे हुए अलफ़ाज़ हमेशा बाक़ी रहते हैं, जबकि तक़रीर और बयान में इस्तेमाल किये जाने वाले अलफ़ाज़ हवा में मिलकर ख़त्म हो जाते हैं।

ख़ानक़ाहे बरकातिया हिन्दुस्तान की उन ख़ानक़ाहों की सफ़े अव्वल में है, जिन्होंने इस्लाम की दावत व तब्लीग़ के लिये इन दोनों तरीक़ों (तक़रीर व तह़रीर) को बख़ूबी इस्तेमाल किया। इस ख़ानक़ाह के मशाइख़ हुज़ूर ﷺ के इरशादः ''इल्म को लिख कर मह़फ़ूज़ करो!'' से अच्छी तरह़ वाक़िफ़ थे इसलिए तक़रीबन तमाम मशाइख़े बरकात ने कुछ न कुछ किताबें तसनीफ़ फ़रमायीं और अपने बाद वालों के लिये ढ़ेरों इल्मी सरमाया छोड़ा। आज ख़ानक़ाहे बरकातिया के पास जितना इल्मी ख़ज़ाना है, हिन्दुस्तान की शायद ही कोई ऐसी ख़ानक़ाह हो जिसके पास उतना इल्मी ख़ज़ाना हो। इस ख़ानक़ाह के मशाइख़ ने तफ़सीर व फ़िक़्ह, तारीख़ व सीरत, तिब व हिकमत, सुलूक व तसव्वुफ़ और अदब व शायरी जैसे दसियों मौज़ूआत पर अ़रबी, फ़ारसी, उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी ज़बानों में सैकड़ों किताबें तसनीफ़ फ़रमाईं, जो तर्जमा व तह़क़ीक़ और हवालों से सज कर नई छपाई के साथ एक–एक कर के मन्ज़रे आ़म पर आ रही हैं। ख़ानक़ाहे बरकातिया के माज़ी क़रीब के एक बुज़ुर्ग ताजुल उलमा हज़रत सय्यद शाह औलादे रसूल मुह़म्मद मियाँ क़ादरी अलैहिर्रह़मा ने इस्लामी सह़ाफ़त की अहमियत के पेशे नज़र अपनी मुबारक ज़िन्दगी में एक सालनामा रिसाला बनाम **''अहले सुन्नत की आवाज़''** जारी किया था। यह रिसाला **(तिमाही बरकत नामा)** उसी तह़रीक और सिलसिले की एक अहम कड़ी है। इसको जारी करने के पीछे मशाइख़े ख़ानदाने बरकात के जो मक़ासिद हैं उनको शरफ़े मिल्लत हज़रत सय्यद शाह मुह़म्मद अशरफ़ मारहरवी ने अपने पैग़ाम ''कलेमात शरफ़'' में तफ़सील से ज़िक्र कर दिया है, लिह़ाज़ा उन्हें यहाँ लिखने की ज़रूरत नहीं है।

**''तिमाही बरकत नामा''** का पहला शुमारा आपके हाथों में है। इस शुमारे में फ़िलहाल अनवारे कुरआन, तजल्लियाते ह़दीस, मशाईख़े ख़ानदाने बरकात, तिब व सेह़त, मुर्शिदाने मारहरा के तब्लीग़ी दौरे, ख़वातीन और बच्चो के कॉलम शामिल किये गये हैं। आइन्दा इंशा अल्लाह इसमें ह़सबे ज़रूरत फ़िक़्ही मसाइल, सीरत, ह़ालाते हाज़िरा, मशाइख़े सिलसिला का तआ़रूफ़, बरकाती ख़बरें, वगैरह कॉलमों का इज़ाफ़ा किया जायेगा।

यह शुमारा अ़रबी महीने के ह़िसाब से है, इसलिए इसमें माहे मुह़र्रमुलह़राम सफ़रूल मुज़फ़्फ़र और रबीउल अव्वल की मुनासिबत से मज़ामीन शामिल किये गये हैं, और इन महीनों में जिन–जिन मशहूर मशाइख़ का विसाल हुआ है उनके मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी पर भी मज़ामीन लिखवाये गए हैं। साथ ही यौमे जम्हूरिया (गणतंत्र दिवस) की मुनासिबत से इस के बारे में भी एक मज़मून शामिल किया गया है। इस रिसाले को पढ़ने वाले हज़रात इससे ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठायें, इसके लिये रस्मुलख़त हिन्दी रखा गया है। अल्लाह तआ़ला की बारगाह में दुआ़ है कि इस रिसाले के पढ़ने वालों को इससे खूब–खूब फ़ायदा ह़ासिल करने की तौफ़ीक़ बख़्शे और उनके इल्म व अ़मल में बरकतें अ़ता फ़रमाये। (आमीन)

★★★

tauheedahmad92@gmail.com

मौलाना नोमान अह़मद अज़हरी ★

अनवारेकुरआ़न

# अऊज़ुबिल्लाह और बिस्मिल्लाह की तफ़सीर

(1) اَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

(2) بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

(1) **तर्जमाः** मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूँ मरदूद शैतान से।

(2) **तर्जमाः** अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहम वाला।

(1) **अलफ़ाज़ की तशरीहः** اَعُوْذُ, عَوْذٌ से बना है जिसका मतलब है पनाह लेना। इसका मतलब है, मैं पनाह लेता हूँ। شَيْطٰنُ इसके बारे में दो क़ौल हैं। (1) यह شَطْنٌ से बना है जिसका मतलब है दूर होना, चूँकि शैतान अल्लाह की बारगाह से दूर हुआ था इसलिए उसको शैतान कहा जाता है। (2) यह شَيْطٌ से बना है जिसका मतलब है बातिल होना। चूँकि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा न करने की वजह से शैतान की सारी नेकियाँ बातिल (बेकार) हो गई थीं, इसलिए उसका नाम शैतान हुआ।

اَلرَّجِيْمُ शैतान की सिफ़त है, जिसका मतलब है मरदूद, भगाया हुआ। चूंकि शैतान अल्लाह की नाफ़रमानी करने की वजह से अल्लाह की बारगाह से भगा दिया गया था। इसलिए उसकी सिफ़त اَلرَّجِيْمُ पड़ गयी।

**अऊज़ुबिल्लाह की तफ़सीरः** दुनिया का हर आदमी अपने दुश्मन से बचना और उस पर क़ाबू पाना चाहता है, और अगर दुश्मन ज़्यादा ताक़तवर होता है तो वह उससे बचने के लिये ऐसे का सहारा ढूँढता है जो उसके दुश्मन से उसे पूरी तरह बचा सके। अल्लाह तआ़ला ने कुरआ़ने पाक में फ़रमायाः "शैतान इंसान का खुला हुआ दुश्मन है।" [यूसुफ़ः 5] इसलिए मुसलमानों को हर हाल में और ख़ास तौर से कुरआ़ने पाक पढ़ने से पहले शैतान से अल्लाह की पनाह माँगने का हुक्म दिया गया। जैसा कि अल्लाह तआ़ला का इरशाद हैः

**तर्जमाः** जब तुम कुरआ़न पढ़ना चाहो तो (पहले) शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह मांगो। [अल–नह़लः98]

**अऊज़ुबिल्लाह पढ़ने की ह़िकमतेंः** (1) अऊज़ुबिल्लाह पढ़ना गोया मख़्लूक़ से ख़ालिक़ की तरफ़ लौटना है और यह तसव्वुफ़ की पहली सीढ़ी है। (2) अऊज़ुबिल्लाह पढ़ने में अपनी मजबूरी और बेबसी का इज़हार और अल्लाह तआ़ला की कुदरत का इक़रार है। (3) अऊज़ुबिल्लाह ज़बान और दिल की पाकी है। कुरआ़न पढ़ने से पहले जिस तरह अपने जिस्म

और कपड़े को पाक किया जाता है, उसी तरह अपनी ज़बान और दिल को भी।

**अऊज़ुबिल्लाह की फ़ज़ीलतः** (1) तक़रीबन तमाम नबियों ने अऊज़ुबिल्लाह पढ़ा है, और खुद हुज़ूर ﷺ को अल्लाह तआ़ला ने कुरआ़ने पाक में अऊज़ुबिल्लाह पढ़ने का हुक्म दिया है। (2) बहुत सी ह़दीसों में अऊज़ुबिल्लाह पढ़ने की फ़ज़ीलतें आई हैं। चुनाँचे एक ह़दीस में है कि एक आदमी को बहुत ज़्यादा गुस्सा आया। गुस्से की वजह से उसके मुँह से झाग निकल रहे थे। यह देखकर हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः अगर यह आदमी अऊज़ुबिल्लाह पढ़ले तो इसकी यह हालत (गुस्सा) दूर हो जाये। [तफ़सीर नईमी जि0 1 पे0 37]

**(2) अलफ़ाज़ की तशरीहः** اَللّٰه उस ज़ाते वाजिबुल वजूद का नाम है जो तमाम सिफ़ाते कमालिया का जामेअ़ है। اَلرَّحْمٰن और اَلرَّحِيْم दोनों رَحْمٌ से बनें हैं। رَحْمٌ का मतलब है, नरम दिल होना और किसी पर मेहरबानी करना। अल्लाह तआ़ला चूँकि दिल वग़ैरह अंगों से पाक है इसलिए यहाँ इसके यह माअने होगें ''फ़ज़ल व एहसान फ़रमाने वाला।'' اَلرَّحْمٰن अल्लाह तआ़ला की ख़ास सिफ़त है लिहाज़ा किसी दूसरे को रहमान'' नहीं कहा जा सकता।

**बिस्मिल्लाह की तफ़सीरः** पूरे कुरआ़न में कुल 114 सूरतें हैं। जिनमें से ''सूरह तौबा'' के सिवा हर सूरत के शुरू में बिस्मिल्लाह लिखी हुई है, और पूरे कुरआ़न में सिर्फ़ एक जगह (सूरह नमल में) बिस्मिल्लाह आयत बनकर उतरी है। कुरआ़न व अह़ादीस में बिस्मिल्लाह की बड़ी फ़ज़ीलतें आईं हैं। जिनमें से चन्द को यहाँ लिखा जा रहा है।

**बिस्मिल्लाह की फ़ज़ीलत और फ़ायदेः** (1) ह़ज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर ﷺ ने उनसे फ़रमायाः ऐ अबू हुरैरा! जब तुम वुज़ू करो तो उससे पहले बिस्मिल्लाह पढ़ लो, इसलिए कि अगर तुम बिस्मिल्लाह पढ़ लोगे तो जब तक तुम्हारा वुज़ू रहेगा तब तक फ़रश्ते तुम्हारे ह़क़ में नेकियाँ लिखते रहेंगे। [तबरानी सग़ीर ह0 न0 186]

(2) हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः जिस खाने पर बिस्मिल्लाह नही पढ़ी जाती है वह खाना शैतान के लिये ह़लाल हो जाता है। [मुस्लिम शरीफ़ ह0 न0 2017]

बिस्मिल्लाह के बे शुमार फ़ायदे हैं, जैसे नेक काम के शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ी जाए तो वह काम पूरा हो जाता है। जिस खाने के शुरू में बिसमिल्लाह पढ़ लिया जाये तो वह खाना शैतान से महफ़ूज़ हो जाता है, और उसमें बरकत होती है। बीमार बिस्मिल्लाह पढ़ कर दवा पीले तो इंशाअल्लाह शिफ़ा पाएगा।

**फ़िक़्ही मसाइलः** कुरआ़न की तिलावत से पहले अऊज़ुबिल्ला और बिस्मिल्लाह पढ़ना सुन्नत है, इस तरह कि पहले अऊज़ुबिल्ला पढ़े फिर बिस्मिल्लाह। नाजाइज़ व ह़राम काम जैसे चोरी, शराब, ग़ीबत, ज़िना वग़ैरह करते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ना ह़राम है। इस्तिन्जा ख़ाना (शौचालय) में पहुँच कर बिस्मिल्लाह पढ़ना मना है।

★★★

★ शोबा–ए–दीनियात अलबरकात अलीगढ़।

मौलाना मुहम्मद इरफ़ान अज़हरी ★

तज़ल्लियाते हदीस्

# नीयत की अहमियत व फ़ज़ीलत

**عن عمر بن الخطاب رضی الله عنه قال: سمعت رسول الله صلی الله علیه وسلم یقول: "انماالأعمال بالنیات و انما لکل امرىء مانوی، فمن کانت هجرته الی الله ورسوله فهجرته الی الله ورسوله، ومن کانت هجرته لدنیا یصیبها او امراة یتزو جها فهجرته الی ماها جر الیه: (رواه البخاری و مسلم)**

**तर्जमाः** हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है। उन्होंने कहा कि रसूले अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः बेशक तमाम आ़माल का सवाब नीयतों पर मौकूफ़ (निर्भर) है, और हर आदमी के लिये वही है जो उसने नीयत की, तो जिस शख़्स की हिजरत अल्लाह और उसके रसूल ﷺ की खुशी के लिये हो उसकी हिजरत अल्लाह और उसके रसूल के लिए है। और जिस शख़्स की हिजरत दुनिया ह़ासिल करने के लिये या किसी औरत से शादी करने के लिये हो तो उसकी हिजरत उसी के लिये होगी जिस नीयत से उसने हिजरत की है।

इस ह़दीसे पाक में अल्लाह के रसूल ने ख़ास तौर से दो चीजों का ज़िक्र फ़रमाया है। एक अ़मल और दूसरी नीयत। फिर एक मिसाल के ज़रिये बताया कि किसी भी अच्छे अमल पर उसी वक़्त सवाब मिलेगा जब इन्सान की नीयत अच्छी होगी।

**ह़दीस की ख़ुसूसियातः** 1. यह बुख़ारी शरीफ़ की सब से पहली ह़दीस है। 2. मुह़द्देसीन ने इस ह़दीस को उन बुनियादी ह़दीसों में से शुमार किया है जिन पर दीने इस्लाम का दारोमदार है। इमाम अबू दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु इस ह़दीस के बारे में फरमाते हैं कि लाखों अह़ादीस के ख़ज़ानों में से दीन पर अ़मल करने के लिये सिर्फ़ चार ह़दीसें काफ़ी हैं, और उन में से एक यह ह़दीस(**انما الاعمال بالنیات**) है। 3. आ़म तौ़र से मुह़द्देसीन–ए–किराम उस ह़दीस को अपनी किताब के शुरू में लिखते हैं जिससे यह इशारा होता है कि उनका यह अ़मल (किताब लिखना) ख़ालिस अल्लाह और उसके रसूल ﷺ की ख़ुशी के लिये है, दिख़ावे के लिए नहीं है।

**अल्फ़ाज़ की वज़ाहतः** नीयत दिल के इरादे को कहते हैं, और इस ह़दीस में नीयत से मुराद अल्लाह तआ़ला की रिज़ा (ख़ुशी) पाने और उसके दरबार में क़ुर्ब (नज़दीकी) ह़ासिल करने का इरादा है।

**हिजरतः** लुग़त (डिक्शनरी) में हिजरत का मतलब है, किसी चीज़ को छोड़ देना। जैसा कि एक ह़दीस में है।

**तर्जमाः** बेशक कामिल दर्जे का मुहाजिर वह है जो अल्लाह तआ़ला की मना की हुई तमाम चीज़ों को छोड़ दे। और शरीअ़त में हिजरत यह है कि मुसलमान अल्लाह तआ़ला की ख़ुशी के लिये अपने शहर या मुल्क को छोड़ कर किसी दूसरे शहर या मुल्क में चला जाये, जहाँ उसका दीन व ईमान महफ़ूज़ रह सके।

**ह़दीस का पस मंज़रः** हज़रत अल्लामा

बदरूद्दीन ऐनी रह़मतुल्लाह अलैहि अपनी किताब ''उमदतुल क़ारी शरह बुख़ारी'' में लिखते हैं, कि इमाम तबरानी ने ''मुअ़जमे कबीर'' में बयान किया है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि एक मुसलमान औरत जिस का नाम क़ैला था मगर आ़म त़ौर पर लोग उसे ''उम्मे कैस'' कहा करते थे, उस औरत को एक शख़्स ने निकाह़ का पैग़ाम दिया। उम्मे कैस ने उस शख़्स को यह जवाब दिया कि जब तक तुम मक्का से मदीना हिजरत नहीं करोगे तब तक मैं तुमसे निकाह़ नहीं करूँगी। आख़िर कार उस शख़्स ने निकाह़ करने के लिये हिजरत की। सह़ाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में यह बात मशहूर हो गई, और सह़ाबा उस शख़्स को ''मुहाजिरे उम्मे कैस'' कहने लगे, और वह शख़्स उस लक़ब से बहुत मशहूर हो गया।

जब इस वाक़ये की ख़बर हुज़ूर अकरम ﷺ को हुई तो आपने उस शख़्स को तम्बीह करने के लिये ख़ुतबा के बीच में मिम्बर पर इरशाद फ़रमायाः ''انما الاعمال بالنیات'' यानी आमाल का सवाब नीयतों पर मौक़ूफ़ है, लिहाज़ा जो शख़्स जिस नीयत से हिजरत करेगा उस को वही (सवाब या गुनाह) मिलेगा।

**ह़दीस की शरह़ः** इस ह़दीस का मतलब है कि आमाल दो तरह के होते हैं। बुरे आमाल और अच्छे आमाल। बुरा अ़मल तो चाहे अच्छी नीयत से किया जाये या बुरी नीयत से, वह हर सूरत में बुरा ही रहेगा। उस पर सवाब नहीं मिलेगा बल्कि वह बाइसे अज़ाब ही रहेगा। अब रहा अच्छा अमल तो उसके बारे में हुज़ूरे अकरम ﷺ ने फ़रमाया है कि तमाम अच्छे आमाल चाहे इबादत के आमाल हों या आदत के, उन कामों पर सवाब उसी वक़्त मिलेगा जब उन कामों को अल्लाह और उसके रसूल की खुशनूदी ह़ासिल करने की नीयत से किया जाये, और कोई अ़मल चाहे कितना ही बड़ा क्यों न हो अगर उसे अल्लाह की रिज़ा के लिये न किया जाये, बल्कि दिखावा, शोहरत, लज़्ज़ते नफ़्स या किसी बुरे मक़सद से किया जाए तो भले ही वह अमल फर्ज़ व वाजिब ही क्यों न हो, उस पर हरगिज़ कोई सवाब नहीं मिलेगा, बल्कि वह उल्टा बाइसे अज़ाब बन जायेगा।

मिसाल के तौर पर नमाज़ एक बेहतरीन और अच्छा अमल है कि सबसे अफ़ज़ल इबादत है। अगर नमाज़ अल्लाह की रज़ा व खुशनूदी हासिल करने और फ़र्ज़े खुदावंदी को अदा करने की नीयत से पढ़ी जाये तो ऐसी नमाज़ पर बे शुमार अज्र व सवाब मिलेगा। लेकिन यही नमाज़ कोई इस नीयत से पढ़े कि लोग मुझे नमाज़ी समझ कर मेरी इज़्ज़त करेंगे, और मेरी बुजुर्गी का ख़ूब चर्चा होगा, तो ज़ाहिर है कि यह नमाज़ जो सबसे अफ़ज़ल इबादत थी, बुरी नीयत से बदतरीन गुनाह का सबब बन गई। तो ऐसे नमाज़ी को अज़ाब के अलावा क्या मिलेगा? ग़रज़ यह कि एक ही अच्छा अमल नेक नीयत से लायक़–ए–सवाब और बुरी नीयत से बाइस–ए–अज़ाब बन जाता है। इसी लिये तो हुज़ूरे अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि तमाम आमाल के सवाब का दारोमदार नीयतों पर है, और हर आदमी को उसकी नीयत के एतबार से ही सवाब मिलता है ।

नबी–ए–करीम ﷺ ने इस क़ायदे को बयान फ़रमाने के बाद उसकी वज़ाह़त भी

फ़रमाई कि जो अल्लाह और उसके रसूल की रज़ा जोई के लिये हिजरत करता है उसकी हिजरत अल्लाह और उसके रसूल के दरबार में मक़बूल होती है, और अल्लाह तआ़ला उस पर अपने फ़ज़ल व करम से बे हिसाब सवाब अ़ता फरमाता है। और जो शख़्स किसी दुनियावी फ़ायदे के लिये या किसी औरत से निकाह़ करने की नीयत से हिजरत करता है तो उसकी हिजरत का मक़सद वही दुनियावी फ़ायदा और वही औरत है, और रहा सवाब तो वह बिलकुल नहीं मिलेगा।

**अच्छी नीयत का फलः** मिश्कात शरीफ़ की ह़दीस है। अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमायाः एक शख़्स ने अहद (इरादा) किया कि मैं छुप कर सदक़ा करूँगा। वह शख़्स रात को सदक़े का माल लेकर घर से निकला और एक चोर को ग़रीब समझ कर माल दे दिया। सुबह को इस बात का चर्चा हो गया, और लोग आपस मे बातें करने लगे कि किसी ने आज रात एक चोर को सदक़ा दे दिया। जब उस शख़्स को ख़बर हुई तो उसने कहाः या अल्लाह! तेरे लिये तारीफ़ है। अफ़सोस! मेरा सदक़ा एक चोर के हाथ में चला गया। फिर दूसरी रात सदक़े का माल लेकर निकला, और एक ज़िनाकार औरत को ग़रीब समझकर दे दिया। सुबह को लोगों में इसका भी चर्चा हो गया। उसने फिर वही बात दोहराई। तीसरी रात को वह शख़्स सदक़ा लेकर निकला, और एक मालदार आदमी को फ़क़ीर समझ कर दे दिया। सुबह को फिर लोगों में इसका चर्चा हुआ। उस शख़्स ने फिर वही बात दोहराई और अफ़सोस व फ़िक्र में सो गया। ख़्वाब में अल्लाह की तरफ़ से एक फ़रिश्ते ने उसे ख़ुशख़बरी सुनाई, कि तेरा हर एक सदक़ा बारगाहे इलाही में मक़बूल है। तूने जो चोर को सदक़ा दिया तो उम्मीद है कि वह उस रात को चोरी से बच गया होगा। और जो ज़ानिया को सदक़ा दिया तो उम्मीद है कि उस रात ज़िनाकारी से बच गयी होगी। और मालदार को सदक़ा दिया तो उम्मीद है कि उसे इबरत हो और वह भी सदक़ा देने लगे।

ऊपर की ह़दीसे मुबारका का ख़ुलासा यह है कि जो काम अल्लाह और उसके रसूल ﷺ की रज़ा और ख़ुशनूदी ह़ासिल करने के लिये किया जाये वह बारगाहे इलाही में मक़बूल होता है, और अल्लाह तआ़ला उस काम के करने वाले को बे हिसाब अज्र व सवाब अ़ता फ़रमाता है। और जो काम दिखावा, शोहरत, लज़्ज़ते नफ़्स या किसी दुनियावी फ़ायदे के लिये किया जाये वह बारगाहे इलाही से मरदूद हो जाता है, और ऐसे शख़्स को अज़ाब के सिवा कुछ नहीं मिलता है। अल्लाह तआ़ला की बारगाह में दुआ़ है। कि हमारी नियतों में इख़्लास अ़ता फरमाये। (आमीन)

★★★

★ **उस्ताद जामिया अह़सनुल बरकात, मारहरा शरीफ़।**

## मुबारकबाद

बिरादरे तरीक़त जनाब मुह़म्मद अकबर क़ादरी साह़ब और उनकी अह़लिया साह़िबा को इस साल (2015) ह़जे बैतुल्लाह की सआ़दत ह़ासिल करने पर **"बरकत नामा"** की तरफ़ से मुबारक बाद।

अल्लाह तआ़ला उनके ह़ज को क़बूल फ़रमा कर ज़रिया–ए–निजात बनाए। (आमीन)

**इदारा**

मौलाना मुहम्मद अहमद मिस्बाही ★

# अपने अक़ीदों को जानिए।

दुनिया में मुसलमान, यहूदी, इसाई, हिन्दू, सिख वग़ैरह बहुत सी क़ौमें पाई जाती हैं। इन क़ौमों में अस्ल फ़र्क़ क्या है? और किस बुनियाद पर इनको अलग–अलग क़ौम में शुमार किया जाता है? इस पर आप ग़ौर करेंगे तो मालूम होगा कि इन में अस्ल फ़र्क़ अक़ीदे का है। इन सब का अक़ीदा अलग–अलग है, इसलिए इनको अलग–अलग नामों से याद किया जाता है। अब ख़ास तौर से एक मुसलमान को यह जानना ज़रूरी है कि वह कौन से अक़ीदे हैं जिन की वजह से वह मुसलमान कहलाता है और बाक़ी क़ौमों से अलग शुमार होता है।

मुसलमान अपने कलिमे لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ की वजह से दूसरों से अलग हो जाता है, इसलिए कि यह कलिमा किसी और क़ौम का नहीं है। इस कलिमे का मतलब (अर्थ) यह है कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं।

अल्लाह को माबूद (ख़ुदा) और हज़रत मुहम्मद ﷺ को अल्लाह तआला का रसूल मानने का मतलब यह है कि उनकी बताई हुई जितनी दीनी बातें हैं सब को माना जाए। जितनी बातों से मुतअ़ल्लिक़ क़तई यक़ीनी तौर पर साबित है कि यह रसूलुल्लाह की लाई हुई हैं वह इस्लाम का हिस्सा हैं। उन सब को माने बिना कोई शख़्स मुसलमान नहीं हो सकता, और उनमें से किसी एक का भी इन्कार करने की वजह से आदमी इस्लाम से बाहर हो जाता है, इसलिए हर शख़्स को उन सारी बातों का इल्म होना ज़रूरी है जिन को मानने से आदमी मुसलमान होता है, और उन में किसी एक को न मानने से काफ़िर हो जाता है। इतना इल्म सीखना हर मुसलमान के लिए फ़र्ज़े क़तई (ज़रूरी) है ताकि वह इस्लाम पर डटा रहे और कुफ़्र से बचा रहे।

आज कुछ लोग बहुत कुछ पढ़ लेते हैं, और अच्छी डिग्रियाँ भी हासिल कर लेते हैं मगर अपने दीन की बुनियादी बातों से बे ख़बर (अन्जान) होते हैं, इसलिए दूसरी क़ौम का आदमी उन्हें बड़ी आसानी से अपना बना लेता है। अगर यह लोग इस्लाम की क़तई ज़रूरी बातों से अच्छी तरह आगाह होते तो कभी दूसरों के बहकावे में न आते, और इस्लाम पर मज़बूती से डटे रहते।

इसी तरह कुछ लोग वो हैं जो मुसलमान कहे जाते हैं मगर इल्म नहीं रखते, खुसूसन उन के पास दीनी मालूमात बहुत कम होती हैं। अक़ीदे और नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज वग़ैरह की अहम बातों से ना वाक़िफ़ (अन्जान) होते हैं। उनकी सारी तवज्जुह कमाने, खाने और अच्छी या ख़राब ज़िन्दगी गुज़ारने पर होती है। दीनी

बातें सीख़ने की कोई फ़िक्र नहीं होती। इसी लिए न उनको अक़ीदे का सही पता होता है और न अमल की दुरूस्तगी का पता होता है।

जब आदमी अपने को मुसलमान कहता है और दूसरे भी उसको मुसलमान समझते हैं तो उसे इतनी ख़बर तो होनी ही चाहिए कि वह कौन सी ज़रूरी और अलग बातें हैं जिन की वजह से हम मुसलमान कहलाने के हक़दार होते हैं, और जिनसे बे ख़बरी हमारी तबाही और हलाकत का सबब हो सकती है।

इसलिए इस रिसाले में यह हिस्सा ''बयाने अ़क़ाइद'' के लिए ख़ास किया जाता है। इस में इस्लाम के ज़रूरी बुनियादी अ़क़ीदे लिखे जाऐंगे, ताकि यह रिसाला पढ़ने वाले ख़ुद भी जानें और दूसरे लोगों को भी बतायें।

दीन की कोई बात सीखना, सिखाना बड़े अज्र व सवाब का काम है, और अ़क़ाइद सीखना सिखाना तो दुनिया और आख़िरत दोनों जगह के लिए बड़ी अहमियत रखता है। अल्लाह तआ़ला हम सब को दीन की बातें सीखने सिखाने की पूरी तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। (आमीन) ★★★

**★ (साबिक़) प्रिन्सिपल अल–जामियातुल अशरफ़िया मुबारकपुर आजमगढ़, यूपी।**

## मुबारकबाद

**हुज़ूर अमीने मिल्लत दामा जिल्लुहू सातवीं बार 500 बा असर मुस्लिम शख़्सियात में शामिल।**

अलहम्दुलिल्लाह हुज़ूर अमीने मिल्लत सय्यद शाह मुहम्मद अमीन मियाँ क़ादरी साहब का नाम लगातार 7 वीं बार दुनिया की 500 बा असर मुस्लिम शख़्सियात में शामिल हुआ है। इस ख़ुशी के मौक़े पर हम **''बरकत नामा''** और तमाम बरकातियों की जानिब से हज़रत को दिली मुबारकबाद पेश करते हैं।

अल्लाह तआ़ला हज़रत की उम्र व सेहत में बरकत अ़ता फ़रमाए और उनका साया हम पर ता देर क़ायम फ़रमाए। आमीन **(इदारा)**

**हज़रत शरफ़े मिल्लत दामा जिल्लुहू मध्य प्रदेश सरकार की तरफ़ से ''इक़बाल सम्मान'' से सम्मानित।**

अलहम्दुलिल्लाह हज़रत शरफ़े मिल्लत सय्यद शाह मुहम्मद अशरफ़ मियाँ मारहरवी साहब को इस साल मध्य प्रदेश सरकार की जानिब से **''इक़बाल सम्मान''** से नवाज़ा गया है। यह एज़ाज़ वहाँ की सरकार का अदब के मैदान में सबसे बड़ा एज़ाज़ माना जाता है।

हज़रत शरफ़ मिल्लत साहब को उनकी नसरी (कलमी) ख़िदमात के लिए इस अवार्ड से सम्मानित किया गया, जिसमें 2 लाख रूपये के साथ–साथ तौसीई रूक्का दिया जाता है।

इस ख़ुशी के मौक़े पर हम तमाम बरकातियों की तरफ़ से हज़रत को मुबारकबाद पेश करते हैं, और दुआ़ करते हैं कि अल्लाह तआ़ला हर मैदान में सरकारों का बोल बाला फ़रमाए। आमीन

**(इदारा)**

तौहीद अहमद बरकाती ★

# सीरते रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर अब तक अरबों इन्सान इस दुनिया में आए और क़ियामत तक आते रहेंगे, लेकिन हज़रत मुहम्मद मुस्तफा ﷺ वह अकेले इन्सान हैं, जिनकी पैदाइश को अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों पर बड़ा एह़सान क़रार दिया है। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला कुरआ़ने पाक में इरशाद फ़रमाता हैः

**तर्जमाः** बेशक अल्लाह का बड़ा एहसान हुआ मुसलमानों पर कि उनमें उन्ही में से एक रसूल भेज दिया...।[आले इमरानः 164]

हुजूर ﷺ की पैदाइश को मोमिनों पर बड़ा एह़सान इसलिए करार दिया गया है, क्योंकि आप ﷺ ''इन्सान'' की शख़्सियत के हर पहलू के जामेअ़ थे। और लोगों की मुकम्मल इस्लाह, पाकीज़गी, तहज़ीब और तरक़्क़ी के लिये भेजे गये थे। आप ﷺ ने इन्सानों को उनकी पैदाइश का मक़सद बताया, अल्लाह तआ़ला से उनका रिश्ता जोड़ा और उनके अन्दर से तमाम जिस्मानी व रूह़ानी गन्दगियों को दूर किया। अल्लाह तआ़ला ने इस बात को कुरआ़न में यूँ बयान फरमाया हैः

**तर्जमाः** वही है जिसने अनपढ़ों (अरबों) में उन्हीं में से एक रसूल भेजा, जो उन पर अल्लाह की आयतें (कुरआ़न पाक) पढ़कर सुनाते हैं, उनको (हर किस्म की गन्दगी से) पाक करते हैं, और उन्हें किताब व ह़िकमत की तालीम देते हैं।

**पैदाइश, बचपन और बेअ़सत का ज़माना:** हुज़ूर ﷺ की पैदाइश 12 रबीउल अव्वल शरीफ़ मुत़ाबिक 20 अप्रैल 571 ई0 को मक्का मुकर्रमा के सबसे बाइज़्ज़त ख़ानदान बनू हाशिम में हुई। आपकी पैदाइश के वक़्त ग़ैर मामूली वाक़ियात ज़ाहिर हुऐ। जैसे ईरान का आतिशकदा बुझ गया। शाही महल के कंगुरे गिर गये और एक ऐसी रौशनी फ़ैली जिसमें आपकी वालिदा (बीबी आमिना रज़ियल्लाहु अन्हा) ने मुल्के शाम की बिल्डिंगों को देख लिया।

जब आपकी पैदाइश हुई तो आपके वालिद (हज़रत अब्दुल्लाह) का साया सर से उठ चुका था। वह 6 महीने पहले ही अल्लाह को प्यारे हो गये थे। आप ﷺ 6 साल के थे तभी आपकी वालिदा का भी इन्तक़ाल हो गया, और आप अपने दादाजान हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की किफ़ालत में आ गये। जब आप 8 साल की उम्र को पहुँचे तो दादाजान का भी इन्ति़क़ाल हो गया, उसके बाद से तक़रीबन 50 साल की उम्र तक आप अपने चचा हज़रत अबू तालिब के साथ रहे। आप ने बचपन का ज़माना इस तरह से गुज़ारा कि चचा के लिये कभी बोझ नहीं बने। बचपन में आप बकरियाँ चराया करते थे। जब और बड़े हुऐ तो तिजारत में हाथ बटाने लगे। आप 25 साल की उम्र में ह़ज़रत खदीज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का तिजारती सामान लेकर मुल्के शाम गये, और ख़ूब नफा (लाभ) लेकर वापस हुये। हज़रत खदीज़ा आपकी ईमानदारी और शराफत से इतनी

मुतास्सिर (प्रभावित) हुईं कि उन्हें निकाह का पैग़ाम दे दिया, और जल्द ही दोनों हज़रात का निकाह भी हो गया। निकाह के वक़्त आपकी उम्र 25 साल और हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की उम्र 40 साल थी।

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा बहुत नेक और शरीफ़ ख़ातून थीं। आपको हुज़ूर ﷺ से ह़द दरजा मुह़ब्बत थी। शादी से पहले आप अरब की सबसे मालदार ख़ातून थीं, लेकिन उन्होंने अपना सारा माल इस्लाम की तब्लीग़ के लिये वक़्फ़ कर दिया। यहाँ तक की जब आपका इन्त़िक़ाल हुआ तो आपके पास कफ़न के लिये पैसे नहीं थे। आपको औरतों में सबसे पहले इस्लाम लाने का एज़ाज़ ह़ासिल हुआ। हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु को छोड़कर हुज़ूर ﷺ की सारी औलाद (दो बेटे और चार बेटियाँ) आप ही के बतन मुबारक (पेट) से थीं।

**ऐलाने नबूवत और तबलीग़े इस्लामः** हुज़ूर ﷺ की उम्र शरीफ़ 30 साल से ज़्यादा हुई तो आपकी ह़ालत अजीब होने लगी और आप अकेले रहना पसन्द करने लगे। चुनाँचे एक दिन आप मक्का से दूर एक पहाड़ी (ह़िरा) की गुफ़ा में गये और वहीं अल्लाह की इबादत करने लगे। यह सिलसिला यूँ ही चलता रहा यहाँ तक कि एक दिन हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम वह़ी लेकर आये, और सूरह इक़रा के शुरू की पाँच आयतें सुनाई। यह 610 ई0 की बात है। पहली वही उतरने के 3 साल बाद अल्लाह तआ़ला ने आपको अल्ल एलान अपनी नबूवत का इज़हार करने और कुफ़्फ़ारे मक्का को इस्लाम की दावत देने का हुक्म दिया। चुनाँचे आपने मक्का की मशहूर पहाड़ी (कोहे सफ़ा) पर चढ़कर लोगों को दीन की दावत दी। उसके बाद से आपकी दावत का सिलसिला बराबर जारी रहा, जिसके नतीजे में कुछ लोग मुसलमान हो गये।

**हिजरत और मदनी ज़िन्दगीः** मुसलमानों की बढ़ती हुई तादाद को देखकर मक्का के काफ़िरों ने आप ﷺ के मानने वालों को सताना शुरू कर दिया, जिसके चलते कुछ मुसलमान मक्का छोड़कर ह़ब्शा (अफ़्रीका) की तरफ़ हिजरत कर गये। मुसलमानों के ताल्लुक़ से काफ़िरों के दिलों में नफ़रत रोज़ बरोज़ बढ़ती रही, यहाँ तक कि वह लोग पैग़म्बर–ए–इस्लाम को जान से मारने की तरकीब करने लगे, जिसके बाद अल्लाह तआ़ला ने आपको मक्का छोड़कर मदीना चले जाने की इजाज़त दे दी। चुनाँचे आप हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ 53 साल की उम्र में मदीना शरीफ़ हिजरत फ़रमा गये। मदीना के मुसलमानों ने आपका पूरा साथ दिया और इस्लाम के लिये जान व माल हर तरह़ की क़ुर्बानी पेश की। मदीना की ज़मीन मुसलमानों के लिये बड़ी बा बरकत साबित हुई, और सिर्फ चन्द सालों में ही हर तरफ़ इस्लाम का बोल बाला हो गया। हुज़ूर ﷺ मदीने शरीफ़ में सिर्फ 10 साल रहे, लेकिन इस मुख़्तसर से अर्से में मज़हबे इस्लाम का अरब की सरहद से निकल कर अजम के मुलकों तक पहुँच गया था।

**विसालः** 12 रबीउल अव्वल 11 हि0 में हुज़ूर ﷺ का विसाल हुआ, हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लहु अन्हा के घर आपकी आरामगाह है। मस्जिदे नबवी का हरा गुम्बद आप ही के रौज़ा–ए–मुबारका के ऊपर बना हुआ है।

# हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत का मुख़्तसर ख़ाका

| | |
|---|---|
| **पैदाइशः** | 12 रबीउल अव्वल, 20 अप्रैल 571ई0। |
| **वालिद की वफ़ातः** | पैदाइश से 6 माह पहले। |
| **वालिदा की वफ़ातः** | 6 साल की उम्र में । |
| **हज़रत हलीमा के घर क़यामः** | 5 साल की उम्र तक। |
| **दादा की वफ़ातः** | 8 साल की उम्र में। |
| **हज़रत ख़दीजा रज़ि0 के साथ निकाहः** | 25 साल की उम्र में। |
| **वही का आग़ाज़ः** | 17 रमज़ान 610 ई0 में। |
| **एलाने नबूवतः** | 40 साल की उम्र में। |
| **हज़रत ख़दीजा व अबू तालिब की वफ़ात :** | 50 साल की उम्र में। |
| **हिजरतः** | 54 साल की उम्र में। |
| **मदीना शरीफ़ में आमदः** | 12 रबिउल अव्वल 1 हि0 में। |
| **ग़ज़्वा–ए–बदरः** | 17 रमज़ान 2 हि0 में। |
| **ग़ज़्वा–ए–उहदः** | 16 शव्वाल 3 हि0 में। |
| **ग़ज़्वा–ए–ख़न्दक़ः** | 28 शव्वाल 5 हि0 में। |
| **सुलह–ए–हुदैबियाः** | 6 हि0 में। |
| **फ़तहे मक्काः** | 20 रमज़ान 8 हि0 में। |
| **हज्जतुल वदाअ़ः** | 10 हि0 63 साल की उम्र में। |
| **वफ़ातः** | 12 रबीउल अव्वल 11 हि0 बरोज़ सोमवार |
| **कुल उम्र शरीफ़ः** | 63 साल। |
| **मक्की ज़िन्दगीः** | 53 साल। |
| **मदनी ज़िन्दगीः** | 10 साल। |
| **अज़वाजे मुतह्हरात (बीवियाँ):** | 11 (मशहूर क़ौल के मुताबिक) |
| **औलादे अमजादः** | 3/शहज़ादेः हज़रत क़ासिम, हज़रत अब्दुल्लाह, हज़रत इब्राहीम और 4/शहज़ादियाँ, हज़रत ज़ैनब, हज़रत रुक़य्या, हज़रत उम्मे कुलसूम और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन। |

★★★

# अमीरूल मोमिनीन
# हज़रत **उमर फ़ारूके आज़म** रज़ियल्लाहु अन्हु

यह मज़मून माहनामा ''नूरूल हबीब'' पाकिस्तान (अक्टूबर 2014) से लिया गया है और हज़रत उमर रज़ियल्लहु अन्हु के यौमे विसाल की मुनासिबत से इस मज़मून को मज़मून निगार डॉ0 ज़ियाउल हबीब क़ाज़मी साहब के शुक्रिया के साथ कारेईन की मालूमात में इज़ाफ़ा के लिये छापा जा रहा है। (इदारा)

**कुन्नियतः** अबू हफ़्स, **नामः** उमर, वालिदः ख़त्ताब, **वालिदाः** ख़न्तमा बिन्त हिशाम बिन मुग़ीरा, **क़बीलाः** कुरैश की शाख़ अ़दी से थे। सिलसिला–ए–नसब आठवीं पुश्त में हुजूर ﷺ के सिलसिले से मिल जाता है।

**विलादतः** हिजरत से 40 साल पहले।

**कमाल हासिल थाः** नसब दानी, पहलवानी, घोड़सवारी, तहरीर व तक़रीर में।

**क़ुबूले इस्लामः** (फ़ातिमा बिन्ते ख़त्ताब, नोऐम बिन अब्दुल्लाह, ख़ब्बाब बिन अरत) 45 मर्दों और 21 औरतों के मुसलमान होने के बाद।

**हिजरतः** आपने इन हज़रात के साथ हिजरत फरमाई :

सईद बिन ज़ैद बिन ख़त्ताब, अ़म्र और अब्दुल्लाह (सुराक़ा के बेटे), वाक़िद बिन अब्दुल्लाह तमीमी, एयास, आक़िल, आमिर और ख़ालिद वगैरह।

**मदीना में क़यामः** मदीना मुनव्वरा के क़रीब कुबा नामी बस्ती में रिफ़ाआ बिन अब्दुल मुन्ज़िर के मकान पर दूसरे सहाबा के साथ आपने क़याम फ़रमाया।

**इस्लामी भाईः** आपके इस्लामी भाई, बनू सालिम के सरदार अ़तबान बिन मालिक थे।

**ग़ज़वातः** आप तमाम ग़ज़वात में शामिल थे और हमेशा साबित क़दम रहे।

**ख़िलाफ़त और मुद्दते ख़िलाफ़तः** 23 जुमादल उख़रा 13 हि0, 22 अगस्त 632 ई0। 10 साल, 6 महीना, 4 दिन ख़लीफ़ा रहे।

**फ़ुतूहातः** 635 ई0 14 हि0ः क़ादसिया, हम्स। 636 ई0 15 हि0ः यरमूक। 637 ई0 16 हि0ः शाम (सीरिया), बैतुलमुक़द्दस वग़ैरह। 639 ई0 18 हि0ः अ़मवास। 640 ई0 19 हि0ः क़ैसारिया, इराक़े अरब, अहवाज़ जज़ीरा। 641 ई0 20 हि0ः मिस्र। 642 ई0 21 हि0ः इराक़े अ़जम, ईरान में लश्कर भेजना, इस्कंदरिया। 643 ई0 22 हि0ः आज़रबाईजान, तबरिस्तान। 644 ई0 23 हि0ः मकरान, ख़ुरासान, क़ाबुल, बलख़, आरमीनिया और फ़ारिस (ईरान)।

**शहादतः** 1 मुहर्रमुल हराम 24 हि0 644 ई0 ।

**फ़ारूक़ी निज़ामे हुकूमतः** 1. आगाज़ (शुरूआत) साल हिजरी, 2. दफ़्तरे ख़िराज (लगान), 3. मर्दुम शुमारी, (जनगणना) 4. बैतुल माल का हिसाब, 5. ख़िराज (माल गुज़ारी), 6. गवाही का मे'यार, 7. दारूल इफ़्ता का क़याम और मुफ़्ती हज़रात का तक़र्रुर, 8. फ़ौजदारी का कानून, 9. महकमा–ए–पुलिस, 10. जेल ख़ाना, 11. बैतुल माल का बा क़ायदा अलग से इन्तज़ाम

और खुसूसी ईमारत (बिल्डिंग), 12. मेहमान ख़ाने, 13. सड़कों का इन्तज़ाम, 14. सड़कों पर चौकियाँ और सरायें, 15. नये शहर बसाये, 16. पेशा वाराना फ़ौज, 17. तन्ख़ाह (वेतन) में तरक़्क़ी, 18.मसाजिद की तामीर, 19. इमामों और मुअज़्ज़िनों का तक़र्रुर और उनकी तन्ख़ाहें, 20. ग़रीब और मिसकीन बच्चों के लिए वज़ीफ़े वग़ैरह।

**अज़वाज (बीवियाँ):** ज़ैनब बिन्ते मज़ऊन (वालिदा हज़रत अब्दुल्लाह व उम्मुल मोमिनीन सय्यदा ह़फ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कुरैबा बिन्ते अबी उमय्या मख़्ज़ूमी (काफ़िर होने की वज़ह से तलाक़ दे दी)। उम्मे कुलसूम मुलैका बिन्त जरवल अलख़ुज़ाई (वालिद अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु) जमीला बिन्त आ़सिम बिन साबित (किसी वजह से तलाक़ दी) उम्मे ह़कीम बिन्त अल ह़ारिस बिन हिशाम मख़्ज़ूमी। आ़तिका बिन्त ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल। और अहले बैते किराम से निसबत ह़ासिल करने के लिए ह़ज़रत उम्मे कुलसूम बिन्त सय्यदा फ़ातिमतुज्ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हुमा से निक़ाह किया। (नूरी)

**औलादः** बैटेः अब्दुल्लाह, उबैदुल्लाह आसिम, हफ़्स, ज़ैद, बिलाल, ह़मज़ा सालिम।

★ ★ ★

**नोटः** इस मज़मून को आसान करने के लिये हस्बे ज़रूरत मामूली तरमीम की गई है।

## ज़रूरी ऐलान

अहले सुन्नत के तमाम क़लम कारों से गुज़ारिश है कि हमें अपने मज़ामीन भेजें। हम आपके अच्छे मज़ामीन को इस रिसाले में ज़रूर छापेंगे।

**नोटः**

1. मज़ामीन दीनी व इस्लाही और मालूमाती हों।
2. ज़बान सादा और आम फ़हम हो।
3. मज़ामीन इख़्तिलाफ़ी न हों, जिससे अहले सुन्नत को नुकसान पहुँचे।
4. मज़ामीन उर्दू या हिन्दी में साफ़ तह़रीर में या टाईप किये हुए हों।

**नोटः**

आप अपने इदारों और तन्ज़ीमों से मुतअ़ल्लिक़ ख़बरें और अपने तअ़स्सुरात और मश्वरे भी हमें भेज सकते हैं।

**भेजने का पताः**

**Barkat Nama (Quarterly)**
**Al-Barkaat Islamic Research & Training Institute, Jamalpur, Aligarh (U.P) 202122**
**Mob. 91+7607207280**
**mybarkatnama@gmail.com**

मौलाना साजिद अ़ली मिस्बाही ★

# हज़राते ह़सनैन करीमैन
## रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा

हज़राते ह़सनैन करीमैन (हज़रत इमामे ह़सन और हज़रत इमामे हुसैन) रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा की शान बड़ी बुलन्द व बाला है। उनकी वालिदा माजिदा जन्नती औरतों की सरदार हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा हैं, उनके वालिदे गिरामी फ़ातेह़–ए–ख़ैबर, शेरे खुदा हज़रत अ़ली–ए–मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं, उनके नाना ह़बीबे खुदा मुह़म्मद मुस्तफ़ा ﷺ हैं, और यह दोनों खुद भी जन्नती जवानों के सरदार हैं।

रह़मते आ़लम ﷺ ने ख़ुद उनका नाम ''ह़सन'' और ''हुसैन'' रखा। उन नामों के बारे में रिवायत है कि यह जन्नती नाम हैं। दौरे जाहिलिय्यत में अरबों में किसी का नाम ''ह़सन'' और ''हुसैन'' नहीं रखा गया। [तारीख़ुल ख़ुलफ़ा]

उनके फ़ज़ल व कमाल के लिये यही क्या कम है कि उनसे मुह़ब्बत करना अल्लाह के रसूल ﷺ से मुह़ब्बत करना है, और उनसे दुश्मनी रखना अल्लाह के रसूल ﷺ से दुश्मनी रखना है।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः ''जिसने ह़सन व हुसैन से मुह़ब्बत की उसने दर ह़क़ीक़त मुझसे मुह़ब्बत की, और जिसने उन दोनों से बुग़्ज़ (दुश्मनी) रखा उसने दर ह़क़ीक़त मुझसे बुग़्ज़ रखा''। [सुनने इब्ने माजा]

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह को फ़रमाते हुऐ सुना कि ह़सन और हुसैन दोनों मेरे बेटे हैं। जिसने इनसे मुह़ब्बत की उसने मुझसे मुह़ब्बत की और जिसने मुझसे मुह़ब्बत की वह अल्लाह तआ़ला का मह़बूब है, और जो अल्लाह तआ़ला का मह़बूब है, उसके लिये जन्नत है। और जिसने इन दोनों से बुग़्ज़ (दुश्मनी) रखा उसने मुझ से बुग़्ज़ रखा, और जिसने मुझ से बुग़्ज़ रखा वह अल्लाह तआ़ला का मबगूज़ दुश्मन हुआ, और जो अल्लाह तआ़ला का मबगूज़ हुआ उसके लिये जहन्नम है''। [मुस्तदरक ह़ाकिम]

हज़रत ओसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूरे अक़्दस को देखा कि वह हज़रत ह़सन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा को साथ लिये हुऐ हैं, और इरशाद फ़रमा रहे हैंः ''यह दोनों मेरे और मेरी बेटी के जिगर के टुकड़े हैं। ऐ अल्लाह! मैं इन दोनों से मुह़ब्बत करता हूँ, तू भी इनको अपना मह़बूब बना ले, और उसे भी अपना मह़बूब बना ले जो इन दोनों से मुह़ब्बत करे''। [तिर्मिज़ी शरीफ़]

यह दोनों हज़रात हुस्न व जमाल और ज़ाहिरी शक्ल व सूरत में हुज़ूर रह़मते आ़लम ﷺ के जैसे थे। इनमें हज़रत इमाम ह़सन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु सीने से सर तक हुज़ूरे

अक़दस ﷺ के हम शक्ल थे, और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु सीने से पाँव तक मुस्तफ़ा जाने रह़मत ﷺ के हम शक्ल थे। चुनाँचे अमीरूल मोमिनीन हज़रत अ़ली–ए–मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैः ''ह़सन सीने से सर तक रसूलुल्लाह ﷺ के हम शक्ल हैं और हुसैन सीने से पाँव तक रसूलुल्लाह ﷺ के हम शक्ल हैं। [तिर्मिज़ी शरीफ़]

आशिक़े रसूल आ़ला हज़रत इमाम अह़मद रज़ा अलैहिर्रह़मा इस ह़दीस की तर्जुमानी करते हुए फरमाते हैंः

**एक सीना तक मुशाबह, एक वहाँ से पाँव तक**
**ह़ुस्न सिब्तैन उनके जामों में है नीमा नूर का**

**साफ़ शक्ले पाक है दोनों के मिलने से अ़याँ**
**ख़ते तौअम में लिखा है यह दो वर्क़ा नूर का**

**हज़रत इमामे ह़सन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुः** हज़रत इमामे ह़सन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु 15 रमज़ानुल मुबारक 3 हि0 को मदीना मुनव्वरा में पैदा हुये, आप की कुन्नियत ''अबू मुह़म्मद''लक़ब'' सय्यद'' और ''रैहानतु नबी'' है।

जब आपकी पैदाइश हुई तो रह़मते आलम ﷺ अपनी बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के घर तशरीफ़ ले गये, नौमौलूद को देखा और ''ह़सन'' नाम रखा। पैदाइश के सातवीं रोज़ अ़क़ीक़ा किया, सर मुंडवाया और बालों के बराबर चाँदी की ख़ैरात करने का हुक्म दिया। उसी दिन ख़तना भी कराया।

हुज़ूरे अक़दस ﷺ हज़रते ह़सन से बे पनाह मुह़ब्बत फ़रमाते थे, चुनाँचे हज़रत बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैंः मैंने देखा कि ह़सन बिन अ़ली नबी–ए–करीम ﷺ के मुबारक कन्धे पर हैं और सरकार इरशाद फ़रमा रहे हैंः ऐ अल्लाह! मैं इससे मुह़ब्बत करता हूँ तू भी इसे अपना मह़बूब बना ले''। [बुख़ारी शरीफ़]

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा कि आप मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हैं और ह़ज़रत ह़सन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु आप के पहलू में बैठे हुऐ हैं। सरकार कभी सह़ाबा–ए–किराम की तरफ देखते हैं और कभी हज़रत ह़सन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तरफ नज़र करते हैं, और इरशाद फ़रमाते हैंः

''मेरा यह बेटा सय्यद (सरदार) है, और उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला इसके ज़रिऐ मुसलमानों की दो बड़ी जमाअ़तों में सुलह करायेगा''। [बुख़ारी शरीफ़]

यह इरशादे नबूवत दर असल उन वाक़ियात व हालात की सच्ची ख़बर थी जिनका ह़ज़रत अ़ली–ए–मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की वफ़ात के बाद ज़ुहूर हुआ। उस वक़्त मिल्लते इस्लामिया का एक बड़ा हिस्सा वाज़ेह तौर पर दो जमाअ़तों में बट गया था, एक जमात हज़रत इमामे ह़सन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िलाफ़त की ह़िमायत करती थी। और दूसरी जमात हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िलाफ़त की दावेदार थी, और इसमें कोई शक नहीं कि उस ज़माने में ख़िलाफ़त के बड़े ह़क़दार हज़रत इमामे ह़सन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ही थे। क्योंकि उन्हें ज़ाती, नसबी और दीनी अज़मत व फ़ज़ीलत ह़ासिल थी, और

चालीस हज़ार जवाँ मर्दों का लश्कर जान की बाज़ी लगा देने की कसम खाकर के उनके इशारे के इन्तेज़ार में था, लेकिन इस क़ाबिलियत और ताक़त के बावजूद उन्हों ने सिर्फ इस ख़ौफ़ से कि नाना जान की उम्मत इख़्तिलाफ़ में पड़ कर आपस में एक दूसरे का ख़ून न बहाने लगे, हुक्मरानी और मुल्की व दुनियावी सियासत को ठुकरा दिया, और आख़िरत की फ़लाह व कामरानी को अपना मक़सूद बनाया। चुनाँचे उन्हों ने किसी कमज़ोरी और मजबूरी के तहत नहीं, बल्कि उम्मत को मुत्तहिद करने के लिये अपनी रिज़ा और खुश दिली के साथ हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से सुलह कर ली, और उनके हक़ में ख़िलाफ़त से दस्त बरदार (अलग) हो गये।

उसके बाद हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कूफ़ा से मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाये, और वहीं हमेशा के लिए सुकूनत इख़्तियार कर ली। यहाँ तक कि यज़ीद बिन मुआविया की साज़िश से उन्हें ज़हर दे दिया गया, जिसके असर से 5 रबिउल अव्वल 49 हि0 में उनका विसाल हो गया। उस वक़्त उनकी उमर शरीफ़ 45 साल 6 माह से कुछ ज़्यादा थी।

वफ़ात से पहले उनके भाई हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ज़हर देने वाले का नाम पूछा तो उन्हों ने नाम नहीं बताया और इरशाद फ़रमायाः

''अगर ज़हर देने वाले के बारे में मेरा गुमान सही है तो ख़ुदा बेहतर बदला लेने वाला है, और अगर ग़लत है तो मैं नहीं चाहता कि कोई बे गुनाह पकड़ा जाये''। [तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा]

**शहीदे कर्बला हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुः** शहीदे कर्बला हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु 5 शाबान 4 हि0 को मदीना मुनव्वरा में पैदा हुये। आप की कुन्नियत ''अबू अब्दुल्लाह'' और लक़ब ''सय्यिदुश् शुहदा कर्बला'' और ''रैहानतुन्नबी'' है।

नबी–ए–करीम ﷺ ने हज़रत इमामे हसन की तरह इनका नाम ''हुसैन'' रखा। सातवीं रोज़ अक़ीक़ा किया, सर मुंडाया, बालों के बराबर चाँदी ख़ैरात करने का हुक्म दिया और उसी दिन ख़तना भी करा दिया।

हुज़ूरे अक़दस ﷺ आप से भी बहुत मुहब्बत फ़रमाते थे, चुनाँचे एक मर्तबा इरशाद फ़रमायाः हुसैन मुझसे हैं और मैं हुसैन से हूँ, अल्लाह तआला उसे दोस्त रखे जो हुसैन को दोस्त रखे, हुसैन नवासों में से एक नवासे हैं। [तिर्मिज़ी शरीफ़]

हज़रत अम्मुल फ़ज़ल बिन्त हारिस रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं रसूले ख़ुदा ﷺ की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुई और अर्ज़ कियाः या रसूलुल्लाह! मैंने आज रात ख़्वाब देखा है। सरकार अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमायाः वह क्या है? मैंने कहाः वह बहुत खतरनाक है। सरकार अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने दुबारा पूछाः वह क्या है? मैंने अर्ज़ कियाः मैंने देखा कि आप के जिस्म–ए–अत्हर का एक टूकड़ा काट कर मेरे आग़ोश में रख दिया गया है''।

रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः ''तूने अच्छा ख़्वाब देखा है। इंशाअल्लाह तआला

फ़ातिमा के यहाँ एक लड़का पैदा होगा जो तेरी गोद में होगा। चुनाँचे हज़रत फ़ातिमा के यहाँ हज़रत हुसैन पैदा हुये और सरकार अलैहिस्सलातु वस्सलाम के इरशाद के मुताबिक़ वह मेरी आग़ोश में थे''।

एक दिन मैं रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुई और हज़रत हुसैन को आप की गोद में रख दिया, फ़िर जो मेरी नज़र रसूलुल्लाह ﷺ पर पड़ी तो देखा कि आपकी आँखें रो रही हैं। फ़रमाती हैं: मैंने अर्ज़ कियाः ऐ अल्लाह के नबी ﷺ ! मेरे माँ–बाप आप पर क़ुर्बान हों, आप का क्या हाल है? फ़रमायाः मेरे पास जिब्रईल अमीन आये थे और उन्हों ने मुझे ख़बर दी कि मेरी उम्मत मेरे इस बेटे को शहीद कर देगी। मैंने कहाः इनको? तो उन्हों ने फरमायाः हाँ ,और मेरे पास उस ज़गह की सूखी मिट्टी भी लाये थे।'' [मिश्कात शरीफ़]

10 मुहर्रमुलहराम 61 हि0 10 अक्टूबर 680 ई0 ''मैदान कर्बला'' जुमे के दिन आपकी शहादत हुई। उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ 52 साल 5 महीने से कुछ ज़्यादा थी। आपका सर–ए–मुबारक मदीना मुनव्वरा में उनकी वालिदा माजिदा हज़रत फ़ातिमा ज़ुहरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा या उनके बड़े भाई हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के बगल में दफ़न है।

अल्लाह तआ़ला हमें हज़राते हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से सच्ची मुहब्बत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये और उनके फ़ुयूज व बरकात से माला माल फ़रमाये। (आमीन) ★★★

**★ उस्ताद जामिया अशरफ़िया मुबारकपुर आजमगढ़।**

## पंज गंजे क़ादरिया

1. बाद नमाज़े फ़जर **या अज़ीज़ो या अल्लाह,**
2. बाद नमाज़े जोहर **या करीमो या अल्लाह।**
3. बाद नमाज़े असर **या जब्बारो या अल्लाह।**
4. बाद नमाज़े मग़रिब **या सत्तारो या अल्लाह।**
5. बाद नमाज़े इशा **या गफ़्फ़ारो या अल्लाह।**

सब सौ–सौ बार अव्वल व आख़िर तीन–तीन बार दरूद शरीफ़ के साथ पढ़ें। इंशाअल्लाह इसकी पाबन्दी करने से बे शुमार दीन व दुनिया की बरकतें ह़ासिल होंगी।

## मुबारकबाद

डॉ0 इश्तियाक़ माकडा बरकाती साह़ब को डेनमार्क की University of Southern Denmark की तरफ़ से Robotics (Power Electronics) में पी.एच.डी की डिग्री से नवाज़े जाने पर उन्हें ख़ानक़ाहे बरकातिया की तरफ़ से बहुत–बहुत मुबारकबाद और दुआऐं। अल्लाह तआ़ला इनके इल्म और ह़ौसले में मज़ीद तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाये। (आमीन) **(इदारा)**

# अह़्बुल ख़ुलफ़ा हज़रत शाह ऐ़नुलह़क़ अ़ब्दुल मजीद क़ादरी बदायूँनी

**अह़्बुल ख़ुलफ़ा अफ़ज़लुल अबीद हज़रत शाह ऐ़नुलह़क़ अ़ब्दुल मजीद क़ादरी बदायूँनी अलैहिर्रह़मा के यौमे विसाल 17 मुह़र्रमुलह़राम की मुनासिबत से इस मज़मून को इस शुमारे में ख़ुसूसी तौर पर शामिल किया जा रहा है। (इदारा)**

हज़रत शाह ऐ़नुलह़क़ अब्दुल मजीद क़ादरी बदायूनी अलैहिर्रह़मा हज़रत शम्से मारहरा के जाँ निसार मुरीद, चहीते ख़लीफ़ा, ख़ादिमे ख़ास, राज़दार और ख़ज़ीनादार थे। आप ने क़रीब 30 साल मारहरा मुतह्हरा में रहकर हुज़ूर शम्से मारहरा की ख़िदमत की, जिसके सिले में ''अफ़ज़लुल–अबीद' और ''शाह ऐ़नुलह़क़'' के ख़िताब से नवाज़े गए। हम यहाँ आपकी शख़्सियत के सिर्फ़ उन्हीं पहलुओं पर रोशनी डालेंगे जो किसी न किसी हवाले से शम्से मारहरा से मुताल्लिक़ हैं।

**विलादत व तालीमः** आपकी विलादत बदायूँ के मशहूर उ़स्मानी ख़ानदान में 29 रमज़ानुल मुबारक 1177 हि0 को हुई। ''ज़हूरूल्लाह'' तारीख़ी नाम रखा गया। अपने फूफ़ा बह़रुल उलूम मुल्ला मुह़म्मद अ़ली उ़स्मानी से इल्म ह़ासिल किया और उनके विसाल के बाद मलिकुल उलमा मुल्ला निज़ामुद्दीन सहाल्वी के शार्गिद हज़रत मौलाना ज़ुलफ़िक़ार अ़ली साह़ब साकिन देवा शरीफ़ से तकमील की और उ़लूमो फ़ुनून में यगाना (एकता) हुए।

**वाक़ेआ–ए–बैअ़तः** आपके शम्से मारहरा के दामन से वाबस्ता होने का वाक़या भी बड़ा दिलचस्प और हैरतअंगेज़ है। इस सिलसिले में सबसे पुरानी किताब मौलवी अफ़ज़ल सिद्दीक़ी बदायूनी की ''हिदायतुल मख़लूक़'' है, यह हुज़ूर शम्से मारहरा की ज़िन्दगी में तालीफ़ की गई और हज़रत की नज़र से गुज़री। मुअल्लिफ़े किताब हज़रत शाह ऐ़नुलह़क़ के वाक़िआ–ए–बैअ़त के चश्मदीद गवाह हैं। मौलवी मुजाहिदुद्दीन ''ज़ाकिर'' बदायूनी ने इसका तर्जमा ''तंबीहुल मख़लूक़'' के नाम से किया है। मैं वहीं से पूरा वाक़या नक़ल कर रहा हूँः–

हज़रत मौलाना ऐ़नुलह़क़ अ़ब्दुल मजीद अलैहिर्रह़मा एक मर्तबा अय्यामे जवानी में लखनऊ गए और वहाँ एक मुद्दत तक क़याम कर के तहसीले इल्म किया और अक्सर मजालिसे फ़ुक़रा–व–मसाकीन में हाज़िर होते थे, और अहलुल्लाह और कामिल को ढूँढते थे, लेकिन कोई कामिल नहीं मिलता था। सब में ज़ूर (धोका बाज़ी) पाते थे। आख़िर को इस फ़िरक़े से ऐसे मुन्हरिफ़ (बेज़ार) हुए कि हमेशा कहा करते थे। ''तमाम जहाँ ढूँढा, कोई अहलुल्लाह नहीं पाया, जा बजा दुकानदारी है, किसी में सरे मू (बाल

बराबर) फ़क्र (दरवेशी) नहीं है।'' मुहम्मद अफ़ज़ल कहते हैं कि एक मर्तबा मैंने और मुफ़्ती अबुल हसन ने मारहरा जाने का इरादा किया। जनाब मौलवी (ऐनुलहक़ अ़ब्दुल मजीद) साहब ने फ़रमायाः ''इरादा मेरा भी है बतरीक़े सैर, जब तुम चलो, मुझको भी इत्तिला करना (बताना) मैं भी चलूँगा''। मुफ़्ती साहब ने मुझसे (मौलवी अफ़ज़ल सिद्दीक़ी से) कहा! ''मौलवी साहब का चलना हमारे साथ मुनासिब नहीं है, इस वास्ते कि वह इस फ़िरक़ा–ए–आलिया (सूफ़िया) के मोअ़तक़िद (अक़ीदत मन्द) नहीं हैं बल्कि मुनकिर हैं। ख़ुदा–न–ख़्वास्ता अगर वहाँ से आकर खुद्दाम की निस्बत कुछ सुबुक हर्फ़ (बे अदबी की बात) कहा तो हम से उसी वक़्त क़तअ् ताल्लुकी हो जाएगी''। मैंने (मौलवी अफ़ज़ल मुसन्निफ़े हिदायतुल मख़लूक़ ने) कहा आपसे क़तअ् हो जायेगी, हमसे ऐसी बात सुनकर खुदा जाने क्या हो। चुनाँचे हम दोनों बिला इत्तिलाए (बिना बताये) मौलवी (ऐनुलहक़ अब्दुल मजीद) साहब मारहरा को चले गए। पीछे से मौलवी (ऐनुलहक अब्दुल मजीद) साहब भी ख़बर पाकर रवाना हुए और शरफ़ क़दमबोसी का हासिल किया।

उन अय्याम (दिनों) में शेख़ मुहम्मद आज़म सहसवानी भी मारहरा में ठहरे हुए थे, उन्होंने मौलवी (ऐनुलहक अब्दुल मजीद) साहब से कहा तुम भी मुरीद हो जाओ। फ़रमायाः ''मैं नाख़्वान्दा (जाहिल) नहीं हूँ जो मुरीद हूँ''।

बाद चार–पाँच रोज़ के बदायूँ में अपने घर आए और एक शब (रात) को ख़्वाब में देखा कि एक सहरा वसीअ् (लम्बा–चौड़ा मैदान) है और तमाम ज़मीन वहाँ की सब्ज़ो–शादाब है, वस्त (बीच) मैदान में एक ख़ेमा (तम्बू) खड़ा है। यह (शाह ऐनुलहक़) भी वहाँ पहुँचे, इसमें आवाज़ घोड़ों की आई और इज़दिहाम (भीड़) आम हुआ और बहुत नेक सूरत और सीरत आदमी वहाँ जमा हो गए। उन्होंने (शाह ऐनुलहक़ ने) लोगों से पूछा कि यह क्या ग़ोग़ा (शोर) है? किसी ने कहा कि ''जनाब सय्यिदुल मुरसलीन शफ़ीउल, मुज़निबीन, रहमतुल–लिल–आलमीन ख़ातमुल अम्बिया व रुसुल अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व असहाबिही व सल्लम तशरीफ़ लाए हैं''। यह सुनकर यह (शाह ऐनुलहक़) भी मुअद्दब एक तरफ़ को खड़े हो गए। देखा उन्होंने कि जनाब सरवारे आलम ﷺ बसूरते हज़रत मुर्शिदे आला (हुज़ूर शम्से मारहरा) मसनद पर जल्वा–अफ़रोज़ हैं, सरे–मू (बाल बराबर) फ़र्क़ नहीं है।

जिस वक़्त बेदार हुए (जागे) एतक़ाद हज़रते मुर्शिद आला का दिल में बहुत हुआ और जाना कि बेशक हज़रत मुर्शिदे आला को निस्बत हज़रत रसूले मक़बूल ﷺ के साथ ख़ास है। फिर इरादा मारहरा का किया और वास्ते क़दमबोसी के बअ़क़ीदत रवाना हुए। जब वहाँ पहुँचे और सआ़दते क़दमबोसी हासिल कर चुके, मुअद्दब बैठकर दिल में कहने लगे कि ''फ़लाँ हदीस का मतलब हज़रत से दरियाफ़्त करूँ'', बमुजर्रद उनके ख़्याल के हज़रत ने वही हदीस ज़बान से बयान फ़रमाई और इन (शाह ऐनुलहक़) से मतलब इस्तिफ़सार किया (पूछा)। उन्होंने इसका मतलब बयान किया। उसके बाद एक किताब

किताबों के तले से निकालकर उनके हाथ में दी और फ़रमायाः ''इसमें से कुछ तुम पढ़ो'', उन्होंने लेकर खोली, अव्वल यह निकला– ''अगर तलबे मौला दारी दस्ते अनाबत ब कसे बिदेह व मुरीद शो बाद अज़ाँ तलबे मौला कुन'' अगर तुम्हे अल्लाह की तलब है, तो पहले अपना हाथ किसी (अल्लाह वाले) के हाथ में देकर मुरीद हो जाओ उसके बाद अल्लाह को ढूँढो। उन्होंने (शाह ऐनुलहक़ ने) जब यह इबारत पढ़ी, दूसरा कलाम पढ़ने से बाज़ रहे। हर चन्द चाहते थे कि दूसरा फ़िक़रा पढ़ूँ, जबान पर कुछ न आता था। एक साअ़त सुकूत (कुछ देर ख़ामोशी) में रह कर अर्ज़ किया कि ''मैं भी मुरीद हुंगा'', हज़रत मुर्शिदे आला (हुज़ूर अच्छे मियाँ) ने फ़रमायाः तुम आ़लिम हो, तुमको एहतियाज (ज़रूरत) बैअ़त की नहीं है'', हर चन्द अर्ज़ करते थे पज़ीरा (क़बूल) ना होता था, बल्कि हज़रत (शम्से मारहरा) को इन्कार पर इन्कार था।

आख़िरूल अम्र (आखिर में) मौलवी (शाह ऐनुलहक़) साहब अपनी फ़िरूदगाह (क़यामगाह) पर आए। आलमे–रूया (ख़्वाब) में हज़रत बाबा फ़रीद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैहि ने मौलवी अब्दुल मजीद का हाथ पकड़कर दस्ते मुबारका हज़रत मुर्शिदे आला में दिया। सुबह को मौलवी साहब ने बाज़ बाज़ अहबाब से दरबारा–ए–बैअ़त सई (कोशिश) कराई, चूँकि हज़रत मुर्शिदे आला (हुज़ूर शम्से मारहरा) ने आलमे–रूया में हाथ उनका पकड़ा था और ज़ाहिर में अक्सर मुरीद और ग़ुलाम साई (कोशिश करने वाले) थे, मुरीद करना मौलवी साहब का मन्ज़ूर और क़ुबूल फ़रमाया और उसी रोज़ दा रक़ात नफ़्ल पढ़ाकर मुरीद फ़रमाया।

मौल्वी साहब (शाह ऐनुलहक़) ने हाज़िरी–ए–हुज़ूर पुरनूर इख़्तियार की, सालहा–साल ख़िदमतगारी में रहे।

उसके बाद वालिद और बिरादराने मौलवी साहब दाख़िले सिलसिला हुए और जनाब मौल्वी साहब ने मेहनत और रियाज़त बेहद की थी। बाद चन्दे मौलवी साहब को ख़िरक़ा–ए–ख़िलाफ़त अ़ता हुआ। [तंबीहुल मख़लूक, सः 163 ता 165]

**इनायाते शम्से मारहराः** बैअ़त के बाद शेख़ की ज़ात में ऐसे फ़ना हुए कि घर–बार छोड़कर शेख़ के आस्ताने ही पर डेरा डाल दिया। हुज़ूर शम्से मारहरा के विसाल तक मारहरा शरीफ़ मे रहे। हज़रते शम्से हुक्म फ़रमाकर बदायूँ भेजते और यह दो चार दिन रहकर फिर वापस आ जाते। शाह ऐनुलहक़ अब्दुल मजीद बदायूनी अलैहिर्रहमा पर शम्से मारहरा की जो इनायते ख़ास थी उसकी तफ़सील के लिये तो एक बड़े मक़ाले की ज़रूरत है।

क़ाज़ी ग़ुलाम शब्बर क़ादरी लिखते हैंः

साहबज़ादों के बाद ख़ुलफ़ा में हज़रत मौलाना मौल्वी अब्दुल मजीद ऐनुलहक़ रहमतुल्लाह अलैहि पर ख़ास निगाहे करम थी। उनके वालिदे माजिद मौलाना अब्दुल हमीद साहब रहमतुल्लाह अलैहि भी मुरीदे हुज़ूर थे, लेकिन मौलाना रहमतुल्लाह अलैहि बादे बैअ़त बेशतर ख़िदमते अक़दस में हाज़िर रहते, हुक्मन वतन जाते। आप बहुत से जवहरे असरार के ख़ज़ीनादार और अमानतों के तहवीलदार थे, तकमीले बातिनी और सरमाया–ए–दीनी व

दुनियावी मौलाना रहमतुल्लाह अलैहि ने इसी सरकार से पाया। ''शाह ऐनुलहक़'' मुअज़्ज़ज़ लक़ब, ''अफ़ज़लुल अबीद मौलाना अब्दुल मजीद' का इम्तियाज़ी ख़िताब, पीरज़ादों की तालीम कैसी बड़ी और भारी नेअ्मतें थीं।

**फ़रमाने शम्से मारहराः** ''बरकाते मारहरा'' में मौलवी अहमद सिद्दीक़ी मुतवल्ली ने हज़रत शम्से मारहरा का यह फ़रमान नक़ल किया हैः–

आपने मुरीदीन–खुलफ़ा को जो उस वक़्त हाज़िरे हुज़ूर थे मुख़ातब कर के फ़रमाया कि जो मौलवी अब्दुल मजीद और उनकी औलाद और औलाद की औलाद को दोस्त रखेगा वह मुझे दोस्त रखेगा और जिसने इनसे और इनकी औलाद की औलाद से एनाद रखा उसने मुझसे और मेरे पीराने तरीक़त से एनाद (बुग्ज़) रखा। पस जो शख़्स मौलवी अब्दुल मजीद और इनके घराने से बेज़ार है आले अहमद और आले अहमद के पीराने तरीक़त उससे बेज़ार हैं। लिहाज़ा मौलवी अब्दुल मजीद का और उनके घर का मुख़ालिफ़ क़यामत के दिन आले अहमद और उसके पीराने सिलसिला से किसी क़िस्म की दस्तगीरी की उम्मीद न रखे। [आसारे अहमदी बहवाला अकमलुत्तारीख़ अव्वल, पेः 97]

शाह ऐनुलहक़ अब्दुल मजीद बदायूनी के बारे में हुज़ूर शम्से मारहरा का यह फ़रमाने आलीशान हदे तवातुर को पहुँचा हुआ है कि आपने इरशाद फ़रमाया कि सुल्तानुल मशाइख़ हज़रत महबूबे इलाही फ़रमाया करते थे कि अगर बरोज़े हश्र खुदा ने मुझसे पूछा कि निज़ामुद्दीन! दुनिया से मेरे लिये क्या तोहफ़ा लाए हो, तो मैं अमीर खुसरू को पेश कर दूँगा कि ऐ परवर्दिगार! तेरी बारगाह में यह तोहफ़ा लाया हूँ, इसी तरह अगर फ़क़ीर से सवाल किया गया तो फ़क़ीर मौलवी अब्दुल मजीद बदायूँनी को बारगाहे खुदावन्दी में पेश कर देगा।

## ख़ानक़ाहे क़ादरिया का क़याम और रहनुमाई व हिदायत का आगाज़ः

हज़रत शम्से मारहरा की हयात (1235 हि0) तक हज़रत शाह ऐनुलहक़ मारहरा शरीफ़ ही में अपने शेख़ की ख़िदमत में हाज़िर रहे। अपने शेख़ की हयात में अपने बावजूद ख़िलाफ़त–व–इजाज़त के किसी को दाख़िले सिलसिला नहीं किया। हज़रत शम्से मारहरा के विसाल (1235 हि0) के बाद मारहरा शरीफ़ में आपका दिल नहीं लगा, आप बदायूँ वापस आ गये और यहाँ से रुश्द व हिदायत का सिलसिला शुरू किया।

वतन में जब सज्जादा–ए–तरीक़त पर आपने जुलूस फ़रमाया (बैठे), आपके फ़ज़्ल व कमाल, ज़ोहद व तक़द्दुस और तसर्रुफ़ व करामात का शोहरा दूर–दराज़ तक पहुँचा। जामे तरीक़त के प्यासे और मैदाने हक़ीक़त के तलबगार आपके दरे दौलत को मैख़ाना–ए–ख़ुदा शनासी समझ कर साग़र ब कफ़ (हाथ) आना शुरू हुए और फ़ैज़े साक़ी से सरशार व मदहोश हो–होकर इरफ़ाने इलाही से ज़ौक़ आशना हुए। ग़ुरबा व मसाकीन, उमरा व अमाइद (बड़े लोग) आपकी कफ़श बरदारी हमेशा बाइसे सद इफ़्तिख़ार समझते रहे। उलमा व मशाइख़ आपकी निगाहे करम के मुतमन्नी हो–होकर आपके बाबे (दरवाज़े) फ़ैज़ पर

नासिया–फ़रसाई को हमेशा ज़रीय–ए–तक़र्रुब इलल्लाह जानते रहे। ख़ास बदायूँ के मुअज़्ज़िज़ शुरफ़ा में कोई ऐसा घराना न था जो आपके सिलसिले–ए–इरादत में दाख़िल न हो। [अकमलुत्तरीख़ अव्वल, पे0: 100]

अल्लाह के फ़ज़्ल से आपका क़ाइम कर्दा यह सिलसिला–ए–रुश्द व हिदायत आज दो सदियों बाद भी जारी है। आज भी ख़ानक़ाहे क़ादरिया बदायूँ से फ़ैज़ाने ग़ौसे आज़म और फ़ैज़ाने आले अहमद जारी है। इस वक़्त ख़ानक़ाहे क़ादरिया मजीदिया की मसनदे सज्जदगी पर हज़रते अक़दस शेख़ अब्दुल ह़मीद मुह़म्मद सालिम क़ादरी ज़ीदत मआलीह रौनक़ अफ़रोज़ हैं जो अपने असलाफ़ के सच्चे वारिस है।

**विसाल और मज़ारे मुबारकः** अपने पीरो–मुर्शिद शम्से मारहरा के विसाल के बाद आप 27 साल 10 माह तक बदायूँ में मसनदे रुश्दो हिदायत पर जलवा अफ़रोज़ रहे, 17 मुहर्रमुलह़राम 1263 हि0 को विसाल फ़रमाया, दरगाहे क़ादरिया में आपका मज़ारे पुरअनवार मरजा–ए–ख़लाइक़ है। ★★★

**★ ख़ानक़ाहे क़ादरिया मजीदिया बदायूँ शरीफ़।**

# विसाल

## हज़रत शेख़ इस्माईल जानी साह़ब का इन्तिक़ाल

अहले सुन्नत व जमाअ़त के एक अ़ज़ीम मुबल्लिग़ हुज़ूर अह़सनुल उ़लमा अलैहिर्रह़मा के जाँ निसार ख़लीफ़ा सुन्नी जमियतुल उलमा के साबिक़ सेक्रेट्री और दारूल उ़लूम इमाम अह़मद रज़ा कोकन रतना गीरी के बानी शेख़ इस्माईल जानी साह़ब का 24 सितम्बर 2015 ई0 को 84 साल की उम्र में इन्तक़ाल हो गया। "اِنَّالِلّٰہِ وَاِنَّااِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ" शेख़ जानी साह़ब अहले सुन्नत के बड़े मुतहर्रिक मुबल्लिग़ और आशिक़े रसूल थे। उन्होंने तक़रीबन 63 बार ह़जे बैतुल्लाह और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़े की ज़ियारत का शरफ़ ह़ासिल किया था। अल्लाह तआ़ला उनको अपने जवारे रह़मत में जगह दे, और पस मांदगान को सब्रे जमील अ़ता फ़रमाए। (आमीन)

## हज़रत अल्लामा मन्सूर अ़ली ख़ान साह़ब का इन्तिक़ाल

अहले सुन्नत के एक अज़ीज रहनुमा हज़रत अल्लामा मनसूर अ़ली ख़ान का 5 अक्टूबर 2015 ई0 साढ़े तीन बजे रात में इन्तेक़ाल हो गया "اِنَّالِلّٰہِ وَاِنَّااِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ" मौलाना मदनपुरा की सुन्नी मस्जिद में तक़रीबन 45 सालों से इमामत व ख़िताबत के फ़राइज़ अन्जाम दे रहे थे। उन्होंने दर्जन भर किताबें तसनीफ़ कीं जिनमें ख़्वाबों की बारात को ज़बरदस्त अवामी मक़बूलियत ह़ासिल हुई। आप कई तब्लीग़ी तन्ज़ीमों से भी जुड़े रहे और एक दहाई से ज़्यादा मुद्दत तक सुन्नी जमीयतुल उ़लमा के जनरल सेकेट्री थे। आप शेर बेशा–ए–अहले सुन्नत मौलाना ह़शमत अ़ली ख़ान के बिरादर ज़ादे और मौलाना मुफ़्ती मह़बूब अ़ली ख़ाँ के साह़बज़ादे थे। अल्लाह तआ़ला उनकी कब्र पर रह़मतों की बारिशें बरसाए।(आमीन) **इदारा**

सय्यद मुहम्मद अमान मियाँ क़ादरी बरकाती ★

# चश्मो चिराग़े ख़ानदाने बरकात

## (इमाम अहमद रज़ा ख़ान बरेलवी अलैहिर्रहमा)

*मुजद्दिदे आज़म, इमाम अहमद रज़ा ख़ान क़ादरी बरकाती अलैहिर्रहमा के यौमे विसाल (२५ सफ़र) की मुनासिबत से यह मज़मून इस शुमारे में ख़ुसूसी तौर पर शामिल किया जा रहा है।*

अल्लाह तबारक व तआ़ला हर ज़माने में कुछ ऐसी शख़्सियतों को पैदा फ़रमाता है, जिनका सदियों में भी बदल नहीं आ पाता। वह ऐसी अफ़सानवी शोहरतों की हामिल होती हैं कि उनके दम से उनकी क़ौम, उनका ख़ानदान, उनकी बस्तियाँ और उनके शहर पहचाने जाते हैं। इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी अलैहिर्रहमा भी उन्हीं ख़ास शख़्सियतों में से हैं जिनको अल्लाह तबारक व तआ़ला ने ख़ूबियों का गुलदस्ता बनाकर पैदा फ़रमाया। उनका सबसे बड़ा कारनामा यही है कि उन्होंने ईमान वालों को वह राह दिखाई जहाँ पर निजात के रास्ते खुलते हैं। जहाँ से इन्सान अल्लाह के महबूब बनना शुरू होते हैं, उस अ़ज़ीम शख़्सियत के बारे में कुछ लिखने से पहले मैं मुनासिब समझता हूँ कि पहले मेरे दादा हुज़ूर सय्यिदुल उ़लमा अलैहिर्रहमा का एक शेर मुलाहिज़ा फ़रमायें।

**हिफ़्ज़े नामूसे रिसालत का जो ज़िम्मेदार है**
**या इलाही मसलके अहमद रज़ा खाँ ज़िन्दाबाद**

मुजद्दिदे इस्लाम, मैदाने इल्म व फज़ल के शह सवार, अज़ीम मुफ़स्सिर, मुहद्दिस, शायर, उस्ताद, मुफ़्ती, दीने हक़ के मुहाफ़िज़, नबी–ए–पाक ﷺ की सुन्नतों को फैलाने वाले, बिदअ़तों और बुरी रस्मों को मिटाने वाले, सुन्नियों के ईमान की हिफाज़त करने वाले और सबसे बढ़कर एक सच्चे आशिक़े रसूल इमाम अहमद रज़ा खान फाज़िले बरेलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि 10 शव्वाल 1272 हि0 मुताबिक़ 14 जून 1856 ई0 को सूबा उत्तर प्रदेश के मशहूर ज़िला बरेली में पैदा हुए।

आपके वालिदे गिरामी मौलाना नक़ी अली खान इब्न मौलाना मुहम्मद रज़ा अ़ली खान थे। उनका तअ़ल्लुक़ पठानों के बरहेच क़बीले से था। उनके दादा जनाब सआ़दत यार ख़ान साहब क़न्धार (अफ़गानिस्तान) से हिजरत कर के हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाये।

**मज़हबः** आला हज़रत हनफियों के इमाम थे, और उनके ज़माने में हनफ़ी फुक़हा में उनका कोई मुक़ाबिल नहीं था। आपके चन्द अ़रबी फ़तवों को देखने के बाद कुतबे हरम हज़रत सय्यद इस्माईल ख़लील अलैहिर्रहमा ने फ़रमाया था कि ''क़सम खा कर कहता हूँ और हक़ कहता हूँ कि अगर इमामे आ़ज़म अबू हनीफ़ा

अलैहिर्रहमा इन्हें (फ़तावा को) देखते तो उनको ख़ुशी होती, और साहबे फ़तावा को अपने शार्गिदों में शामिल कर लेते।''

आला हज़रत के पास बर्रे सग़ीर (हिन्द व पाक) के अलावा बर्मा, चीन, अमेरिका, अफ़गानिस्तान, अफ़्रीका और अ़रब के मुल्कों से बड़ी तादाद में इस्तिफ़ता (सवाल नामे) आते थे, जिनके आप इतमिनान बख़्श जवाबात बड़ी ख़ुशदिली से देते थे।

**मुजद्दिद का लक़बः** 1318 हि0 1900 ई0 में पटना (बिहार) में एक बहुत बड़ी कॉन्फ्रेंस हुई जिसमें बर्रे सग़ीर (हिन्द व पाक) के सैक़ड़ों उ़लमा जमा हुए। इस कॉन्फ्रेंस में बुज़ुर्ग उ़लमा की मौजूदगी में आला हज़रत को ''मुजद्दिद'' के लक़ब से नवाज़ा गया।

माहिरे रज़वियात प्रो0 मसूद अहमद मुजद्दिदी साहब (पाकिस्तान) लिखते हैं ''मुह़द्दिस बरलेवी ने पूरी शिद्दत (सख़्ती) और ताक़त के साथ बिदअ़तों को ख़त्म किया, और दीने मतीन और सुन्नते रसूल ﷺ के एह्या (फैलाने) का फ़रीज़ा अदा किया। इसलिए उ़लमा–ए–अ़रब व अ़जम ने उन्हें मुजद्दिद के लक़ब से याद किया।''

**असातिज़ाः** आपके आसातिज़ा बड़े इल्म व फ़ज़्ल वाले थे, उनके नाम यह हैं।

(1) हज़रत सय्यद शाह आले रसूल अह़मदी मारहरवी, (2) हज़रत मौलाना नक़ी अली ख़ान, (3) हज़रत अल्लामा शेख़ अह़मद ज़ैनी दिह़लान मक्की, (4) हज़रत शेख़ अब्दुल रह़मान सिराज मक्की, (5) हज़रत शेख़ हुसैन इब्ने सालेह जमालुद्दीन मियाँ, (6) हज़रत सय्यद शाह अबुल हुसैन अह़मद नूरी, (7) हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर बेग, (8) हज़रत मौलाना अब्दुल अ़ली रामपूरी रहमतुल्लाह अलैहिम अजमईन।

आला हज़रत के शार्गिदों की एक बड़ी तादाद है, जिन्होंने हिन्दुस्तान और दूसरे मुल्कों में इस्लाम और सुन्नियत को फैलाने का काम किया और उनसे तरबियत पाने वाले उ़लमा व मशाइख़ आज तक दीन की ख़िदमात अन्जाम दे रहें हैं।

**बैअ़त व ख़िलाफ़तः** आला हज़रत 1295 हि0 में अपने वालिद के साथ ''ख़ातिमुल अकाबिर'' हज़रत सय्यद शाह आले रसूल अह़मदी अलैहिर्रह़मा के दस्ते ह़क़ परस्त पर बैअ़त हुए।

आला हज़रत को 13 मुख़्तलिफ़ सलासिले तरीक़त में इजाज़त ह़ासिल थी।

आला हज़रत नेक, सादा तबीअ़त, बचपन से ही सुन्नतों की पाबन्दी करने वाले थे। उन्होंने अपनी पूरी ज़िन्दगी इस्लामी उ़लूम को ह़ासिल कर के उनको फैलाने, नये उ़लूम की तहक़ीक़ात करने और इस्लामी तालीम को आम करने में गुज़ार दी। वह कभी अपने पाँव क़िबला की तरफ फैला कर नहीं सोये। हमेशा मस्जिद में जमात के साथ नमाज़ अदा करते थे।

इमाम अह़मद रज़ा की ज़िन्दगी अस्लाफ़ का नमूना थी। वह बहुत सादगी पसन्द तबियत के मालिक थे। बहुत कम खाना खाते थे। वक़्त की बड़ी क़द्र करते थे। अपने वक़्त को पढ़ने, लिखने और जाइज़ कामों में गुज़ारते थे। ज़्यादातर घर में ही रहते थे, लेकिन असर और मग़रिब के दरमियान घर के आँगन में तशरीफ़ लाते और अवाम से मुलाक़ात करते थे।

आला हज़रत माँ–बाप की बहुत इज़्ज़त

करते थे। जब वालिद के इन्तक़ाल के बाद उनका तरका (वरासत का माल) तक़सीम हुआ तो उन्होंने अपना पूरा हिस्सा अपनी वालिदा को दे दिया, और उनसे कहा कि आप जैसे चाहें वैसे खर्च करें। जब कभी उन्हें किताबों या दूसरे इख़राजात के लिए ख़र्चे की ज़रूरत होती तो अपनी वालिदा से माँग लिया करते थे।

आला हज़रत आ़म तौर पर तक़रीर नहीं करते थे। लेकिन एक बार उन्होंने शहर बदायूँ में सूरह ''अल–दुहा'' की तफ़सीर करते हुए लगातार 6 घण्टे तक तक़रीर की।

आला हज़रत शरीअ़त के बहुत पाबन्द थे, और ख़िलाफे शरअ़ किसी काम को पसन्द नहीं करते थे। वह बादशाहों, शह़ज़ादों और नवाबों से दूर रहते थे। जबकि बड़े बड़े नवाब आपसे मिलने के लिये बेक़रार रहते थे। आपको सादाते किराम से बहुत मुह़ब्बत थी, और सादात की बहुत ज़्यादा इज्ज़त भी करते थे। बद मज़हबों, वहाबियों और अल्लाह व रसूल के गुस्ताख़ों से आप सख़्त नफ़रत करते थे।

आला हज़रत को 50 से ज़्यादा फ़ुनून में महारत ह़ासिल थी, और तक़रीबन हर फ़न पर किताबें लिखी हैं। मौलाना अब्दुल मुबीन नोमानी साह़ब ने अपनी किताब ''मुसन्नफ़ाते रज़विया'' में आपकी 679 किताबों को शुमार कराया है।

आला हज़रत ने यूँ तो हर तरह से इस्लाम की ख़िदमत की है, लेकिन आपका सबसे अहम कारनामा मज़हबे इस्लाम के साफ व शफ़्फ़ाफ़ चेहरे को वहाबियों और दूसरे बद मज़हबों की फैलाई हुई गन्दगियों से पाक व साफ करना है। आज अलह़म्दुलिल्लाह हिन्द व पाक के करोड़ों मुसलमानों के ईमान जो सलामत हैं, और दिल इश्के नबी से सरशार हैं, उसमें आला हज़रत और उनके ख़ुलफ़ा और शार्गिदों का बड़ा अहम रोल रहा है।

**डाल दी क़ल्ब में अज़मते मुस्तफ़ा**
**सय्यदी आला हज़रत पे लाख़ों सलाम**

**आला हज़रत का अपने पीर खाने से इश्क़:** आला हज़रत को अपने पीर ख़ाने से बहुत ज़्यादा मुह़ब्बत थी। आप अपने पीर ख़ाने का इस क़दर अदब व एहतराम करते थे कि आपने कभी ख़ानक़ाह शरीफ़ में जूता नहीं पहना।

**कभी मुर्शिद के दर पे पाँव में जूता नहीं पहना**
**मुरीदे ब सफा होना यह शाने आला ह़ज़रत है**

अगर मारहरा शरीफ से कभी कोई ह़ज्जाम (नाई) कोई पैग़ाम लेकर बरेली शरीफ ह़ाजिर होता तो आला हज़रत उसे ''ह़ज्जाम शरीफ'' कहकर पुकारते और उसकी मेहमान नवाज़ी के लिये अपने सर पर दस्तरखान रख कर लाते थे।

**पीरख़ाने की आला हज़रत से मुह़ब्बतः** आला हज़रत को उनके पीर ख़ाने से जो मुह़ब्बत मिली उस पर ज़माना आज तक नाज़ कर रहा है। हज़रत नूरी मियाँ साह़ब क़िबला ने उन्हें ''चश्मो चिराग़े ख़ानदाने बरकात'' का ख़िताब देकर अपने घर का एक फर्द बना लिया। हुज़ूर ताजुल उ़लमा, सय्यिदुल उ़लमा, अह़सनुल उ़लमा, सय्यदे मिल्लत, हुज़ूर अमीने मिल्लत, शरफे मिल्लत और रफ़ीक़े मिल्लत की तक़रीरें और तह़रीरें इस बात की शाहिद (गवाह) हैं कि इस ख़ानवादे में आज भी आला ह़ज़रत को कितना चाहा जाता है।

आला हज़रत ने सुन्नियों को दीन के दुश्मनों से मुक़ाबला करने के लिये तह़रीरों,

तक़रीरों, ख़ुलफ़ा और शार्गिदों की शक्ल में हर क़िस्म का हथियार दिया है।

मसलके आला ह़ज़रत क्या है इसको हुज़ूर अमीने मिल्लत सय्यद शाह मुह़म्मद अमीन मियाँ क़ादरी बरकाती की ज़बान से मुलाहिज़ा फरमायें।

आप फरमाते हैं मस्लके आला हज़रत की सबसे आसान तारीफ़ यह है कि ''अल्लाह के रसूल ﷺ को उसकी मंशा (मर्ज़ी) के मुताबिक़ चाहना।''

मसलके आला हज़रत को बहुत कम अलफाज़ में बयान किया जाये तो उसकी तारीफ़ यह होगी–

''जिससे अल्लाह व रसूल की शान में अदना (थोड़ी सी) गुस्ताख़ी पाओ फिर वह तुम्हारा कैसा ही प्यारा क्यों न हो, फौरन उससे अलग हो जाओ। जिसको बारगाहे रिसालत में ज़रा भी गुस्ताख़ देखो, फिर वह कैसा ही बुज़ुर्ग और मुअज़्ज़म क्यों न हो, उसे अपने अन्दर से दूध की मक्खी की तरह से निकाल कर फेंक दो।

**विसालः** 25 सफर 1340 हि0 को जुमा के दिन 2:38 मिनट पर आपका विसाल हुआ। हर साल इसी तारीख़ में आपका उर्स होता है, जिसमें हिन्दुस्तान और दूसरे मुल्कों से बहुत बड़ी तादाद में लोग ह़ाजिर होते हैं, और फुयूज़ व बरकात ह़ासिल करते हैं।

**पैग़ामः** मैं इस मुख़्तसर से मज़मून को अपने मुर्शिद दादा हुज़ूर अह़सनुल उ़लमा के अहम पैग़ाम, नसीह़त और ख़ानदाने बरकात और बरकातियों की वसीयत पर ख़त्म करता हूँ।

हुज़ूर शरफ़े मिल्लत सय्यद मुह़म्मद अशरफ मियाँ साह़ब अपनी मशहूर किताब ''यादे ह़सन'' में लिखते हैं कि हुज़ूर अह़सनुल उ़लमा ने अपने विसाल से चन्द दिन पहले अपने बेटों को वसीयत फ़रमाई कि ''मेरा कोई मुरीद अगर मसलक़े आला हज़रत से हट जाये तो फिर मुझे उससे कोई मतलब नहीं।'' दरअसल वह तालीमाते आला हज़रत को मज़हबे मुह़ज़्ज़ब अहले सुन्नत के बुज़ुर्गों की तालीमात का एक रौशन बाब जानते थे, और इन्तक़ाल के वक़्त भी उन्हें अन्दाज़ा था कि जब उनके मुरीदों तक उनकी वसीयत पहुँचेगी तो वह समझ लेंगे कि तालीमाते आला हज़रत खानदाने बरकात की ही तालीमात हैं।

**अह़मद रज़ा से थी ऐसी उलफ़त**
**फरमा रहे थे वह वक़्ते रह़लत**
**उनका नहीं जो मेरा नहीं वो**
**सारे जहाँ में कर दो मुनादी**

★★★

**(इस मज़मून को तैयार करने में अहले सुन्नत की आवाज़, फैज़ाने मारहरा व बरेली, बरकाते मारहरा और यादे हसन से मदद ली गई है।)**

**★ डायरेक्टर अलबरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट अलीगढ़**

## मुबारकबाद

मुह़म्मद अ़ब्दुल क़ुद्दूस बरकाती को अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के फ़िज़िक्स विभाग के पी. एच. डी. प्रवेश परीक्षा में पहला मक़ाम ह़ासिल करने पर बहुत–बहुत मुबारकबाद और दुआ़एँ अल्लाह तआ़ला इन्हें मज़ीद कामयाबियों से नवाज़े और दीन की ख़ूब–ख़ूब ख़िदमत ले। आमीन **(इदारा)**

मौलाना इक़बाल अह़मद नूरी ★

# यौमे आशूरा (दसवीं मुह़र्रम) के फ़ज़ाइल व आमाल

इस्लामी साल का पहला महीना मुह़र्रमुलह़राम है, जिसका पहला अशरा (महीने के शुरू के दस दिन) बहुत ही ख़ैर व बरकत वाला है, और इस महीने की दसवी तारीख़ को बड़े–बड़े तारीख़ी वाक़यात हुए। मिसाल के तौर पर उसी दिन अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा क़बूल फ़रमाई। हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम को आसमान पर उठाया। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को दुबारा बादशाह बनाया। उसी दिन अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने हुज़ूर ﷺ के साथ हज़रत खदीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का निकाह आसमानों पर किया। आसमान व ज़मीन, लौह़ व क़लम, आदम व ह़व्वा अलैहिमस्सलाम उसी दिन बनाये गये। करबला पर क़यामते सुग़रा (छोटी क़यामत) उसी दिन क़ायम हुई, और ह़दीस के मुताबिक क़यामते कुबरा (बड़ी क़यामत) भी उसी दिन क़ायम होगी।

**आ़शूरा का रोज़ाः** मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि अल्लाह के नबी ﷺ मदीना तशरीफ़ लाये तो यहूदियों को आशूरा के दिन रोज़ा रखते हुए पाया। आप ने उनसे फ़रमायाः यह कैसा दिन है जिसमें तुम लोग रोज़ा रखते हो? उन्होंने कहा कि यह वो दिन है जिसमें अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और आपकी क़ौम को फ़िरऔन से निजात दी, और फ़िरऔन को उसकी क़ौम के साथ दरिया में डुबो दिया, तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उस दिन के शुक्रिये में रोज़ा रखा। इसलिए हम भी रोज़ा रखते हैं। आप ﷺ ने फ़रमायाः हम तुमसे मूसा अलैहिस्सलाम के ज़्यादा ह़क़दार हैं। फिर आपने उस दिन रोज़ा रखा और सह़ाबा–ए–किराम को रोज़ा रखने का हुक्म भी फ़रमाया। [मुस्लिमः जि01, पे0 359]

मिश्कात शरीफ़ में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है, वह फ़रमाते हैं कि जिस वक़्त रसूलुल्लाह ﷺ ने आशूरा का रोज़ा रखा और रोज़ा रखने का हुक्म फ़रमाया, सह़ाबा ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलुल्लाह! यह वो दिन है जिसकी ताज़ीम यहूद व नसारा करते हैं। तो आप ने फ़रमायाः अगर मैं अगले साल दुनिया में बाक़ी रहा तो नौवीं मुह़र्रम का भी रोज़ा रखूँगा। [मिश्क़ातः जि01, पे0 179]

ऊपर की दोनों ह़दीसों से साबित हुआ कि हुज़ूर ﷺ आशूरा के दिन रोज़ा रखते थे और सह़ाबा को भी रोज़ा रखने का हुक्म फ़रमाते थे। नीज़ आख़िरी ह़दीस से नौंवीं मुह़र्रम को भी रोज़ा रखना साबित है। इसी लिये फ़ुक़हा–ए–किराम ने फ़रमाया कि सुन्नत यह है कि मुह़र्रम की नौवीं और दसवीं दोनों तारीख़ों में रोज़ा रखें।

**शबे आ़शूरा की इबादतः** हज़रत अ़ली

रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जिसने आशूरा की रात में इबादत की अल्लाह तआ़ला जब तक चाहेगा उसको ज़िन्दा रखेगा। [फैज़ाने शरीअ़त पे0 1031]

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः जो शख़्स आशूरा की रात इबादत में मशगूल रहे और सुबह को रोज़ा रखे तो उसको इस तरह मौत आयेगी कि मरने का एह़सास भी नहीं होगा। [फैज़ाने शरीअ़त पे0 1030]

शबे आशूरा बड़ी बा बरकत और मुक़द्दस रात है, जिसमें इबादत करके मोमिन बन्दा सकराते मौत (मौत की तकलीफ़) से अपने आप को महफ़ूज़ रख सकता है। इस रात हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने यज़ीदीयों से मोहलत सिर्फ़ इसलिए माँगी थी ताकि पूरी रात अल्लाह की इबादत व रियाज़त, तस्बीह और तौबा व इस्तिग़फ़ार कर सकें। और दसवीं मुह़र्रम को सज्दे की ह़ालत में शह़ादत का जाम पीकर अपने मानने वालों को हमेशा के लिये यह पैग़ाम दिया किः

**यह एक सज्दा जिसे तू गिराँ समझता है**
**हज़ार सज्दों से देता है आदमी को निजात**

**सब्र की अहमियत और मातम की मज़म्मतः** कुरआ़ने पाक में जगह–जगह सब्र करने की ताकीद की गई है, और उस पर अजर व सवाब की खुशखबरी दी गयी है। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है ''और ख़ुशखबरी सुनाओ उन सब्र वालों को कि जब उन पर कोई मुसीबत पड़े तो कहें हम अल्लाह के ह़ाल हैं और हमको उसी की तरफ़ लौटना है।[अल–बक़रा..156] मुसीबत और परेशानी के वक़्त कपड़े फ़ाड़ने, तमाचे मारने और सीना पीटने की ह़दीस में सख़्त मज़म्मत आई है। मिश्क़ात शरीफ़ में अल्लाह के नबी ﷺ ने इरशाद फरमायाः उस शख़्स का हमारे मुआशरे (मुसलमानों) से कोई तअ़ल्लुक नहीं जो मुँह पीटे, कपड़े फ़ाड़े और जाहिलियत के ज़माने के तरीकों को अपनाये। यानी मय्यत के लिये रोये वग़ैरह। [मिश्कातः पे0 150]

**प्यारे हुसैनियो!** ऊपर की ह़दीसों को ग़ौर से पढ़ो और देखो कि मातम करने पर नबी–ए– पाक ﷺ की तरफ़ से किस क़दर वईदें (सज़ायें) आई हैं। मुह़ब्बत की दलील यह नहीं है कि उस दिन मातम करें, कपड़े फ़ाड़ें, सीना पीटें, बल्कि वह अ़मल करें जिससे शोहदा–ए–कर्बला की रूहों को सुकून मिले, और हमारे लिये निजात का सबब बने। जैसे इमाम हुसैन की नज़र व नियाज़ करना, सबील लगाना, खाना बनाकर ग़रीबों को खिलाना, ज़िक्र की महफ़िले सजाना, तौबा व इस्तिग़फ़ार करना, शोहदा–ए–किराम का ज़िक्रे ख़ैर करना और उनके लिये बुलन्दी–ए–दर्जात की दुआ़ करना।

आशूरा की रात में बहुत से मुसलमान भाई खेल तमाशा करते हैं, और फुलझड़ी व पटाख़े और आतिशबाज़ी करते हैं, ऐसा करना नाजाइज़ व ह़राम है। ★★★

★ **प्रिन्सिपल, जामिया अह़सनुल बरकात, मारहरा शरीफ़।**

डॉ0 अह़मद मुजतबा सिद्दीक़ी★

# ख़ानक़ाहे बरकातियाः एक तआ़रूफ़

**मन्ज़र पस मन्ज़रः** क़दीम सूबा मुत्तह़ेदा की राजधानी अकबराबाद से मिले हुए, ज़िला एटा के पश्चिमी ह़िस्से में वाक़ेअ सूफ़िया–ए–किराम की मशहूर व मअ़रूफ़ बस्ती मारहरा शरीफ़ यानी ह़ज़रत सय्यद शाह बरकतुल्लाह के प्रेम में डुबी हुई प्रेम नगरी में वह अ़ज़ीमुश्शान दरगाहे बरकातिया है जहाँ बड़े बड़ों ने अपने सरे अक़ीदत ख़म किये, जिसको अपने ज़माने के सूफ़िया–ए–किराम ने अपना मरकज़े अ़क़ीदत बनाया। जहाँ से न जाने कितने मारेफ़त के प्यासों ने जामे तरीक़त पी कर राहे हिदायत पाई। यह ख़ानक़ाह शरीफ़ आज भी बर्रे सग़ीर हिन्द में लाखों अ़वाम और सैकड़ों उ़लमा व मशाइख़ का मरकज़े अ़क़ीदत है। अपने पीर ख़ाने की तारीफ़ करते हुए आला ह़ज़रत फ़ाज़िले बरेलवी अलैहिर्रह़मा फ़रमाते हैंः

**कैसे आक़ाओं का बन्दा हूँ रज़ा**
**बोल बाले मेरी सरकारों के**

यह दरगाह शरीफ़, ''दरगाहे शाह बरकतुल्लाह अलैहिर्रह़मा'' के नामे नामी से मौसूम है, और सवादे आज़म अहले सुन्नत व जमाअ़त का कोई साहिबे इल्म शख़्स ऐसा नहीं जो इस दरगाह और दरगाह से वाबस्ता अफ़रादे ख़ानक़ाह की दीनी, इल्मी और मिल्ली ख़िदमात का एतराफ़ न करता हो। हिन्दुस्तान में ही नहीं बल्कि बर्रे सग़ीर हिन्द व पाक में क़ादरिया सिलसिले की यह सब से बड़ी ख़ानक़ाह है, वह इसलिए भी कि सिलसिला–ए–क़ादरिया का इजरा यहाँ के मुर्शिदाने किराम और ख़ुलफ़ा–ए–एज़ाम के हाथों सब से ज़्यादा हुआ, और अलह़म्दुलिल्लाह इस बात को ख़ानदाने बरकात के अफ़राद ने रब तआ़ला का ख़ुसूसी फ़ज़्ल और उसके ह़बीब सय्यदे आ़लम ﷺ की ख़ुसूसी निगाहे तवज्जोह तसव्वुर किया।

अ़हदे शाहजहानी के मशहूर व माअ़रूफ़ सूफ़ी शायर साह़िबुल बरकात सुल्तानुल आशिक़ीन ह़ज़रत सय्यद शाह बरकतुल्लाह इश्क़ी पेमी बिलग्रामी सुम्मा मारहरवी अलैहिर्रह़मा की इस दरगाह में अपने–अपने दौर के वह अ़ज़ीम मशाइख़ आराम फ़रमा रहे हैं, जिनकी एक निगाहे तवज्जोह ने आ़म इन्सानों को ख़ास लोगों की लाइन में लाकर खड़ा कर दिया।

ख़ानवादा–ए–बरकातिया के अकाबिर का आना और हिन्दुस्तान में सुकूनत इख़्तियार कर के मारहरा शरीफ़ को अपने मुस्तक़िल तौर पर बसने बसाने के तारीख़ी पस मन्ज़र को इस ख़ानवादे के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग, तारीख़े ख़ानदाने बरकात के मुसन्निफ़ हुज़ूर ताजुल उ़लमा सय्यद शाह औलादे रसूल मुह़म्मद मियाँ साह़ब अलैहिर्रह़मा इस तरह़ फ़रमाते हैं–

''हमारा नस्ब ब वास्ता ह़ज़रत ज़ैद शहीद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हुज़ूर सरवरे आ़लम मुह़म्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व आलिही वसल्लम तक पहुँचता है।

बादशाहाने ज़ालिम के ज़ुल्म से तंग आकर हमारे दादा सय्यद अ़ली इराक़ी रह़मतुल्लाह अलैहि तर्के वतन फ़रमा कर क़रिया (गाँव)वासित में जो माबैन इराक़े अ़रब व इराक़े अ़जम के है, तशरीफ़ लाकर क़याम पज़ीर हुए (ठहरे)। आप के अह़फ़ाद (औलाद) से हज़रत सय्यद अबुल फ़रह़ वास्ती अपने चार साह़बज़ादों सय्यद अबुल फ़रास जद्दे सादाते बिलग्राम व सय्यद अबुल फ़ज़ाईल व सय्यद दाऊद व सय्यद मअ़ज़ुद्दीन के साथ सुल्तान मह़मूद ग़ज़नवी के ज़माने में वासित से गज़नी तशरीफ़ लाए और बाद क़याम चन्द रोज़ के मअ़ा (साथ) सय्यद मअ़ज़ुद्दीन फिर वासित को मुराजअ़त फ़रमाई (वापस हुए), और बाक़ी तीनों साह़बज़ादों ने हिन्दुस्तान का क़स्द फ़रमाया, और सय्यद अबू फ़रास ने जाजनीर और सय्यद अबुल फ़ज़ाइल ने छातरूद और सय्यद दाऊद ने थनपुर में एक़ामत इख़्तियार फ़रमाई। सय्यद अबू फ़रास के अह़फ़ाद से ह़ज़रत सय्यद मुह़म्मद सुग़रा रह़मतुल्लाह तआ़ला अलैहि ने ह़स्बे ईमाए सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तुतमश राजा बिलग्राम से जिहाद फ़रमाया, और 614 हि0 में फ़तह़ पाई, इसकी ख़ुशी में सुलतान ने बिलग्राम आपको जागीर में दे दिया। ह़ज़रत ने इसका नाम ''सिरी नगर'' से बदल कर ''बिलग्राम'' रखा, और वहाँ शआ़इर व मरासिमे इस्लाम (इस्लामी रस्मों) को रिवाज दिया और अपने अहलो अ़याल के साथ वहीं सुकूनत फ़रमाई (बस गए)। उस ज़माने से हमारी बूदो बाश (क़याम) ताज़मान–ए–हज़रत मीर अब्दुल वाहिद बिलग्रामी अलेहिर्रह़मा बिलग्राम में रही। हज़रत मीर अब्दुल वाहिद अलैहिर्रह़मा के बड़े साह़बज़ादे हज़रत सय्यद शाह अ़ब्दुल जलील अलैहिर्रह़मा (972 हि0–1057 हि0) अ़हदे जहाँगीर में 1017 हि0 में मारहरा तशरीफ़ लाए और इस वक़्त तक ह़ज़रत की औलाद मारहरा में है।

हज़रत सय्यद शाह अ़ब्दुल जलील बिलग्रामी के चार साह़बज़ादे सय्यद अबुल फ़तह़, सय्यद शाह उवैस, सय्यद मुह़म्मद, सय्यद अबुल ख़ैर और दो साह़बज़ादियाँ पैदा हुईं। साह़बज़ादा ख़ुर्द (छोटे) हज़रत सय्यद मुह़म्मद उवैस अलैहिर्रह़मा को बैअ़त व ख़िाफ़त अपने वालिद माजिद से थी, और आप ही वह साह़बज़ादे हैं कि जिनकी औलाद मारहरा शरीफ़ में है। हज़रत सय्यद शाह मुह़म्मद उवैस के तीन साह़बज़ादे हज़रत सुल्तानुल आशिक़ीन सय्यद शाह बरकतुल्लाह, हज़रत सय्यद शाह अ़ज़मतुल्लाह, हज़रत सय्यद शाह रह़मतुल्लाह और दो साह़बज़ादियाँ थीं।

हज़रत सय्यद शाह बरकतुल्लाह इश्क़ी रह़मतुल्लाहि अलैहि (1070 हि0–1142 हि0) ही इमामे सिलसिला–ए–बरकातिया हैं। हुज़ूर साह़िबुल बरकात अलैहिर्रह़मा ने अपने वालिदे मुअ़ज़्ज़म और दिगर बुर्ज़ुगाने ख़ानदान के साया–ए–आ़तिफ़त में परवरिश पाई। वालिदे माजिद अलैहिर्रह़मा के अ़लावा दीगर बुर्ज़ुगों से इजाज़त व ख़िलाफ़त ह़ासिल की। आपके ऊपर सरकारे ग़ौसियत के इश्क़ का ग़लबा था, और उसके ज़ेरे असर हुज़ूर साह़िबुल बरकात अलैहिर्रह़मा सरकार काल्पी हज़रत सय्यद शाह मीर फ़ज़लुल्लाह काल्पवी अलैहिर्रह़मा के पास ह़ाज़िर हुए। सरकार काल्पवी ने हुज़ूर साह़िबुल बरकात को गले लगाते हुए इरशाद फ़रमायाः '' दरिया ब दरिया पैवस्त'' और तमाम सलासिले

आ़लिया क़ादरिया की ख़िलाफ़त और इजाज़त से सरफ़राज़ फ़रमाया और यहीं से इस ख़ानवादे आ़लीशान में सिलसिला–ए–क़ादरिया जदीदा का इजरा अ़मल में आया। हुज़ूर साहिबुल बरकात के दो साह़बज़ादे हुए। सरकारे कलाँ हज़रत सय्यद शाह आले मुह़म्मद साह़ब (1111 हि0–1164 हि0) व सरकार ख़ुर्द हज़रत सय्यद शाह नजातुल्लाह अलैहिर्रह़मा, सरकारे कलाँ हज़रत शाह आले मुह़म्मद साह़ब ही की निस्बत से यह ख़ानक़ाह शरीफ़ ''बड़ी सरकार'' कही जाती है। हज़रत सय्यद शाह आले मुह़म्मद के दो साह़बज़ादे और एक साह़बज़ादी हुईं। बड़े साह़बज़ादे असदुल आरेफ़ीन हज़रत सय्यद शाह ह़मज़ा (1131 हि0–1198 हि0) और छोटे साह़बज़ादे बरकाते सानी हज़रत सय्यद शाह मुह़म्मद ह़क़्क़ानी, साह़बे तसानीफ़े कसीरा अलैहिर्रह़मा, हज़रत सय्यद शाह ह़क़्क़ानी का अ़क़्द नहीं हुआ था। उनका इन्तक़ाल मारहरा शरीफ़ में हुआ। अबदी आरामगाह दरगाहे बरकातिया में है। मज़ारे मुक़द्दस सय्यद शाह आले मुह़म्मद अलैहिर्रह़मा के सिरहाने (सर की तरफ़) के दालान में है।

हज़रत सय्यद शाह ह़मज़ा के तीन साह़बज़ादे हुए। हज़रत सय्यद शाह आले अह़मद अच्छे साह़ब (1160 हि0–1235 हि0) हज़रत सय्यद शाह आले बरकात सुथरे साह़ब (1163 हि0–1251 हि0) और हज़रत सय्यद शाह आले हुसैन सच्चे साह़ब अलैहिर्रह़मा।

हज़रत आले अह़मद अच्छे साह़ब के एक साह़बज़ादे हज़रत आले नबी साईं मियाँ हुए जो सिग़र सिनी (बचपने) में विसाल फ़रमा गए। आपने अपनी ह़यात में अपने बिरादरे औसत (बीच वाले भाई) ह़ज़रत आले बरकात सुथरे साह़ब अलैहिर्रह़मा को अपना सज्जादा नशीन तजवीज़ फ़रमाया।

हुज़ूर अच्छे साह़ब के बाद आपके बिरादरे ख़ुर्द हज़रत सय्यद आले बरकात सुथरे साह़ब, साह़बे सज्जादा हुए। आपके अ़क़्दे अव्वल (पहली शादी) से एक साह़बज़ादे सय्यद आले मियाँ साह़ब हुए और अ़क़्दे सानी (दूसरी शादी) से हज़रत ख़ातिमुल अकाबिर सय्यद शाह आले रसूल अह़मदी अलैहिर्रह़मा (1209 हि0–1296 हि0) हज़रत सय्यद शाह औलादे रसूल अलैहिर्रह़मा (1212 हि0–1268 हि0) हज़रत सय्यद ग़ुलाम मुह़ियुद्दीन अमीर आ़लम (1223 हि00–1286 हि0) अलैहिर्रह़मा हुए। वालिदे माजिद के विसाल के बाद आप तीनों भाई अपने वालिद के बदरजा–ए–मुसावी (बराबर) जा नशीन व सज्जादा नशीन हुए। हज़रत सय्यद शाह आले रसूल साह़ब के दो साह़बज़ादे हज़रत सय्यद ज़हूर ह़सन साह़ब उर्फ़ बड़े मियाँ, हज़रत सय्यद शाह ज़हूर हुसैन साह़ब उर्फ़ छोट्टू मियाँ हुए। हज़रत सय्यद शाह ज़हूर ह़सन साह़ब अलैहिर्रह़मा के बड़े साह़बज़ादे हज़रत सय्यद शाह अबुल हुसैन अह़मद नूरी मियाँ साह़ब (1255 हि0–1324) हि0 अलैहिर्रह़मा व हज़रत सय्यद शाह ज़हूर हुसैन साह़ब के साह़बज़ादे हज़रत सय्यद शाह मेहदी ह़सन साह़ब हुए। हज़रत सय्यद मेहदी ह़सन साह़ब के विसाल के बाद हुज़ूर सय्यदुल उ़लमा सय्यद शाह आले मुस्त़फ़ा सय्यद मियाँ अलैहिर्रह़मा (1323 हि0–1394 हि0) सज्जाद नशीन हुए। **(जारी .....)**

**★ ज्वाइंट सेक्रेटरी, अलबरकात एजुकेशनल सोसायटी, अलीगढ़।**

डॉ0 सय्यद मुहिब्बुल हक़ ★

# यौमे जम्हूरिया (गणतन्त्र दिवस)

भारत दुनिया का सबसे बड़ा जम्हूरी मुल्क है। हिन्दुस्तान के क़ानून ने भारत को एक जम्हूरिया (Republic) क़रार दिया है। जम्हूरिया से मुराद ऐसी तर्ज़े हुकूमत है जिस में हुकूमत के तमाम ओहदे (पद) मुल्क के सारे शहरियों के लिये खुले होते हैं। यानी कोई भी शहरी मुल्क का कोई भी पद ले सकता है, साथ ही साथ मुल्क का हाकिम खानदानी नही होता है, बल्कि जम्हूरी तरीक़े से चुना जाता है। यहाँ यह बात क़ाबिले ज़िक्र है कि हर जम्हूरी मुल्क को जम्हूरिया (Republic) होने का शरफ़ हासिल नहीं होता। मिसाल के तौर पर इंग्लैण्ड एक जम्हूरी मुल्क (Democratic Country) है, लेकिन जम्हूरिया नहीं है। क्योंकि इंग्लैण्ड में मुल्क का हाकिम बादशाह या मलिका (रानी) होते हैं, और यह पद सारे शहरियों के लिये नहीं होता, बल्कि मौरूसी (खानदानी) होता है। और साथ ही साथ यह शर्त भी होती है कि मलिका या बादशाह का तअल्लुक़ कैथोलिक ईसाईयत (Catholic Christianity) से नहीं होना चाहिए।

भारत में यौमे जम्हूरिया हर साल 26 जनवरी को बड़े ठाट बाट के साथ मनाया जाता है। चूँकि 26 जनवरी 1950 ई0 को मुल्क में दस्तूरे असासी हिन्द (बुनियादी क़ानून) का निफ़ाज़ हुआ, इसलिए यौमे जम्हूरिया इस दिन को याद करने के लिये मनाया जाता है। यौमे जम्हूरिया की अहमियत इसलिए बढ़ जाती है कि इससे पहले हमारा मुल्क अंग्रेज़ी हुकूमत का हिस्सा था, और इंग्लैण्ड की मलिका या बादशाह को हमारे मुल्क पर हुकूमत का हक़ था। लेकिन एक लम्बी जंगे आज़ादी के बाद हमारा मुल्क अंग्रेज़ों के हाथों से आज़ाद हुआ, और हिन्दुस्तानियों को इस बात का हक़ हासिल हुआ कि वो खुद अपने मुल्क का क़ानून बनायें और अपने चुने हुए नुमाइन्दों के ज़रिये हुकूमत चलायें।

दस्तूरे असासी हिन्द के तअल्लुक़ से हमें यह बात भी जाननी चाहिए कि यह दस्तूर (क़ानून) मुल्क की आज़ादी से पहले यानी 1946 ई0 में बिला वास्ता (Direct) तरीक़े से चुनी हुई दस्तूर साज़ (क़ानून बनाने वाली) असम्बली ने बनाना शुरू किया और 26 नवम्बर 1949 ई0 को यह क़ानून मुकम्मल हुआ, उसके बाद 26 जनवरी 1950 ई0 को यह दस्तूर नाफिज़ (लागू) किया गया। 26 जनवरी की तारीख़ ख़ास तौर पर इसलिए चुनी गई कि इसी दिन यानी 26 जनवरी 1930 ई0 को ''इण्डियन नेशनल कांग्रेस'' ने अंग्रेजी हुकूमत के ख़िलाफ़ मुकम्मल आज़ादी का ऐलान किया था। इस तरह यह बात ज़ाहिर हो जाती है कि यौमे जम्हूरिया अलामती तौर पर मुल्क की आज़ादी व खुद मुख़्तारी का दिन भी है। जिसकी तर्जुमानी हिन्दुस्तानियों के अपने बनाए हुए। दस्तूर असासी के बाक़ी पेज न0 65 पर देखें।

# मशाइख़े ख़ानदाने बरकात

## हुज़ूर साहिबुल बरकात सय्यद शाह बरकतुल्लाह इश्क़ी मारहरवी अलैहिर्रहमा

*इस कॉलम में ख़ानदाने बरकात के उन मशाइख़े किराम का तआ़रूफ़ शामिल किया गया है,जिनका विसाल मुहर्रमुलहराम ता रबीउल अव्वल के महीने में हुआ है। अहबाब व मुतवस्सिलीने सिलसिला से गुज़ारिश है कि इन तारीख़ों में बुज़ुर्गों के ईसाले सवाब का एहतमाम करें। (इदारा)*

बर्रे सग़ीर हिन्द व पाक में औलिया–ए–किराम और सूफ़िया–ए–एज़ाम ने दीन को फैलाने में जो मेहनतें कीं, और जो मशक़्क़तें उठाईं, उस से इन्कार नहीं किया जा सकता। सूफ़िया–ए–किराम ने अल्लाह के बन्दों को इन्सान दोस्ती का सबक़ दिया, और नेकी की तरफ़ बुलाया। ज़्यादा तर सूफ़िया–ए–तरीक़त किसी न किसी सिलसिले से ज़रूर वाबस्ता होते हैं। तरीक़त के चार सिलसिले बहुत मशहूर हैं। 1. क़ादरिया, 2. चिश्तिया, 3. नक़्शबंदिया और 4. सोहरवर्दिया।

साहिबुल बरकात हज़रत सय्यद शाह बरकतुल्लाह अलैहिर्रहमा का शुमार हिन्दुस्तान के क़ादरिया सिलसिले के अहम बुज़ुर्गों में होता है। गंगा जमुना के मैदान यानी ''दो आबा'' के बीच बर्ज के इस तहज़ीबी इलाक़े में कोई सूफ़ी बुज़ुर्ग शाह बरकतुल्लाह अलैहिर्रहमा के मर्तबे को नहीं पहुँचा। आप अपने ज़माने में उलूमे शरीअ़त और उलूमे तरीक़त दोनों के संगम थे।

**नाम व नसबः** आप का नाम ''बरकतुल्लाह'', लक़ब ''साहिबुल बरकात'' और तख़ल्लुस ''इश्क़ी'' व ''पेमी'' था। आप की पैदाइश 26 जुमाद–अल–आख़िरा 1070 हि0 मुताबिक़ 1660 ई0 को जिला हरदोई (उत्तर प्रदेश) के मशहूर क़स्बा बिलग्राम में हुई। साहिबुल बरकात का शजरा–ए–नसब इस तरह से हैः

हज़रत सय्यद शाह बरकतुल्लाह बिन हज़रत सय्यद शाह उवैस बिन सय्यद शाह अब्दुल जलील बिन मीर सय्यद अब्दुल वाहिद बिलग्रामी (साहिबे ''सबअ़–सनाबिल'') बिन सय्यद इब्राहीम बिन सय्यद कुतबुद्दीन बिन सय्यद शाह माहरू बिन सय्यद शाह बुढा बिन सय्यद कमाल बिन सय्यद क़ासिम बिन सय्यद हुसैन बिन सय्यद नसीर बिन सय्यद हुसैन बिन सय्यद उ़मर बिन मीर सय्यद मुहम्मद उर्फ़ दावतुस्सुग़रा बिन सय्यद अ़ली बिन सय्यद हुसैन बिन सय्यद अबुल फ़रह़ सानी बिन सय्यद अबू फ़राश बिन सय्यद अबुल फ़रह़ बिन सय्यद दाऊद बिन सय्यद हुसैन बिन सय्यद यह़या बिन सय्यद ज़ैद सोम बिन सय्यद उ़मर बिन सय्यद ज़ैद दोम बिन सय्यद अ़ली इराक़ी बिन सय्यद ह़सन बिन सय्यद अ़ली बिन सय्यद मुह़म्मद बिन सय्यद

ईसा मूतिमुल अशबाल (शेरों को यतीम बनाने वाले) बिन सय्यद ज़ैद शहीद बिन इमाम ज़ैनुल आबिदीन बिन सय्यदुश् शोहदा हज़रत इमामे हुसैन बिन हज़रत अमीरूल मोमिनीन सय्यदना हज़रत अ़ली–ए–मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वजहहु ज़ौज (शौहर) सय्यिदतुन्निसा फ़ातिमतुज्ज़हरा बिन्त सय्यदुल अम्बिया मुह़म्मद मुस्तफ़ा तक पहुँचता है (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन)

**तालीम व तरबियतः** हज़रत शाह बरकतुल्लाह अलैहिर्रह़मा का ज़माना उ़लूम व फुनून के लिहाज़ से बहुत साज़गार था। औरंगज़ेब आ़लमगीर बादशाह को उ़लूमे इस्लामी से बहुत मुह़ब्बत थी। फ़तावा आ़लम गीरी उसी ज़माने की यादगार हैं। साहि़बुल बरकात का दौलत ख़ाना उ़लूम–ए–जाहिरी और बाति़नी का संगम था। इस्लामी उ़लूम सीख़ना ज़रूरी समझा जाता था। शाह साह़ब ने कुरआ़न, ह़दीस, फ़िक़ह, मन्ति़क़ और फ़ल्सफ़ा वग़ैरह की तालीम अपने वालिदे गिरामी और दीगर असातज़ा–ए–किराम से ह़ासिल की। इसके अलावा अ़रबी, फ़ारसी और संस्कृत के कलासिकी अदब को भी पढ़ा। नीज़ गीता, वेद, उपनिषद और हिन्दू फल्सफे को भी अच्छी तरह़ से समझा।

**बैअ़त व ख़िलाफ़तः** साहि़बुल बरकात को बैअ़त व ख़िलाफ़त अपने वालि़द माजिद हज़रत सय्यद शाह उवैस अलैहिर्रह़मा से मिली थी। इसके अ़लावा आपको अपने चचा ज़ाद भाई सय्यद मुरब्बी बिन सय्यद अ़ब्दुल नबी, सय्यद गुलाम मुस्त़फ़ा और सय्यदुल आ़रेफ़ीन सय्यद शाह लुत्फ़ुल्लाह बिलग्रामी अलैहिर्रह़मा से भी इजाज़त व ख़िलाफ़त ह़ासिल हुई।

**बाति़नी उलूम की तकमीलः** आपको सय्यदना हज़रत अब्दुल क़ादिर जीलानी रह़मतुल्लाहि अलैह से मुह़ब्बत थी। आप हमेशा उनकी मुह़ब्बत में बेचैन रहते थे, उस ज़माने में काल्पी के बुज़ुर्ग ह़ज़रत सय्यद शाह फ़ज़लुल्लाह काल्पवी अलैहिर्रह़मा की शोहरत चारों तरफ़ फैली हुई थी। बाति़नी इशारा मिलते ही साहि़बुल बरकात काल्पी शरीफ़ रवाना हो गये। मदरसा (ख़ानक़ाहे मुह़म्मदिया काल्पी) के अन्दरूनी दरवाज़े पर शाह फ़ज़लुल्लाह काल्पवी को इन्तज़ार करते हुये पाया। हज़रत फ़ज़लुल्लाह साह़ब ने आपको अपने सीने से लगाकर तमाम उलूम–ए–बाति़नी आप को दे दी। इसके अलावा चारों सिलसिले की ख़िलाफ़त से भी मुशर्रफ़ फ़रमाया। काल्पी में कुछ दिन रहने के बाद हुज़ूर साहि़बुल बरकात को मारहरा वापस जाने का हुक्म हुआ।

**हुज़ूर साहि़बुल बरकात की मारहरा आमदः** साहि़बुल बरकात अपने वालिद माजिद की वफ़ात (20 रजब 1097 हि0) के बाद मारहरा आए, और अपने दादा सय्यद शाह अ़ब्दुल जलील अलैहिर्रह़मा की ख़ानक़ाह में क़याम पज़ीर हुए। ख़ानक़ाह के आस पास एक बदमाश क़ौम रहा करती थी, जो ह़ज़रत को सुकून से नहीं रहने देती थी, जिसकी वजह से आप ने उनके साथ रहने को ना पसन्द फ़रमाकर 1118 हि0 में शहर से बाहर नयी आबादी की बुनियाद डाली, और ख़ानकाह और मस्जिद बनवाई। इस नयी आबादी का नाम **''पेम नगर'' ''बरकात नगरी''**

रखा। मारहरा के कानून गो चौधरी फ़रीद जुबैरी ने इस तामीर में बड़ी मदद की। जब नई बस्ती बन गई तो साहिबुल बरकात ने अपने घर वालों को बिलग्राम से मारहरा बुला लिया और हमेशा के लिए उसी बस्ती में बस गये।

**आपके खुलफ़ा–ए–गिरामीः** 1. शाह अब्दुल्लाह (1140हि0) 2. शाह मीम (1150हि0) 3. शाह मुश्ताकुल बरकात (1167हि0) 4. शाह मिनल्लाह (1176हि0) 5. शाह राजू (1143 हि0) 6. शाह हिदायतुल्लाह (1149हि0) 7. शाह रूहुल्लाह (1173हि0) वगैरह।

**तसनीफ़ातः** आप ने उर्दू, अ़रबी व फारसी ज़बानों में बहुत सी किताबें लिखी हैं। जिनमें से कुछ किताबों के नाम यह हैंः (1) मस्नवी रियाज़े इश्क़ (2) दीवाने इश्क़ी (3) तरजीअ–ए–बन्द (4) अ़वारिफ़ हिन्दी (5) पेम प्रकाश (6) चेहार अनवा।

हज़रत शाह बरकतुल्लाह अलैहिर्रह़मा कश्फ़ व करामत वाले बुजुर्ग थे। उनके ज़माने के तज़किरा निगारों ने उनकी बहुत सी करामतें बयान की हैं, जिन्हें इख़्तेसार की वजह से छोड़ा जा रहा है।

**नसीहतेंः** अल्लाह के बन्दों को चाहिए कि वह अल्लाह की याद में मशगूल रहें, और सुलूक़ व फ़िक़्ह की किताबों को पढ़ते रहें। बुजुर्गों के मक़ाम पर क़ायम रहें, और दुनिया दारों के घरों की तरफ़ रूख़ भी न करें। कब्रों की ज़ियारत के लिये ज़रूर–ज़रूर जायें। अल्लाह के बन्दों के काम के लिये हर आदमी की मन्नत व समाजत करें। इसलिए कि यह सवाब है। शरीअ़ते मुतह्हरा पर सख़्ती से अमल करें। दीन के किसी भी मामले में चाहे कितनी भी परेशानियॉ और मुसीबतें झेलनी पड़ें, बरदाश्त करें। جَاهِدُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہ (अल्लाह की राह में जिहाद करो) जिहादे अकबर अपने आप से जिहाद करना है, यानी खुद को कभी आराम न दें ताकि आराम पायें। नफ़्से अम्मारा, (बुराई वाला नफ़्स) जो कुछ भी कहे उसकी मुख़ालफ़त करें वगैरह।

**विसालः** साहिबुल बरकात का विसाल आशूरा की रात मुहर्रमुलह़राम सन् 1142 हि0 मुताबिक़ 1729 ई0 को मारहरा में हुआ। नीचे का मिसरा तारीख़े विसाल है :

فَنَا فِی اللّٰہ شُدْآں پِیْر مَحْرَمْ

1142 हि0

नवाब मुह़म्मद ख़ान बंगश मुजफ़्फ़र जंग वाली–ए–फ़रूख़ाबाद ने नाज़िमे हुकूमत शुजाअ़त ख़ाँ के ज़ेरे एहतिमाम शाह बरकतुल्लाह अलैहिर्रह़मा का रौज़ा–ए–पाक तामीर कराया जो अब ''दरगाह शाह बरकतुल्लाह'' के नाम से जाना जाता है। ★★★

★ **सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे बरकातिया (बड़ी सरकार) मारहरा शरीफ़।**

सय्यद मुह़म्मद उस्मान मियाँ क़ादरी★

# असदुल आ़रिफ़ीन हज़रत सय्यद शाह मुह़म्मद ह़मज़ा ऐ़नी अलैहिर्रह़मा

ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा शरीफ़, आलमे इस्लाम की वह मशहूर व मअ़रूफ़ ख़ानक़ाह है जहाँ एक ही गुम्बद के नीचे सात अक़्ताब आराम फ़रमा हैं, जिनकी बशारत हुज़ूर ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु अन्हु ने ह़ज़रत शाह बू अ़ली क़लन्दर अलैहिर्रह़मा के ज़रिया साह़िबुल बरकात हज़रत सय्यद शाह बरकतुल्लाह अलैहिर्रह़मा को अपनी तस्बीह़ के सात दाने भेज कर दी। उन्हीं सात अक़्ताब में से एक असदुल आरिफ़ीन हज़रत सय्यद शाह मुह़म्मद ह़मज़ा ऐ़नी अलैहिर्रह़मा हैं।

**पैदाइश व ख़ानदानः** आपकी पैदाइश 14/रबीउल आखिर 1131 हि0 को मारहरा शरीफ़ में हुई। आपके वालिद अपने वक़्त के बहुत ही मशहूर व मअ़रूफ़ बुजुर्ग हज़रत सय्यद शाह आले मुह़म्मद बिन सय्यद शाह बरकतुल्लाह अलैहिर्रह़मा थे, और आपकी वालिदा सय्यदा ग़नीमत फ़ातिमा बिन्त सय्यद शाह अज़मतुल्लाह अलैहिर्रह़मा थीं।

**तालीम व तरबियतः** आपने उ़लूमे ज़ाहिरी अपने वालिदे माजिद हज़रत सय्यद शाह आले मुह़म्मद, शमसुल उलमा मौलाना सय्यद मुह़म्मद बाक़िर और शेख ढढा लाहौरी से ह़ासिल की, और इल्मे त़िब ह़कीम अ़ताउल्लाह साह़ब से सीखा। इसके अलावा आपने 11 साल की उम्र तक अपने दादा जान हज़रत सय्यद शाह बरकतुल्लाह अलैहिर्रह़मा से भी तालीम और तरबियत ह़ासिल की। अभी आप की उम्र 4 साल ही थी कि आपके दादा जान ने अपनी निगाहे विलायत से आपके रौशन मुस्तक़बिल (भविष्य) को देखते हुये अपनी कुलाह (टोपी) मुबारक आपको अ़ता फ़रमायी, और ''बड़े मियाँ'' का ख़िताब दिया।

आपको इल्म व अदब से इतनी मुह़ब्बत थी कि आपके कुतुब ख़ाने में मुख़्तलिफ़ उ़लूम व फुनून की तक़रीबन 16 हज़ार किताबें थीं, जो आपके मुतालआ से गुज़र चुकीं थीं। आपने खुद भी कई किताबें तसनीफ़ फ़रमायीं जिनका तज़किरा आगे किया जायेगा।

**अक़्दे मसनून (शादी) व औलादः** आपकी शादी हज़रत सय्यद मुह़म्मद मोह़्सिन मियाँ साह़ब की साह़बज़ादी सय्यदा दयानत फ़ातिमा से हुई। आपके तीन साह़बज़ादेः 1. अबुल फ़ज़ल शमसुद्दीन सय्यद शाह आले अह़मद अच्छे मियाँ 2. सय्यद शाह आले बरकात सुथरे मियाँ 3. सय्यद शाह आले हुसैन सच्चे मियाँ और एक साह़बज़ादी सय्यदा वाफ़िया बेगम थीं।

**शख़्सियतः** आपका अख़्लाक़ बहुत बुलन्द था। हर शख़्स से आप मुह़ब्बत से मिलते, लोगों का दुख–दर्द बाँटते और ज़रूरत मन्दों की मदद फरमाते थे। आप अपने वालिदेन और असातिज़ा का बेह़द एहतराम फरमाते थे। मक़ामे कुतुबिय्यत पर फ़ाईज होने के बावजूद आप अदना तालिबे इल्म का ख़्याल रखते थे। इन्किसारी का यह आलम था कि जिन लोगों को खुद आपने रूहानी तरबियत फरमायी थी, उनसे भी खुद को कमतर

समझते थे। यह इन्किसारी का वह मक़ाम है जो आज के ज़माने में देखने को नहीं मिलता।

आपने 34 साल की उम्र में जब मसनदे सज्जादगी को रौनक़ बख़्शी तो बिल्कुल अपने वालिदे माजिद के नक़्शे क़दम (तरीक़े) पर चले। आप तहज्जुद के पाबन्द थे। तहज्जुद की नमाज़ के बाद अज़कार (वज़ीफ़ा) में मशगूल हो जाते। फ़जर की सुन्नतें अव्वल वक़्त में पढ़ते, उसके बाद औराद व वज़ाइफ़ का दौर फरमाते (पढ़ते), फिर नमाज़े फ़जर के बाद बाग़ की सैर को तशरीफ़ ले जाते, वहाँ से आने के बाद पूरा दिन कुरआने पाक की तिलावत, ग़रीबों की इमदाद और ज़रूरत मन्दों की ज़रूरतें पूरी करने में गुज़ार देते। इशा की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर दरगाह में कुछ ख़ास वज़ीफ़ा पढ़ते और फिर आराम फरमाते।

**ख़ुलफ़ाः** साहबज़ादगान के अलावा हज़रत शाह हमज़ा ऐनी अलैहिर्रहमा के खुलफ़ा में 6/हज़रात का नाम मिलता है।

1. हज़रत शाह नसीर लंग 2. हज़रत शाह हिफ्जुल्लाह 3. हज़रत शाह रमज़ानुल्लाह 4. हज़रत शाह रहीमुल्लाह 5. हज़रत शाह दीदार अली 6. हज़रत शाह सैफुल्लाह।

**एक अहम वाक़याः** हज़रत शाह हमज़ा ऐनी अलैहिर्रहमा के हालात में लिखा हुआ है कि एक दिन किसी किताब का मुताअला करते हुए आपको यह शक हुआ कि पता नहीं मेरा नसब हज़रत अली और बीबी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा तक पहुँचता है या नहीं? इसी सोच में पूरा दिन गुज़र गया, यहाँ तक कि आधी रात ख़त्म हो गई। नमाज़े तहज्जुद अदा करने के बाद आप वहीं बैठे हुये थे, अचानक देखा कि दरवाज़े की चौखट पकड़े एक नूरानी बुजुर्ग और एक खातून खड़ी हैं। इन बुजुर्ग ने फरमायाः क्यूँ परेशान होते हो? मैं तुम्हारा दादा अली–ए–मुर्तज़ा हूँ, और यह तुम्हारी दादी फातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) हैं, और तुम हमारे फरज़न्दे ख़ास (बेटे) हो, और हमारे साथ जन्नत में होगे।

**हज़रत शाह मदार का खुसूसी अ़तियाः** एक मर्तबा हज़रत हमज़ा ऐनी अलैहिर्रहमा अपने वतन बिलग्राम शरीफ जा रहे थे तो आपके वालिद हज़रत शाह आले मुहम्मद ने फरमाया कि मकनपुर शरीफ में हज़रत बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार के मज़ारे अक़्दस पर फातिहा पढ़ते हुये जाना। जब हज़रत मकनपुर हाज़िर हुये, उस वक़्त हज़रत मदार मज़ार शरीफ़ से बाहर तशरीफ़ लाये और ''दुआऐ बशमख़'' अपनी ज़बाने मुबारक से हज़रत को तालीम फरमायी।

**तसनीफ़ व तालीफ़ः** हज़रत सय्यद शाह हमज़ा ऐनी अलैहिर्रहमा अपनी शबो रोज़ (दिन व रात) की मसरूफ़ियात के बाद जो वक़्त मिलता उसमें कुछ तहरीरी काम भी कर लेते थे। चुनाँचे आपने बहुत सी किताबें लिखी हैं। जिनमें से ''काशिफुल अस्तार'',''फस्सुल कलेमात''और ''असरारे खानदानी'' बहुत मशहूर हैं। ग़ौसे पाक की शान में लिखी हुई फ़ारसी मन्क़बत (ग़ौसे आज़म ब मने बे सरो सामां मददे) भी बहुत मक़बूल हुई।

**विसालः** 14 मुहर्रमुलहराम 1198 हि0 को आपका विसाल हुआ। दरगाहे बरकातिया के अन्दर पत्थर की एक खुश्नुमा सह् दरी के नीचे मज़ारे मुबारक है। ★★★

**(इस मज़मून को लिखने में अहले सुन्नत की आवाज़, बरकाते मारहरा और तज़किरा–ए–नूरी से मदद ली गई है।)**

★ **ख़ानक़ाहे बरकातिया, मारहरा शरीफ़, एटा (यूपी)**

डॉ0 अह़मद मुजतबा सिद्दीक़ी★

शम्से मारहरा

# ह़ज़रत सय्यद शाह आले अह़मद अच्छे मियाँ क़ादरी अलैहिर्रह़मा

**पैदाइशः** ह़ज़रत सय्यद शाह ह़मज़ा ऐनी अलैहिर्रह़मा के साह़बज़ादे सय्यद शाह आले अह़मद अच्छे मियाँ अलैहिर्रह़मा की पैदाइश 28 रमज़ानुल मुबारक 1160 हि0 को मारहरा शरीफ़ में हुई। हुज़ूर अच्छे मियाँ साह़ब को ''शम्से मारहरा'' के लक़ब से याद किया जाता है।

**साह़िबुल बरकात की बशारतः** हुज़ूर साह़िबुल बरकात ने फरमाया थाः ''हमारी औलाद में एक साह़बज़ादे होंगे, जिन से ख़ानदान की रौनक़ बढ़ जायेगी'' और आपके लिये एक ख़िरक़ा भी दिया था। चुनाँचे आप जब 4 साल के हुये, तो आपके दादा जान (सय्यद शाह आले मुह़म्मद अलैहिर्रह़मा) ने आपके बारे में फ़रमाया कि यही वो साह़बज़ादे हैं जिनके बारे में बशारत दी गई है। आगे चलकर ज़माने ने देखा कि हुज़ूर साह़िबुल बरकात की ज़बान से निकला हुआ यह जुमला कैसा सच हुआ कि हुज़ूर शम्से मारहरा की ज़ात से ख़ानदाने बरकात की रौनक़ बढ़ी, और बरकातियत का फ़ैज़ान आपके ज़रिये अ़रब व अजम में आम हुआ।

**तालीम व तरबियतः** आपने तमाम ज़ाहिरी व बाति़नी उ़लूम अपने वालिद साह़ब (ह़ज़रत शाह ह़मज़ा ऐनी अलैहिर्रह़मा) से ह़ासिल की, फ़न–ए–तिब ह़कीम नस़रूल्लाह मारहरवी से ह़ासिल की, मगर रूह़ानी तरबियत सरकार ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु अन्हु ने की। आप अपने वालिदे माजिद से बैअ़त हुये, और इजाज़त व ख़िलाफत ह़ासिल की।

**शादी और औलादः** ह़ज़रत सय्यद शाह़ गुलाम अ़ली बिलग्रामी की स़ाह़बज़ादी से आप की शादी हुई, जिन से एक साह़बज़ादे ह़ज़रत साईं मियाँ और एक साह़बज़ादी पैदा हुईं। दोनों का इन्तिक़ाल बचपन में ही हो गया।

**ग़ौसे पाक से निस्बतः** ग़ौस पाक से आपको ख़ास निस्बत थी। एक बार आपने फ़रमाया कि ''यह ख़ानदाने बरकातिया सात पुशतों से ग़ौसे पाक का नमक खा रहा है, इसलिए ग़ौसे पाक की गुलामी हरगिज़ न छोड़ो, क्योंकि इसी में दोनों जहाँ की सलामती है।''

ग़ौसे पाक से आपकी निस्बत ही का फ़ैज़ान था जो उन्हों ने आप को अपना नायब बनाया, और अपने साह़बज़ादे को बग़दाद से आपके पास बाति़नी तरबियत के लिये भेजा।

**अकाबिर उ़लमा की हाज़िरीः** आप अपने ज़माने में अकाबिर (बड़े) उ़लमा व मशाइख़ के मरजअ थे। बड़े–बड़े उ़लमा आपके पास शरीअ़त व तरीक़त के मसाइल पूछने आते और आप उनको तसल्ली भरा जवाब देते थे। आसारे अह़मदी में लिखा है कि एक स़ाह़ब ने बग़दाद शरीफ़ में ह़ज़रत नक़ीबुल अशरफ़ साह़ब, साह़बे सज्जादा–ए–ग़ौसिया, से अर्ज़ किया कि मुझे ''वह़दतुलवजूद'' के मसले के बारे में कुछ शुबहा है वह दूर फ़रमा दें। आप ने इरशाद फ़रमायाः ''हिन्दुस्तान में हमारे घर की दौलत बट रही है वहाँ जाओ।'' हुक्म के मुताबिक़ ये हिन्दुस्तान

आये। यह वो ज़माना था जब देहली में सिराजुल हिन्द शाह अ़ब्दुल अज़ीज़ मुह़द्दिस देहलवी दिल्ली के बहुत बड़े आ़लिम कहे जाते थे, और हर जगह आप के इल्म व फ़ज़ल का डंका बज रहा था। यह हज़रत शाह साह़ब की बारगाह में ह़ाज़िर हुये और मसला अर्ज़ किया। शाह साह़ब ने मसला समझाया मगर इन की तसल्ली नहीं हुई। शाह साह़ब समझ गये कि यह मसला क़ाल से नहीं बल्कि किसी साह़ब ह़ाल से ह़ल होगा। आप ने फ़रमाया कि मारहरा चले जाओ, वहाँ हमारे भाई अच्छे मियाँ हैं, वह तुम्हारी तस्कीन कर देंगे। यह मारहरा शरीफ़ ह़ाज़िर हुए। जिस वक़्त आस्ताने पर पहुँचे उस वक़्त हज़रत दरगाह से ख़ानक़ाह की तरफ़ जा रहे थे, रास्ते में इन्हों ने क़दम बोसी की, आप वहीं ठहर गये और उनका ह़ाल पूछा। उन्हों ने मुख़्तस़रन अपने आने का मक़सद और मसले के सिलसिले में अपना इशकाल (शुब्हा) अर्ज़ किया। वहीं क़रीब में एक फूस का छप्पर था। ह़ज़रत ने उस पर से कुछ तिनके उठाये और उनको तोड़ते हुये फ़रमाया कि आप के इशकालात ऐसे ही हैं जैसे ये तिनके। फिर एक ऐसी निगाहे तवज्जोह डाली कि उसी वक़्त उन पर मसले की ह़क़ीक़त ज़ाहिर हो गई।

**आईने अह़मदीः** हज़रत शम्से मारहरा के हुक्म से आपके मुरीदीन व ख़ुलफ़ा उ़लमा–ए–किराम की एक जमाअ़त ने मिलकर 30 या 60 ज़िल्दों में एक इन्साईक्लोपीडिया मुरत्तब किया, जिसका नाम ''आईने अह़मदी'' रखा गया। इस किताब में तमाम अहम उलूम व फुनून के बारे में लिखा गया है, और बिला शुब्हा यह निहायत जामेअ़ और मुकम्मल किताब है। मगर अफ़सोस कि इसकी अकसर जिल्दें ग़ायब हो गईं, और चन्द जिल्दें मुख़्तलिफ जगहों पर हैं।

**तसनीफ़ातः** आप की दो किताबें हैं। (1) बयाज़े अमल व मामूलः यह औराद व वज़ाईफ़ पर मुशतमिल है। (2) आदाबुस सालिकीनः यह तसव्वुफ़ और ज़िक्र व अशग़ाल का मजमुआ है।

**ख़ुलफ़ाः** हज़रत सय्यद आले बरकात उर्फ़ सुथरे मियाँ, हज़रत सय्यद शाह आले हुसैन सच्चे मियाँ, शाह आले रसूल अह़मदी, शाह औलादे रसूल, शाह गुलाम मुहीयुद्दीन अमीर आ़लम, हज़रत पीर बग़दादी, हज़रत सय्यद शाह ख़ैरात अ़ली, शाह अब्दुल मजीद क़ादरी बदायूनी, शाह अब्दुल ह़मीद, मौलान फ़ख़्रूद्दीन, मौलाना गुलाम जीलानी, मुफ़्ती अबुल ह़सन, मौलाना शाह सलामतुल्लाह कशफ़ी अलैहिर्रह़मा वग़ैरह।

आप के ख़ुलफ़ा की तादाद सौ से ज़्यादा है, इख़्तिसार के पेशे नज़र चन्द का ज़िक्र हुआ।

**वसीयतः** विसाल से पहले हुज़ूर शम्से मारहरा ने दो वसीयतें फ़रमाईं। एक अपने मुरीदीन व मुतवस्सिलीन के लिये और दूसरी ख़ास ख़ानदान वालों के लिये।

**ख़ानदान वालों के लिये वसीयतः** ऐ ख़ुदा के बन्दो! अल्लाह तुम सबको सलामत रखे। वालिदे मुह़तरम ने जो वसीयत की उसी को मेरी जानिब से वसीयत समझो, और जहाँ तक हो सके उस पर अ़मल करो। वालिद साह़ब ने फ़रमाया कि अगर कोई अल्लाह वाला नज़र आए, तो उसका दामन हो और तुम्हारा हाथ हो, (उससे फ़ैज़ ह़ासिल करो) लेकिन यह मामला

अब नहीं है। किसी की चर्ब ज़बानी और मीठी बातें देखकर फ़िदा न होना चाहिए। आने जाने वालों की ख़िदमत, मशाइख़ व फ़ुक़रा और उ़लमा वग़ैरह की त़ाज़ीम व तकरीम का ख़्याल करें। इ़ल्म व अ़मल को पेशे नज़र रखें, यही काम है। और मेरी सालाना फ़ातिह़ा में कोई तकल्लुफ़ न करें, सिवाऐ एक प्याले शरबत और एक बासी रोटी के। और मेहमानों की ख़िदमत सच्चे दिल से करें ,क्योंकि जिसने ख़िदमत की उसकी ख़िदमत की गई।

**मुरीदों के लिये वसीयतः** मेरे दीनी भाईयो! जो कुछ वालिद साह़ब ने वसीयत की है, सआ़दत मन्दों को उसी पर अ़मल करना चाहिए। इसलिए कि इस में आक़बत की भलाई है। सात पुश्तों से यह ख़ानदाने बरकातिया ग़ौसे पाक का नमक खा रहा है। लिहाज़ा हमारे मुरीदीन भी ग़ौसे पाक की गुलामी को न छोड़ें, क्योंकि इसी में दोनों जहाँ की सलामती है। ह़नफ़ी मज़हब पर क़ायम रहें, और उलमा व फ़ुक़रा और मसाकीन की ताज़ीम व ख़िदमत की पूरी कोशिश करें, जो कुछ खुश्क़ व तर (रूखा सूखा) ह़ाज़िर हो पूरे वक़ार के साथ उनकी ख़िदमत में पेश कर दें, अगर वो क़बूल करें तो उनके ह़ुसने अख़्लाक़ के ऐतबार से बेहतर है, और दूसरी सूरत में उन पर कोई बदला नहीं है। (विसाल के बाद) ताज़ियत की रसम तीन दिन से ज़्यादा न करें, जैसा कि हमारे ख़ानदान का मामूल है। ह़ुज़ूर ग़ौसुस्सक़लैन के उर्स (ग्यारहवीं शरीफ़) के दिन ग़ौसे पाक की फ़ातिहा के बा़द सवा पाव बताशे पर इस फ़क़ीर को भी फ़ातिहा के ज़रिये याद कर लें, ताकि ह़ुज़ूर ग़ौस पाक की बरकत से इस मौरूसी गुलाम की आक़िबत भी बख़ैर हो जाये।

**सवानेह़ी किताबें:** आप की सवानेह़ पर मुशतमिल बहुत सी किताबें लिखी गईं जिन में से कुछ यह हैं। 1. हिदायतुल मख़्लूक़, यह शाह मुह़म्मद अफ़ज़ल बदायूँनी की लिखी है। 2. आसारे अह़मदी, यह ह़कीम इनायत ह़ुसैन मारहरवी की किताब है। 3. गुलशने अबरार, यह शाह रियज़ुद्दीन सहसवानी की किताब है। 4. और तम्बीहुल मख़्लूक़, यह मौलवी मुजाहिदुद्दीन ज़ाकिर की किताब है।

**विसालः** आप का विसाल 17 रबीउल अव्वल शरीफ़ 1235 हि0 को जुमेरात के दिन हुआ, उस वक़्त आपकी उम्र 75 साल थी। दरगाहे बरकातिया मारहरा शरीफ़ के गुम्बद में ह़ुज़ूर साह़िबुल बरकात के पहलू में आपका मज़ार शरीफ़ है। ★★★

**★ ज्वाइंट सेक्रेटरी, अलबरकात एजुकेशनल सोसायटी, अलीगढ़।**

## मुबारकबाद

जनाब बिलाल अ़हमद बरकाती का इटली की मशहूर युनिवर्सिटी POLITECNICO DI MILANO, MILAN, ITALY के शोबए मास्टर ऑफ़ साइंस इंजीनियरिंग फ़िज़िक्स में दाख़िला होने पर बहुत बहुत मुबारकबाद और दुआऐं, अल्लाह तआ़ला इन्हें मज़ीद तरक़्क़ियों से नवाज़े और दीने इस्लाम का सच्चा ख़ादिम बनाए। (आमीन)

# साहब-ए-उर्से क़ासमी हज़रत सय्यद
# शाह अबुल क़ासिम इस्माईल हसन मारहरवी अलैहिर्रहमा

**पैदाइश व ख़ानदानः** साहबे उर्से क़ासमी हज़रत सय्यद शाह इस्माईल हसन साहब अलैहिर्रहमा की पैदाइश 3 मुहर्रमुलहराम 1272 हि0 को मारहरा शरीफ़ में हुई। आप हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद सादिक अलैहिर्रहमा के बड़े साहबज़ादे हैं। वालिदा माजिदा हज़रत सय्यदा सकीना बेगम, हज़रत सय्यद शाह गुलाम मुहियुद्दीन अमीर आलम अलैहिर्रहमा की साहबज़ादी थीं। ख़ातमुल अकाबिर हज़रत सय्यद शाह आले रसूल अहमदी अलैहिर्रहमा ने कुन्नियत ''अबुल क़ासिम'' और लक़ब ''शाह जी'' अता फ़रमाया, और नाना जान सय्यद शाह गुलाम मुहियुद्दीन अमीर आलम अलैहिर्रहमा ने आप का नाम ''इस्माईल हसन'' रखा।

**शख़्सियतः** हज़रत वाला का क़द लम्बा, रंग गन्दुमी (गोरा) मगर सुर्ख़ी माइल था। नाक बहुत सीधी व पतली, मोती जैसे खुबसूरत जड़े हुये दाँत, और पुर नूर चेहरे के मालिक थे। तीर अन्दाज़ी, घोड़सवारी, तलवार बाज़ी और तैराकी में बड़े माहिर थे। हज़रत शाह जी मियाँ बड़े बहादुर, अक़लमन्द बे ख़ौफ़, हक़ पसन्द, हक़ गो, ग़र्ज़ कि कमालाते असलाफ़ के जामेअ़ थे। इबादत व रियाज़त, तसर्रूफ़ व हुकूमत, सख़ावत व शजाअत (बहादुरी), शरीअत व तरीक़त सब में अपने बुज़ुर्गों की सीरते मुबारका के मज़हर और ख़ानवादा–ए–बरकातिया की पुरानी रिवायात के सच्चे अमीन थे।

**तालीमः** हज़रत वाला ने मौलवी अब्दुश्शकूर साहब, मौलवी मुहम्मद अली साहब, मौलवी मुहम्मद हसन साहब, हज़रत ताजुल फ़ुहूल मौलाना शाह अब्दुल क़ादिर बदायूँनी साहब, और मौलाना फ़ज़लुल्लाह साहब फ़िरंगी महल्ली रहमतुल्लाहि अलैहिम अजमईन से इल्मे दीन मुकम्मल फ़रमाया, और मामूलाते ख़ानदान की तालीम अपने वालिद माजिद, हज़रत ख़ातमुल अकाबिर, हज़रत नूरी मियाँ साहब और हज़रत ताजुल फ़ूहुल बदायूँनी कुद्दिसत असरारूहुम से हासिल की।

**बैअत व ख़िलाफ़तः** हज़रत शाह जी मियाँ को बैअत व ख़िलाफ़त अपने नाना हज़रत सय्यद शाह गुलाम मुहियुद्दीन अलैहिर्रहमा से हासिल थी।

**अक़्दे मसनून व औलादः** आपका अक़्दे मसनून (शादी) आपके हक़ीक़ी मामू हज़रत सय्यद शाह नूरूल मुस्तफ़ा इब्ने हज़रत सय्यद शाह गुलाम मुहियुद्दीन की छोटी साहबज़ादी सय्यदा ज़हूर फ़ातिमा से हुआ, जिनके बतन से दो साहबज़ादे, हज़रत सय्यद शाह गुलाम मुहियुद्दीन फ़क़ीर आलम अलैहिर्रहमा और हज़रत ताजुल उलमा सय्यद शाह औलादे रसूल मुहम्मद मियाँ अलैहिर्रहमा और चार साहबज़ादियाँ पैदा हुईं।

**ख़िदमातः** आपके फ़ज़ाइल व कमालात के हवाले से तज़किरा–ए–नूरी के मुसन्निफ़ फ़रमाते हैं कि ''हुज़ूर साहबज़ादा इस्माईल हसन साहब अपने अकाबिर से निस्बते ज़ाहिरी रखते हैं और फ़ज़ाइले ख़ानदानी को जमा करना चाहते हैं। आप ख़ानदाने बरकातिया की हर मख़्सूस चीज़ के बड़े मुहाफ़िज़ और अज़ीज़ रखने वाले हैं।'' हज़रत शाह जी मियाँ ख़ानवादा–ए–बरकातिया के उन माया–ए–नाज़ फ़रज़ंदों में शुमार किये जाते हैं जिन की मुसलसल कोशिशों से ख़ानवादे की इल्मी रिवायात और ख़ानवादे की अज़मतों में चार चाँद लगे हैं।

इस सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए तारीख़े ख़ानदाने बरकात के मुसन्निफ़ हज़रत ताजुल उलमा अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैंः ''हज़रत वाला ने अपने अज़ीज़ो अक़ारिब को क़ौलन व अमलन तहसीले इल्मे दीन व तकमीले अहकामे शरअ मतीन की तरग़ीब दी, खुद अपने ज़ौक़ व शौक़ से इल्म हासिल किया और अपने बुज़ुर्गों के पसन्दीदा तरीक़ों पर अमल किया। अपने भाई, आल व औलाद को पढ़ाया लिखाया, और बराहे रास्त अपने बुज़ुर्गों के रास्ते पर अपने बाद आने वालों को चलाने के लिये बहुत कोशिश फ़रमायी। इस वजह से आप को अहल जानकर ख़ानदान के बुज़ुर्गों ने बहुत से तबर्रूकात और नायाब चीजें ख़ुद अता फ़रमायीं और दूसरों से भी दिलवाया। आपने अपने ख़ानवादे में तालीमी, तामीरी, इल्मी और तहरीरी ख़िदमात के अलावा एक और बड़ा कारनामा अंजाम दिया, और वह है अपने अकाबिरे किराम अलैहिमुर्रहमा की तसानीफ़ की हिफ़ाज़त और नायाब किताबों और मख़्तूतात को जमा करना, जो हज़रत मुजद्दिदे बरकातियत की बेहतरीन कोशिशों का नतीजा हैं। यही वो ख़िदमात और औसाफ़े हमीदा हैं जिनकी वजह से हज़रत वाला को ''मुजद्दिदे बरकातियत'' से ताबीर किया जाता है।

हज़रत शाह जी मियाँ अलैहिर्रहमा 1355 हि0 में ज़ियारते हरमैन शरीफ़ैन से मुशर्रफ़ हुए।

आप की सीरते मुबारका का एक बड़ा दिलचस्प पहलू यह है कि आपने अपने ज़ौक़ व शौक़ से 30 साल की उम्र में कुरआन पाक हिफ़्ज़ किया। हज़रत के वालिद माजिद सय्यद शाह मुहम्मद सादिक़ अलैहिर्रहमा ने अपने बेटे के हाफ़िज़े कुरआन होने की खुशी में सीतापुर में एक आलीशान मस्जिद तामीर फ़रमाई।

हज़रत वाला आख़िरी वक़्त तक अपने बुज़ुर्गों के नक़्शे क़दम पर चलते रहे और दूसरों को भी सिराते मुस्तक़ीम से भटकने नहीं दिया।

हज़रत सय्यद शाह इस्माईल हसन साहब अलैहिर्रहमा अपने वालिद माजिद के विसाल के बाद सज्जादा–ए–बरकातिया पर जलवा अफ़रोज़ हुए, और आख़िरी वक़्त तक मस्नदे ग़ौसिया बरकातिया से आलमे इस्लाम को क़ादरी बरकाती जाम पिलाया और अपनी दुआओं, तावीज़ात और सच्ची सीधी रहनुमाइयों और शफ़ीक़ाना ग़म गुसारियों से ख़ल्क़े खुदा के दर्द व ग़म का मदावा पेश किया''।

आप अपने असलाफ़े किराम के नक़्शे क़दम पर चलते हुये इल्मे मारेफ़त के प्यासों को शरीअत व तरीक़त के असरार बताते रहे, और

भटके हुओं को सिराते मुस्तक़ीम पर क़ायम रहने की तलक़ीन फ़रमाते रहे। हज़रत शाह जी मियाँ ने दीन व इल्म की मुख़्तलिफ़ ख़िदमात अंजाम दीं। तदरीस, तब्लीग़, तस्नीफ़, इरशाद व हिदायत और ख़िदमते ख़ल्क़ सभी शोबे आपकी तवज्जुह से सरफ़राज़ हुये। तदरीस का सिलसिला अपने ख़ानक़ाही मदरसे में जारी किया। तब्लीग़ के लिये दूर दराज़ इलाक़ों में तशरीफ़ ले गये। मस्नदे ग़ौसिया बरकातिया से आ़लमे इस्लाम को क़ादरी बरकाती जाम पिलाया, और अपनी दुआ़ओं, त़ावीज़ात और सच्ची सीधी राह़नुमाईयों और शफ़ीक़ाना ग़म गुसारियों से ख़ल्क़े खुदा के दर्द व ग़म का मदावा पेश किया''।

**तसनीफ़ातः** आपको तसनीफ़ी शोहरत से दिलचस्पी नहीं थी फिर भी वक़्त की ज़रूरतों के पेशे नज़र कई अहम किताबें लिखीं, जो आपके जज़्बा–ए–ह़क़ पसन्दी और इल्मी सलाहियत को ज़ाहिर करती हैं। आपकी तस़ानीफ़ में मजमुआ़ सलासिले मंजूम, रसाइले आ़माल व तक्सीर, रिसाला रद्दुल क़ज़ा मिनद्दुआ़ फ़ी आ़माले दफ़इल वबा, मुफ़ावज़ाते तय्येबा, गुलदस्ता–ए–चमनिस्ताने सुन्नियत, वगैरह बहुत मशहूर हैं।

हज़रत वाला को शायरी में भी दिलचस्पी थी। ''वक़ार'' तख़ल्लुस फ़रमाते थे। नमूने के त़ौर पर हम यहाँ उनके फ़ारसी कलाम से दो शेर लिख रहें हैं।

**मिसले मक्का शुदा मारहरा मक़ामे बरकात**
**शोहरते याफ़्त चूँ तैबा ज़ क़यामे बरकात**

**दरगहश गश्त मत़ाफ़े उरफ़ा व कोमला**
**कुदसियाँ ख़म पये त़ाज़ीम व सलामे बरकात**

**विसाल मुबारकः** हज़रत शाह जी मियाँ साह़ब का विसाल मुबारक एकुम सफ़र 1347 हि0 को मारहरा शरीफ़ में हुआ, दरगाहे बरकातिया मारहरा शरीफ़ आख़िरी आराम गाह बनी, जहाँ से आज तक उनके फ़ैज़ का दरिया बह रहा है।

हज़रत शाह जी मियाँ अलैहिर्रह़मा ने अपनी ज़ाहिरी ज़िन्दगी में अपने ह़क़ीक़ी नवासे हज़रत अह़सनुल उ़लमा सय्यद शाह मुस्तफ़ा ह़ैदर ह़सन मियाँ अलैहिर्रह़मा को अपना जा नशीन व सज्जादा नशीन मुक़र्रर फ़रमाया। जिन्होंने 54 साल तक सज्जादा–ए–बरकातिया को रौनक़ बख़्शी। उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में बिरादरे कबीर हज़रत अमीने मिल्लत दामा जिल्लुहू को अपना जा नशीन बनाया जो अलह़म्दुलिल्लाह आज तक ज़ेबे सज्जादा हैं। अल्लाह तआ़ला उनकी सेहत व उम्र में बरकत अ़ता फ़रमाए और उनका साया हम पर ता देर क़ायम रखे। (आमीन) ★★★

★ **सज्जादा नशीन, ख़ानक़ाहे बरकातिया, मारहरा शरीफ़।**

## सरकार की आमद मरहबा

**आलमे इस्लाम के तमाम ख़ुश अक़ीदा मुसलमानों को ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पुर ख़ुलूस मुबारकबाद। (इदारा)**

आलिमा फ़रहाना तबस्सुम ★

# सय्यदा महबूब फ़ातिमा नक़्वी क़ुद्दिसत सिर्रुहा
## कुछ यादें कुछ बातें

ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा शरीफ़ पिछले तीन सौ सालों से ज़्यादा अ़र्से से हिन्दुस्तान में अपने फ़ुयूज़ व बरकात की झमाझम बारिशें बरसा रही है। इस ख़ानवादे के छोटों से लेकर बड़ों तक सब ख़ुदा से डरने वाले, शरीफ और इंसान दोस्त रहे हैं। यहाँ के बुज़ुर्ग हमेशा इंसानियत की ख़िदमात में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते रहे। इल्म दोस्ती और तालीम के फ़रोग़ (फैलाने) में इस ख़ानक़ाह का नाम ख़ास तौर से क़ाबिले ज़िक्र है, जिसकी जीती जागती मिसाल ''जामिया अलबरकात अ़लीगढ़'' का वह इदारा है, जहाँ दीनी और दुनियावी दोनों त़ालीम का बेहतरीन इन्तज़ाम है। इस ख़ानवादे की एक अ़ज़ीम ख़ातून, हुज़ूर अह़सनुल उ़लमा की शरीके ह़यात (बीवी), हज़रत अमीने मिल्लत साह़ब की वालिदा और हम सब की पीरानी माँ, ख़ानक़ाहे बरकातिया की एक अज़ीम हस्ती मरहूमा मख़्दूमा व मुशफिक़ा हज़रत सय्यदा मह़बूब फ़ातिमा नक़्वी क़ुद्दिसत सिर्रुहा थीं, जिनकी इल्मी सलाहियतों, अख़लाक़े करीमाना व मिज़ाजे शरीफ़ाना का चर्चा आज तक है। उनकी दासताने ज़िन्दगी को पढ़कर ऐसा मालूम होता है कि शायद ऐसी बुलन्द हिम्मत, बा वक़ार और बुलन्द ह़ौसला रखने वाली माँओं ही के लिये डॉ0 मुह़म्मद इक़बाल ने लिखा है।

**तरबियत से तेरी मैं अन्जुम का हम क़िस्मत हुआ**
**दफ़्तरे ह़स्ती में थी जर्रीं वरक़ तेरी ह़यात**
**घर मेरे अजदाद का सरमाया–ए–इ़ज़्ज़त हुआ।**
**थी सरापा दीन व दुनिया का सबक़ तेरी ह़यात।**

मरहूमा मह़बूब फ़ातिमा नक़्वी साह़िबा की पैदाइश बदायूँ शरीफ़ में हुई। आप सीतापुर के नक़्वी सादात के एक मुअ़ज़्ज़ज़ व मुह़तरम घराने की बेटी थीं। आप के वालिदे गिरामी सय्यद मुह़म्मद इसह़ाक़ नक़्वी और वालिदा सय्यदा बीबी कनीज़ ज़ैनब बेगम जाफ़री थीं। आपके वालिद पुलिस के मह़कमे में मुलाज़िम थे, यही वजह थी कि उन दिनों जबकि बच्चियों की त़ालीम की तरफ़ लोगों की रग़बत बहुत कम होती थी, आपको बेहतरीन त़ालीम दी गई।

आप के वालिद साह़ब एक जहाँदीदा आदमी थे। कुरआ़ने मजीद की त़ालीम आपको वालिदा साह़िबा से ह़ासिल हुई, और स्कूली त़ालीम मक़ामी निसवाँ स्कूल में दिलाई गई। आप उर्दू, फ़ारसी, अ़रबी ज़बानें अच्छी तरह जानती थीं, और अंग्रेज़ी ज़बान की भी जानकारी थी।

21 जनवरी सन् 1949 ई0 में आप का अ़क्दे मसनून हिन्दुस्तान की मशहूर व मअ़रूफ ख़ानक़ाह, ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा शरीफ़ के चश्मो चिराग़ हज़रत अह़सनुल उ़लमा सय्यद ह़सन ह़ैदर अलैहिर्रह़मा से हुआ, और आप मारहरा आ गयीं।

आपके मायके और ससुराल के माह़ौल में बहुत फर्क़ था। यहाँ तक कि रहन–सहन, बोल–चाल, सब अलग था, इसके बावजूद आपने

अपने हुस्ने सुलूक और मुहब्बत व शफ़्क़त से अपने, बेगाने, अहले कुंबा, और अहले सिलसिला सबको अपना गिरवीदा बना लिया।

अल्लाह तआ़ला ने आपको औलाद की नेअ़मतों से भी सरफ़राज़ फ़रमाया। आपने अपने बच्चों की त़ालीम व तरबियत बहुत ही आ़ला पैमाने पर की। अल्हम्दुलिल्लाह सुम्मा अल्हम्दुलिल्लाह आज आपके सभी बच्चे आ़ला ओहदों पर फ़ाइज़ हैं, और साथ ही साथ बड़ी–बड़ी मशहूर व माअ़रूफ़ हस्तियों में शामिल हैं। आप के गुलशन में जो फूल खिले वो सिर्फ़ हिन्दुस्तान को ही नहीं बल्कि दूसरे मुल्कों को भी महका रहे हैं।

आप बहुत दूर अन्देश (दूर की सोच रखने वाली) ख़ातून थीं। आप हमेशा बच्चों को इस बात की नसीह़त करती रहती थीं कि ''बच्चो! पढ़ लिख कर रोज़ी रोटी का बेहतरीन ज़रिया तलाश कर लेना।''

आपको शायरी से बहुत दिलचस्पी थी। बहुत से अशआ़र आप को ज़बानी याद थे, और खुद भी शायरी करती थीं। आपसे मेरी पहली मुलाक़ात ''अलबरकात मह़बूब फ़ातिमा गर्ल्स हॉस्टल'' में हुई, उस वक़्त आप देखने में बहुत ज़ईफ (बूढ़ी) व कमज़ोर लगती थीं। मगर जज़्बे व हौसले में कोई कमी नहीं थी। हॉस्टल की बच्चियाँ आपके आस–पास बैठ जातीं और आप बहुत ख़ुश होतीं, तो उन्हें अशआ़र सुनातीं। हॉस्टल में कई मर्तबा मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल हुआ। कुछ खाने पीने की चीजें साथ में लेकर आतीं, और बच्चियों में बाँट देतीं। एक मर्तबा मैंने कहा कि दादी जान आपका बहुत–बहुत शुक्रिया कि आप इतनी कमज़ोरी के बावजूद यहाँ तशरीफ़ लाती हैं, और हम लोगों को मुलाक़ात का मौक़ा देती हैं। कहने लगीं: बेटा हमारा जिस्म तो बूढ़ा हो गया है मगर हिम्मत और ह़ौस़ले अब भी जवाँ हैं। आप से बात करते वक़्त आपकी इल्मी सलाह़ियत और बुलन्द ह़ौस़ले का एह़सास होता था। आपकी बातें नसीह़तों से भरी होती थीं।

आप बहुत अच्छी आ़दत की मलिका थीं, ग़रीबों मुह़ताजों का बहुत ख़्याल रखती थीं। आम त़ौर पर आप अपना माल व दौलत, रूपया पैसा ग़रीबों और ज़रूरत मन्दों में ख़र्च कर देती थीं।

ग़रीब बच्चियों की शादी कराना, ग़रीब बच्चों को तालीम दिलवाना, ग़रीबों का मकान और घर तामीर करवाना, सर्दियों के दिनों में लेह़ाफ़, कम्बल और गरम कपड़े बाँटना, ग़रीब बीमारों का इलाज कराना, यह सब अच्छे काम आपकी आदतों में शामिल थे।

28 मुह़र्रमुलह़राम 1432 हि0 मुताबिक़ 4 जनवरी 2011 ई0 को आपका इन्तिक़ाल हुआ। और दरगाहे बरकातिया में दफ़न हुईं। अल्लाह तआ़ला आपकी कब्र पर रह़मत व नूर की बारिशें बरसाये। (आमीन) ★★★

**★ शोबा–ए–दीनियात, अलबरकात क़ादरिया गर्ल्स सेक्शन, अलीगढ़।**

सय्यद मुहम्मद अशरफ़ क़ादरी बरकाती ★

# हमदे बारी तआ़ला

ख़ुदा–ए–बरतर की बारगाहे अ़ज़ीम में सर झुका रहा हूँ
उसी ने ख़ुरशीद को चमक दे के सारी दुनिया को जगमगाया
उसी ने तारों को रोशनी दी, फ़लक की मेहराब पर सजाया
और आसमाँ की दुलहन के माथे पे झूमर एक चाँद का लगाया
रोपहले बादल के आँचलों से उरूसे गीती का रूख़ सजाया
ज़मीं के सीने पे सब्ज़ा जारों का जिसने बिस्तर हसीं लगाया

उसी ख़ुदाऐ जमील की बारगाह में सर झुका रहा हूँ
ख़ुदा–ए–बरतर की बारगाहे अ़ज़ीम में सर झुका रहा हूँ

वह जिसने दरिया को दी रवानी, पहाड़ को जिसने दी सलाबत
वह जिसने नीले समुद्रों के अथाह पानी को दी है वस्अ़त
वह जिसने माओं को मामता दी वह जिसने बापों को दी है शफ़्क़त
वह जिसने दुश्मन को दी अ़दावत तो दोस्तों को अदाऐ उलफ़त
अमीर को जिसने दी इमारत, ग़रीब को जिसने दी क़नाअ़त

उसी ख़ुदाऐ ग़नी की सरकार में यह नग़मे सुना रहा हूँ
ख़ुदा–ए–बरतर की बारगाहे अ़ज़ीम में सर झुका रहा हूँ

वह जिसने सरकारे मुस्तफ़ा को रसूले आख़िर की शक्ल भेजा
सरापा रहमत, वह प्यारी सूरत, किसी ने जिसका न भेद समझा
ज़मीं पे जिसको रसूल कर के ज़मीन का मर्तबा बढ़ाया
ज़मीन वह जिस पे है मदीना की जिस पे जन्नत को रश्क आया
वह जिसने मेरे रसूले उम्मी को इल्मे ग़ारे हिरा सिखाया

उसी ख़ुदाऐ अ़लीम की बारगाह में सर झुका रहा हूँ
ख़ुदा–ए–बरतर की बारगाहे अ़ज़ीम में सर झुका रहा हूँ

★★★

# मुह़म्मद ﷺ आबरूऐ मोमिनाँ हैं।

## हुज़ूर अह़सनुल उ़लमा सय्यद शाह मुस्तफ़ा ह़ैदर ह़सन मियाँ अलैर्हिरह़मा

मुह़म्मद आबरूऐ मोमिनाँ हैं। मुह़म्मद बादशाहे मुरसलाँ हैं।
मुह़म्मद शरह़े आयाते इलाही किताबे रत्बो याबिस का बयाँ हैं।

खुदा की अज़मतो कुदरत के जलवे रूख़े पुरनूर से उनके अ़याँ हैं।
उन्हीं के जलवे ज़ाहिर हर मकाँ में यही नौशाहे बज़मे ला मकाँ हैं।

खुदा ने अर्श पर जिनको बुलाया यही तो वह मुअ़ज़्ज़ मेहमाँ हैं।
हर एक दिल में बसी है उनकी खुशबू गुलिस्तानों की ये रूहे रवाँ हैं।

जो संगरेज़े हुजूरी में हैं ह़ाज़िर वो रश्के लालो याकूते जिनाँ हैं।
है पैदाइश उन्हीं की असले आलम यही बेशक बिनाए ईं व आँ हैं।

उन्हीं के दम से है सारी खुदाई यही तो रौनक़े बज़्मे जहाँ हैं।
अ़ताओं कुदरतों पर उनकी शाहिद अह़ादीस और कुरआँ के बयाँ हैं।

नहीं है मर्तबा ऐसा किसी का खुदा वाले ही उनके रूतबा दाँ हैं।
मुह़ब्बत उनकी है ईमाने मोमिन कि बस ईमान की भी ये ही जाँ हैं।

लगाऐंगे हमारा पार बेड़ा यही तो चारा–ए–दर्दे नेहाँ हैं।
मुह़िब उनका चहीता है खुदा का यह मह़बूबे खुदाए दो जहाँ हैं।

ह़सन सुन! ह़ातिफ़े ग़ैबी पुकारा ब फ़ज़ले रब वो तुझ पर मेहरबाँ हैं।

★★★

# सलाम ब हुज़ूर इमामे आ़ली मक़ाम

अज़ः सय्यदुल उ़लमा सय्यद शाह

## आले मुस्तफ़ा सय्यद मियाँ मारहरवी अलैहिर्रह़मा

सय्यदना इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के यौमे शहादत की मुनासिबत से इस मनक़बत को शामिले इशाअ़त किया जा रहा है। (इदारा)

तुम्हारे सज्दे को का'बा सलाम कहता है,
जलाले कुब्बा–ए–ख़ज़रा सलमा कहता है,
चमन का हर गुलो गुन्चा सलाम कहता है,
हुसैन तुमको ज़माना सलाम कहता है।

चिराग़ो मस्जिदो मिम्बर सलाम कहते हैं,
नबी रसूल पयम्बर सलाम कहते हैं,
अ़ली व फ़ातिमा शब्बर सलाम कहते हैं,
ख़ुदा गवाह कि नाना सलाम कहता है।

ख़ुदा की राह में सर को कटा दिया तुमने,
नबी के दीन पे घर को लुटा दिया तुमने,
निशाने कुफ़्र को यक्सर मिटा दिया तुमने,
तुम्हे ख़ुदा भी तुम्हारा सलाम कहता है।

सना तुम्हारी वज़िफ़ा है मेरा आबाई,
तुम्हारी मदह तो शेवा है मेरा मौलाई,
बस एक नज़र हो जो मुझ पर तो मेरी बन आई,
तुम्हारा सय्यदे शैदा सलाम कहता है।

★★★

डॉ0 मुहम्मद अफ़ज़ाल बरकाती ★

तिब व सेहत

# सही डॉक्टर कैसे चुनें?

मरवज़ी, इब्ने अबिद्दुनिया और अबूश्शेख़ ने जाबिर बिन ज़ैद से रिवायत की कि मलकुल मौत (रूह निकालने वाला फ़रिश्ता) पहले लोगों को बिना किसी दर्द व मर्ज़ के वफ़ात देते थे तो लोग उनको ला'नतें भेजते और गालियाँ देते थे। चुनाँचे आपने बारग़ाहे ख़ुदा वन्दी में शिकवा किया, तो अल्लाह तआ़ला ने अमराज़ (बीमारियों) को पैदा फ़रमाया। अब लोग कहते हैं कि यह शख़्स इस बीमारी की वजह से मर गया। मलकुल मौत का नाम कोई नहीं लेता। (शरहुस्सुदूर उर्दू मुर्तजम)

अगर कोई बीमार है और बीमारी उसके पेट में है तो वह मेदा, आँत या जिगर व पित्ता के मर्ज़ में मुब्तला है। अगर कोई फ़ालिज का मरीज़ है तो उसे Cerebro Vascular Disease लाहिक है हाई ब्लड प्रेशर और दिल के दौरा वाला मरीज Cardio Vascular (सिस्टम वाला मरीज़) कहलाएगा। इसी तरह़ दमा, पुरानी ख़ाँसी और साँस लेने में तकलीफ़ अगर किसी को है तो उसे Respiratory Disease (सांस की बीमारी) वाला मरीज़ कहा जायेगा। पेशाब में रूकावट, गुर्दा का दर्द, पेशाब के गुदूद का बढ़ जाना, नामर्दी जैसे अमराज़ को पेशाब की बीमारी कहा जायेगा। चेहरे पर सूजन, पैरों में सूजन, पेशाब की मिक़दार घट जाने को अमराज़े गुर्दा कहा जाता है। हड्डी और जोड़ों में दर्द या सूजन को Orthopedic बीमारी कहेंगे।

बीमारियों की दर्जनों क़िस्में हैं। कुछ बीमारियाँ आनन फ़ानन (अचानक) आती हैं और मरीज़ को ख़तरे में डाल देती हैं, उन पर खर्च भी ज़्यादा होता है, और मरीज़ की जान को भी ज़्यादा ख़तरा बढ़ जाता है। इन बीमारियों को गंभीर बीमारियाँ कहा जाता है। मसलन दिल का दौरा पड़ना, नब्ज़ गायब हो जाना, दिल का कम या ज़्यादा धड़कना, और दिल से निकलने वाली खून की बड़ी नली का अचानक फट जाना वग़ैरह। अगर ऐसा हादसा पेश आ जाऐ तो मरीज़ को बड़े सुपर स्पेशियालटी अस्पताल या मेडिकल कॉलेज हॉस्पीटल की जानिब रवाना कर देना चाहिए। आज कल शहरों और देहातों में ऐम्बूलेंस मरीज़ों के लिये तैयार खड़ी रहती हैं, उन्हें फ़ोन करके बुलाया जा सकता है।

जबकि कुछ बीमारियाँ धीरे–धीरे चलती हैं। उनसे मरीज़ को फ़ौरन ख़तरा तो नहीं रहता है, मगर आगे ख़तरा बना रहता है। इन बीमारियों पर धीरे–धीरे पैसा खर्च होता चला जाता है, इन्हें पुरानी बीमारी कहते हैं। शुगर, हाई ब्लड प्रेशर, पुरानी खाँसी, साँस और हड्डी के जोड़ों के मर्ज़ इसमे शामिल हैं। हमारे मुल्क में इस तरह के मरीज़ों की बड़ी तादाद अपने फ़ैमली डॉक्टर से सलाह व इलाज लेती है। ऐसे मरीज़ों को कभी–कभी बड़े डॉक्टरों को भी दिखाना चाहिए।

मौसमी बीमारियाँ जैसे वायरल बुख़ार, पेचिश, फ्लू और डेंगू जैसी बीमारियाँ इनमें जब तक कोई ख़ास बात न हो अपने फ़ैमली डॉक्टर ही से सलाह और इलाज लेना चाहिए।

इस मुख़्तसर मालूमात के बाद हम असल मौजू की तरफ़ लौटते हैं कि आख़िर हम सही डॉक्टर कैसे चुनें? हमारे मुल्क में एलोपैथी डाक्टर तीन तरह के मिलते हैं। 1. आला तरीन इल्म रखने वाले बहुत ज़्यादा पढ़े लिखे यूनिवर्सिटी के डॉक्टर्स, 2. आला इल्म रखने वाले डॉक्टर्स 3. आला इल्म वाले डॉक्टरों से मुशाबहत रखने वाले डॉक्टर्स जो किसी न किसी यूनिवर्सिटी से फ़ारिग़ ज़रूर होते हैं। ग़रीबी की वजह से ज़्यादा तर मुसलमान तीसरी क़िस्म के डॉक्टरों से इलाज लेने पर मजबूर हैं।

एक अच्छा डॉक्टर एक नरम दिल इंसान भी होता है। अच्छे डॉक्टर की पहचान यह है कि वह मरीज़ की शिकायतों को बहुत सब्र व तवज्जोह से सुने, फिर उसको ग़ौर से जाँचे, और उसकी रिपोर्ट और जाँचें देखे। अब मरीज़ से सवालात पूछे और फिर किसी माकूल तशख़ीस (नतीजे) पर पहुँचे और आख़िर में इलाज व परहेज़ तजवीज़ करे। यह सारी मन्ज़िलें अलग अलग हैं। इनमें से किसी भी मन्ज़िल में डॉक्टर की जल्दबाज़ी मरीज़ को नुक़सान पहुँचा सकती है। एक अच्छे डॉक्टर से हमें हमदर्दी और नेक ऐहसासात की उम्मीद रखनी चाहिए।

हर दवा हमारे जिस्म में एक अजनबी की तरह कुछ वक़्त ठहर कर बाहर निकलने का रास्ता तलाश करती है, और आम तौर पर गुर्दे या जिगर के रास्ते से गुज़रती हुई पेशाब या पख़ाना के साथ बाहर निकल जाती है। गुर्दे या जिगर जब फ़ेल हो जाते हैं तो दवा जिस्म में रूकने लगती है। और हमें नुक़सान पहुँचाती है। बहुत सी दवाऐं गुर्दों और जिगर के लिये खुद ब खुद ज़हरीली होती है और बदन के अन्दर दाख़िल होकर हालत को और ज़्यादा बिगाड़ देती हैं। हासिले गुफ्तगू यह है कि अक्सर मरीज़ों में शूगर बढ़ी होने के साथ ब्लड प्रेशर भी बराबर बढ़ा हुआ रहने कि वजह से गुर्दे फ़ेल हो जाते हैं। इसलिए हमें ऐसे मरीज़ों को सिर्फ़ आला तरीन या आला इल्म वाले डॉक्टरों को ही दिखाना चाहिए। इसी तरह तक़रीबन हर दवा का मामला जिगर से पड़ता है। लिहाज़ा हमें चाहिए कि जिगर की असल बीमारी वाले मरीज़ों को उस मर्ज़ के खुसूसी डॉक्टर को ही दिखाऐं और उनसे मरीज़ को आम बीमारी होने पर दी जाने वाली ममनूआ दवाओं की फिहरिस्त हासिल करें ताकि हालत ज़्यादा न बिगड़ने पाये। इसी तरह कैंसर की शुरूआती पहचान आला तरीन इल्म वालों के पास है।

हमारे मुस्लिम समाज में दो तरह के मरीज़ घाटे में रहते हैं, 1. नफ़सियाती मरीज़ और 2. वो कुँवारी लड़कियाँ जिन्हें औरतों की मख़सूस बीमारियाँ हो जाती हैं। याद रखें काम काज या पढ़ाई में दिलचस्पी ग़ायब हो जाना, हमेशा उदास या मायूस रहना, बहुत ज़्यादा सोते रहना, या बहुत ही कम नींद आना, और बार–बार मौत की तमन्ना करते रहने वाले नफ़सियाती मरीज़ कहलाते हैं। ऐसे मरीज़ों को जल्द ही अच्छे और माहिरे नफ़सियात को दिखाऐं। इसी तरह कुँवारी

लड़कियों के पेडू में दर्द, महवारी ज़्यादा या कम होना और बाज़ खुसूसी शिकायतों में मुबतला होने पर दाई से सलाह ली जाती है। ऐसा न करें बल्कि माहिरे निसवाँ डॉक्टर को दिखायें।

मरीज़ों का एक और ऐसा बड़ा तबक़ा है जो खुद अपने आप पर जुल्म करता रहता है। यह है नामर्दी के मर्ज़ में मुबतला रहने वाला तबक़ा। हमारे यहाँ जिगर के पुराने मरीज़, शुगर के पुराने मरीज़ और नफ़सियाती मरीज़ डिप्रेशन के पुराने मरीज़ नामर्दी के मर्ज़ में घिरे रहते हैं, और अपना मर्ज़ अपने फ़ैमली डॉक्टर से भी छुपाते हैं। दवाएँ ख़रीद कर खाते रहते हैं। बाज़ दवाऐं दिल का दौरा लाती हैं, और मौत का सबब बन जाती हैं, ऐसे तमाम मरीज़ों को उन ख़ास तरह के डॉक्टरों से मिलना चाहिए जिन्हें यूरोलोजिस्ट कहते हैं।

निसवानी चेहरे को हुस्न अता करने में दाँतों का रोल अहम है। दाँतों को क़तार में रखने और उनके दरमियान ख़ला को भरने के लिये अच्छे डेन्टल सरजन (दाँत के डॉक्टर) से सलाह लेनी चाहिए जो दाँतों को तार से कस कर खूबसूरत बनाते हैं। मर्दाना हुस्न को भी अच्छे दाँत तक़वियत देते हैं। आक़ा–ए–रहमत की सीरते पाक में हम जहाँ आपके हसीन व जमील चेहरे के बारे में पढ़ते हैं। वहाँ आपके खूबसूरत दनदाने मुबारक (दाँतों) का ज़िक्र भी मिलता है।

मिर्गी और पीलिया के मरीज़ों के साथ ज़्यादती की जाती है। उन्हें तमाम ना खुशगवार हालात से गुज़ारा जाता है। लिहाज़ा जल्द से जल्द किसी माहिर को दिखाना चाहिए।

अच्छे डॉक्टर अच्छी कम्पनियों की दवाएँ देते हैं, और लालची डॉक्टर न मालूम और आम दवाएँ लिखते हैं कि उसमें उनकी ज़बरदस्त आमदनी होती है। इसी तरह आज कल बहुत से जाँच करने वाले लैब खुल गये हैं, उन लैब्स पर अगर कोई डॉक्टर किसी मरीज़ को भेजता है तो उसे रूपया मिलता है, जो मरीज़ की जेब से निकाला जाता है। ऐसे डॉक्टरों से दूर रहना चाहिए।

मरीज़ को डॉक्टर से मिलने के औक़ात (समय) की पाबन्दी करनी चाहिए। अगर मुलाक़ात आज मुमकिन नहीं तो कल मिलने का इन्तज़ार करना चाहिए। ऐसा डॉक्टर जो ज़रूरत से ज़्यादा मरीज़ देखता है वह मरीज़ों के साथ इंसाफ़ नहीं कर सकता। थका हुआ ज़ेहन और थका जिस्म सही फैसला लेने की क़ुदरत नहीं रखता, जबकि एक अच्छा डॉक्टर एक ही वक़्त में पुलिस ऑफीसर भी है, क़ानून दाँ भी है और जज भी है जिसे अपना सही फ़ैसला अभी देना है।

★★★

★ **मेडिकल चेम्बर, पक्का बाग़ इटावा, यूपी।**

## मुबारकबाद

मुहम्मद अतहर नूर बरकाती को अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के कॉमर्स विभाग के पी. एच. डी. प्रवेश परीक्षा में कामयाब होने पर **''बरकत नामा''** की तरफ़ से बहुत–बहुत मुबारकबाद और दुआऐं अल्लाह तआला इन्हें मज़ीद तरक़्क़ियों से नवाज़े और दीन की ख़ूब–ख़ूब ख़िदमत ले। आमीन **(इदारा)**

हाफ़िज़ मुहम्मद राशिद बरकाती ★

बच्चों का कॉलम

# बड़ों का बचपन

## बुत शिकन

**बच्चो!** मैं तुम्हें एक प्यारी कहानी सुनाता हूँ। मक्का शहर से दूर पहाड़ों के बीच में एक बूढ़ा आदमी रहता था। उसने वहाँ एक मन्दिर बनाया था, और एक पत्थर की मूर्ति भी। वह रोज़ाना सुबह को उठने के बाद पहले नहाता था, और फिर उस मूर्ति की पूजा करता था। एक दिन वह मन्दिर से निकल कर मक्का जाने वाले रास्ते पर पहुँचा, उसने देखा एक औरत बहुत परेशान है, और पहाड़ों के दरमियान कोई चीज़ ढूँढ़ रही है। यह आदमी उस औरत के पास पहुँचा और उससे पूछा ''बेटी! तुम बहुत परेशान लग रही हो। शायद तुम्हारी कोई चीज़ गायब हो गयी है? मुझे भी बताओ ताकि तुम्हारी कोई मदद करूँ''। औरत बोली ''बड़े मियाँ! मैं यहाँ अपने बच्चे को बैठा कर एक ज़रूरी काम से गयी थी। जब वापस आयी तो मेरा बेटा यहाँ नहीं मिला। मैं अपने बच्चे को खोज रही हूँ। अगर आपने उसे देखा है तो कृप्या मुझे बताइऐ।'' उस आदमी ने कहाः ''बेटी! परेशान मत हो, तुझे तेरा बच्चा मिल जायेगा। मेरे साथ आ।'' वह दोनों चलते–चलते उस मन्दिर के पास पहुँचे। बूढ़े आदमी ने मन्दिर में रखी हुई मूर्ति की तरफ इशारा करते हुऐ बोला ''यह मेरा ख़ुदा है ,तुम अपने बच्चे का नाम बताओ मैं अपने ख़ुदा से दुआ करता हूँ। यह तुम्हारे बच्चे से तुम्हें मिला देगा''। औरत ने बूढ़े आदमी को अपने बच्चे का नाम बताया। वह आदमी मूर्ति के पास गया और आँखें बन्द करके और हाथ जोड़कर कहने लगा ''ऐ खुदा इस औरत का बच्चा गायब हो गया है, इसे इसके बच्चे से मिला दे। बच्चे का नाम है मुहम्मद (ﷺ)। बूढ़े ने जैसे ही मूर्ति के सामने बच्चे का नाम लिया बुत धड़ाम से ज़मीन पर गिर गया। बूढ़े ने जो आँखें खोलीं तो देखा उसका पत्थर से बना हुआ भारी भरकम खुदा चूर–चूर हो गया था।

**प्यारे बच्चो!** क्या आप को मालूम है कि बूढ़े ने जिनका नाम लिया था वह कौन थे? वह हम सबके नबी हज़रत मुहम्मदुर रसूलुल्लाह ﷺ थे, और वह औरत दाई हलीमा सादिया रज़ियल्लाहु अन्हा थीं। एक बार वह बचपन में मुहम्मद ﷺ को लेकर उनके घर आ रहीं थीं। तो रास्ते में यह वाक़या पेश आया था। जब आप मक्का पहुँचीं तो उन्होंने देख़ा कि आप अपने घर पहुँच चुके थे।

## दो नन्हें मुबल्लिग़

**बच्चो!** इमामे ह़सन और इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के बचपन का वाक़्या है। एक दिन दोनों भाई नहरे फ़ुरात (ईराक़ की मशहूर नदी) की तरफ़ जा रहे थे। उन्होंने वहाँ एक बूढ़े मुसलमान को देखा जो वुज़ू बना रहे थे, लेकिन सही तरह से वुज़ू नहीं बना पा रहे थे। इसलिए

कि उन्हें वुज़ू बनाने का सुन्नत तरीक़ा मालूम नहीं था। ये दोनों भाई सुन्नत के मुताबिक वुज़ू करना जानते थे और चाहते थे कि उस मुसलमान को वुज़ू बनाने का सही तरीक़ा सिखा दें। लेकिन डर था कि बूढ़े मियाँ नाराज़ न हो जायें। अचानक दोनों भाइयों के दिमाग में एक ख़्याल आया और उस मुसलमान के पास पहुँच गये। पहले उन्हें सलाम किया फिर कहा दादा जान हम दोनों भाई वुज़ू बना रहें है। आप देख कर बताइये कि दोनों में से किन का वुज़ू सुन्नत के मुताबिक है। यह कह कर दोनों भाई वुज़ू बनाने लगे। जब वुज़ू बना चुके तो बूढ़े मुसलमान ने कहाः बच्चो! तुम दोनों का वुज़ू सुन्नत के मुताबिक था। आज तक मैं ख़ुद ग़लत तरीक़े से वुज़ू बनाता था। लेकिन तुम दोनों को देख कर आज मैं भी वुज़ू का सुन्नत तरीक़ा सीख गया। अल्लाह तआ़ला तुम दोनों को ख़ुश रखे। यह कहकर बूढ़ा मुसलमान चला गया और दोनों भाई ख़ुशी–ख़ुशी घर लौट आये।

**प्यारे बच्चो:** इस कहानी से हमें सबक़ मिलता है कि हमें बचपन से ही दीन का इल्म सीख़ना चाहिए, और दूसरों को सिख़ाना चाहिए। अगर कोई हमसे उम्र में बड़ा हो और दीन की बातें ना जानता हो तो उसे बताने में उसके अदब का ख़्याल रखना चाहिए।

★ ★ ★

**★लाइब्रेरियन, अलबरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीटयूट, अलीगढ़।**

पेज न0 44 का बाक़ीः निफाज़ से होती है। 26 जनवरी 1950 ई0 से पहले हमारा मुल्क अंग्रेज़ों के बनाये हुये दस्तूर या क़ानून (Government of India Act) 1935 के तहत था। लिहाज़ा 26 जनवरी 1950 ई0 को न सिर्फ़ यह कि एक नये दस्तूरे हिन्द का निफाज़ अ़म्ल में आया बल्कि अंग्रेज़ी हुकूमत के बनाये हुये क़ानून से निजात भी मिली।

यौमे जम्हूरिया की तक़रीबात का प्रोग्राम भारत सरकार की जानिब से राष्ट्रपति भवन के क़रीब राजपथ पर होता है, जिसमें राष्ट्रपति मुल्क से ख़िताब करता है। हमारे मुल्क में यौमे आज़ादी (15 अगस्त) और यौमे जम्हूरिया (26 जनवरी) भारत सरकार के ज़रिये होने वाली सबसे बड़ी तक़रीबात हैं।

★ ★ ★

**★ शोबा–ए–सियासियात (ए.एम.यू) अलीगढ़**

# विसाल

**हज़रत मौलाना मशहूद रज़ा ख़ान साहब का इन्तिक़ाल**

अहले सुन्नत व जमाअ़त के एक अज़ीम आलिमे दीन शेर बेशा–ए–अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा हशमत अ़ली ख़ान अलैहिर्रहमा के साहबज़ादे मौलाना मशहूद रज़ा ख़ान साहब का 19 सितम्बर 2015 को इन्तेक़ाल हो गया "اِنَّالِلّٰہِ وَاِنَّااِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ" ख़ानक़ाहे बरकातिया से आप को बेहद लगाव था। अल्लाह तआ़ला आपको जन्नतुल फ़िरदौस में जगह दे, और पसमांदगान को सब्रे जमील अ़ता फ़रमाए। (आमीन)

# मुर्शिदाने मारहरा के तब्लीग़ी असफ़ार

मुर्शिदाने मारहरा (हुज़ूर अमीने मिल्लत और हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत दामत बरकातुहुम) अपनी दीनी, मिल्ली, तदरीसी, ख़ानक़ाही, रिफ़ाही, त़ालीमी, घरेलू और दूसरी मसरूफ़ियात के बावजूद कभी–कभी दीन की तब्लीग़ और अल्लाह के बन्दों की हिदायत व रहनुमाई के लिये दूर दराज़ का सफ़र करते हैं, और दीनी मजलिसों और मज़हबी प्रोग्रामों में शरीक होते हैं। हर दौरे में बे शुमार लोग आपके नसीहत आमेज़ कलेमात से फ़ायदा उठाते हैं, और बहुत से लोग आपके मुबारक हाथों पर तौबा कर के सिलसिला–ए–बरकातिया में दाख़िल होते हैं। इन मुर्शिदाने किराम के इस साल (2015 में) होने वाले कुछ अहम दौरों की रिर्पोट यहाँ पेश की जा रही है।

**(इदारा)**

मुहम्मद अकबर क़ादरी ★

## हुज़ूर अमीने मिल्लत सय्यद शाह मुहम्मद अमीन मियाँ क़ादरी बरकाती के दौरे

**12, 13, मार्च (2015) तौलिह्वां (नेपाल) का दौराः**

हुज़ूर अमीने मिल्लत दामा ज़िल्लुहु 12 मार्च को **"International सूफ़ी सय्यद शाह बरकतुल्लाह कॉन्फ्रेंस"** में शरीक होने के लिये नेपाल तशरीफ़ ले गये। 11 मार्च की शाम को दिल्ली पहुँचे, और जनाब हसनैन बरकाती साहब के यहाँ क़याम फ़रमाया। सुबह को दिल्ली एयरपोर्ट से हवाई जहाज़ के ज़रिया काठमाण्डू पहुँचे। फिर वहाँ से बस का सफर कर के तौलिह्वां, जिला कपिलवस्तु के मशहूर इदारा **"जामिया इस्लामिया अहसनुल बरकात"** तशरीफ़ लाये, जहाँ पर पहले से मौजूद उलमा, मशाईख़ और आम मुसलमानों ने आपका पुरजोश इस्तिक़बाल किया, फिर आप अक़ीदत मंदों के झुरमुट में अपनी क़यामगाह पर तशरीफ़ लाये, वहाँ भी घंटों मुलाकातों का सिलसिला जारी रहा। इशा की नमाज़ के बाद कॉन्फ्रेन्स शुरू हुई। देर रात तक मक़ामी व बैरूनी उ़लमा–ए–किराम के इस्लाही बयानात होते रहे। आख़िर में हज़रत का ख़िताब हुआ। आप ने तसव्वुफ़ और सूफ़िया–ए–किराम की ख़िदमात के ह़वाले से बड़ा बसीरत अफ़रोज़ खिताब फ़रमाया। आपने फ़रमाया कि सूफ़िया–ए–किराम की ज़िन्दगी का एक ही मक़सद थाः अल्लाह के बन्दों की इस्लाह और उनकी ख़िदमत। वह अपने इस मक़सद में इस क़दर मुख़्लिस थे कि न किसी की तारीफों से उन्हें कोई सरोकार था, और ना ही किसी के तानों से। हम जब तक अपने अन्दर यह जज़्बा पैदा न कर लें, तब तक दीन की सही ख़िदमत

नहीं हो सकती। प्रोग्राम सलात व सलाम और आपकी रिक़्क़त आमेज़ दुआओं पर ख़त्म हुआ। प्रोग्राम के बाद काफ़ी देर तक मिलने वालों की भीड़ लगी रही। बाद नमाज़े फ़जर आपने थोड़ी देर आराम फ़रमाया, और फिर हवाई जहाज़ से वापस आ गये।

**6, 7 अप्रैल (2015) राउरकेला (उड़ीसा) का दौराः**

हुज़ूर अमीने मिल्लत साहब 6 अप्रैल को हवाई जहाज़ से राँची तशरीफ़ ले गये। राँची एयरपोर्ट पर हाजी युसूफ़ बरकाती और मुहम्मद सलीम कुरैशी हज़रत के इस्तिक़बाल के लिये पहले से मौजूद थे। एयरपोर्ट पर हज़रत की गुलपोशी हुई फिर सब लोग ट्रेन से राउल केला (उड़ीसा) पहुँचे, जहाँ पर जमियतुल कुरैश कमेटी के पुरजोश अराकीन के साथ सैकड़ों मुसलमानों ने फूलों के हारों और अल्लाहु अकबर के नारों से हज़रत का शानदार इस्तक़बाल किया। वहाँ से हज़रत मुहम्मद सलीम कुरैशी साहब के मकान पर तशरीफ़ लाये, यहीं पर आपके क़याम का इन्तज़ाम था। शाम तक मुरीदीन व मुतवस्सलीन से मुलाक़ातों का सिलसिला जारी रहा। इशा की नमाज़ के बाद हज़रत की सरपरस्ती में **''ताजदारे मदीना कॉन्फ्रेन्स''** शुरू हुई, मुक़ामी और बैरूनी उलमा–ए–किराम के बयानात के बाद हज़रत का ख़िताब हुआ। जिस में आपने मुसलमानों को ख़ास तौर से बरकातियों को नसीहत करते हुये फ़रमाया कि आप लोग अक़ाइदे अहले सुन्नत और मसलके आला हज़रत पर मज़बूती से कायम रहें, और आपस में मिलजुल कर रहें, और हर एक के दुख दर्द में काम आयें। आपने तालीम पर जोर देते हुये फ़रमाया कि खुदा के वास्ते आप लोग अपने बच्चों को आला तालीम दिलायें, इसी में दोनों जहाँ की कामयाबी है। इस मौक़े पर आपने ख़ानकाहे बरकातिया का नारा ''आधी रोटी खाइये बच्चों को पढ़ाइये'' भी दिया। आपके ख़िताब के बाद सलात व सलाम और फिर आपकी दुआ पर जलसा ख़त्म हुआ। प्रोग्राम के बाद बहुत से मुसलमान अपने गुनाहों से ताइब होकर सिलसिले में दाख़िल हुये।

**17, 18, 19 अप्रैल (2015) जयपुर, राजस्थान और मुम्बई का दौराः**

17 अप्रैल को हुज़ूर अमीने मिल्लत, मुज़फ़्फ़रूल्लाह ख़ान उर्फ़ भूरी भाई की साहबज़ादी के निकाह के प्रोग्राम में शरीक होने के लिये रवाना हुए, और जयपुर के मशहूर होटल Holiday Inn तशरीफ़ लाये, जहाँ पर आपके क़याम का इन्तज़ाम था। वहाँ थोड़ी देर आराम करने के बाद शादी हॉल (कुण्डा पैलेस) तशरीफ़ ले गये, वहाँ पर भूरी भाई के अहबाब के साथ मुफ़्ती अ़ब्दुस्सत्तार रज़वी, अल्लामा सय्यद कौसर रब्बानी, क़ारी इकराम आ़लम मिस्बाही शुजाअ़त अ़ली क़ादरी और बहुत से मुसलमान आप के आने के इन्तज़ार में थे। हज़रत के आते ही सब ने आप की गुल पोशी की और मुसाफ़ा व दस्तबोसी किया। रस्मे निकाह से पहले अल्लामा सय्यद कौसर रब्बानी साहब का मुख़्तसर ख़िताब हुआ। उसके बाद हज़रत ने निकाह के फ़ावाईद और जहेज़ के नुक़सानात पर जामेअ़ ख़िताब फ़रमाया। फिर आपने भूरी भाई की साहबज़ादी

से हाजी रफ़अत साहब के भतीजे का निकाह पढ़ाया। निकाह के बाद बहुत से लोग बैअत होकर बरकाती सिलसिले में दाख़िल हुये।

18 अप्रैल को हज़रत को दिल्ली में दारूल उ़लूम निज़ामिया ग़ौसुल उलूम शकूरपुर कॉलोनी के ''निज़ामी कॉन्फ्रेन्स व जलसा–ए–दस्तार बंदी'' में शिरकत करनी थी। यह जलसा हज़रत की सदारत में था, और मुन्तज़िम क़ारी असरार अहमद साहब थे। हज़रत जयपुर से सीधे दिल्ली के लिये रवाना हुये। शाम के क़रीब मन्ज़िल पर पहुँच गये। इशा की नमाज़ के बाद जलसा शुरू हुआ। जलसे में हज़रत ने ''इ़ल्म की अहमियत'' पर शानदार ख़िताब फ़रमाया। 19 अप्रैल को जनाब मुश्ताक शेख़ा साहब की साहबज़ादी का निकाह पढ़ाना था, इसलिए हज़रत ख़िताब के फ़ौरन बाद दिल्ली एयरपोर्ट के लिये रवाना हो गये। और वहाँ से बज़रिया हवाई जहाज़ मुम्बई के लिये परवाज़ कर गये।

19 अप्रैल की सुबह को हज़रत मुम्बई पहुँचे। एयरपोर्ट पर जनाब अ़ब्दुल अज़ीज़ सुन्नी, इम्तियाज़ बरकाती, फ़ारूख़ बरकाती, मुश्ताक़ सूरती वगैरह बिरादराने तरीक़त पहले से मौजूद थे। उन्होंने हज़रत का इस्तक़बाल किया, फिर सब लोग मुश्ताक शेख़ा साहब के घर पहुँचे। नाश्ता वग़ैरह करने के बाद हज़रत ने थोड़ी देर आराम किया, फिर निकाह का प्रोग्राम शुरू हुआ, जिसमें हज़रत ने पहले मुख़्तसरन ख़िताब फ़रमाया, उसके बाद मुश्ताक़ शेख़ा की साहबज़ादी शहाना बानों का निकाह पढ़ाया, और दुआ फ़रमायी। निकाह के बाद बहुत से लोगों ने हज़रत की दस्त बोसी की और कुछ लोग सिलसिले में दाख़िल भी हुये। उसके बाद ह़ज़रत की रवानगी का इन्तज़ाम हुआ, और आप ख़ैरियत से मन्ज़िल पर वापस आ गये।

**24, 25, 26 अप्रैल (2015) धौलपुर (राजस्थान), भाग्य विहार डबास (दिल्ली) और लोनी (दिल्ली) का दौराः**

24 अप्रैल को हुज़ूर अमीने मिल्लत साहब धौलपुर के लिये रवाना हुये। वहाँ दारूल उ़लूम गुलशने बरकात में आपकी सदारत में एक शानदार जलसा–ए–दस्तार बंदी का प्रोग्राम रखा गया था। जिस वक़्त धौलपुर वालों को आप के आने की ख़बर हुई सारे लोग आपके इस्तक़बाल को निकल पड़े। ह़ज़रत सब का सलाम लेते और दुआ़एं देते हुए मदरसे में पहुँचे, वहाँ भी उलमा–ए–किराम ने आपकी गुलपोशी की। फिर ह़ज़रत अपनी आरामगाह पर पहुँचे और चाय नाश्ता किया। नमाज़े इशा के बाद प्रोग्राम शुरू हुआ। पहले उलमा–ए–किराम के बयानात हुये, उसके बाद आपके हाथों से दस्तार बंदी की रस्म अदा हुई, फिर आपका ख़िताब हुआ। आप ने इल्मे दीन की फ़ज़ीलत पर गुफ्तगू करते हुये फ़रमायाः ''आज मुझे बड़ी ख़ुशी हो रही है कि मैं अपनी ज़िन्दगी में पहली बार 8 साल के हाफ़िज़े क़ुरआ़न के सर पर ताज सजाने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा हूँ। यक़ीनन मुबारक बाद के लायक़ हैं इस बच्चे के वालिदेन और असातिज़ा, जिन्होंने बड़ी ही मेहनत से बच्चे को इस मुक़ाम पर पहुँचाया''। आपके ख़िताब के बाद सलात व सलाम हुआ, और आपकी दुआ़ पर

प्रोग्राम ख़त्म हुआ। प्रोग्राम के बाद बहुत से मुसलमान सिलसिले में दाख़िल हुये।

25 अप्रैल को भाग्य विहार मुबारकपुर डबास दिल्ली में हज़रत की सरपरस्ती में बनाम **''बरकात–ए–औलिया कान्फ्रेंस''** थी, इसलिए आप 25 अप्रैल को धौलपुर से रूख़सत् होकर सीधे भाग्य विहार पहुँचे। वहाँ के मुसलमानों ने बड़ी अक़ीदत मंदी का मुज़ाहरा किया। इस प्रोग्राम में तसव्वुफ़ के हवाले से हज़रत का बहुत नसीहत आमेज़ ख़िताब हुआ। आप ने अपने ख़िताब में मुसलमानों को सूफ़िया–ए–किराम से अक़ीदत व मुहब्बत रखने और उनके बताये हुये रास्ते पर चलकर ज़िन्दगी गुज़ारने पर ज़ोर दिया। यह प्रोग्राम मौलाना अनीस अहमद मिस्बाही के ज़ेरे एहतमाम मुन्अ़क़िद किया गया था।

26 अप्रैल को लोनी (दिल्ली) के मुसलमानों ने हज़रत की सदारत में बहुत ही शानदार कान्फ्रेंस मुन्अ़क़िद की थी। जिसका नाम था **''अशरा–ए–मुबश्शरा कान्फ्रेंस''**। इस प्रोग्राम में हज़रत का मुख़्तसर लेकिन जामेअ़ ख़िताब हुआ। यह प्रोग्राम सलात व सलाम के बाद हज़रत की दुआ पर ख़त्म हुआ। प्रोग्राम के बाद बहुत से मुसलमान अपने गुनाहों से तौबा कर के सिलसिले में दाख़िल हुये। दूसरे दिन हज़रत वहाँ से रवाना होकर घर वापस आ गये। ★★★

★ *अकाउंट ऑफ़िसर, अलबरकात ऐजुकेशनल सोसाइटी, अलीगढ़*

**क़ारी मुहम्मद क़ौसर बरकाती ★**

# हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत सय्यद शाह नजीब हैदर नूरी बरकाती के दौरे:

**27, 28, फ़रवरी 2015 अहमदाबाद, बड़ौदा (गुजरात) का दौराः**

27 फ़रवरी बरोज़ जुमा हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत हवाई जहाज़ से अहमदाबाद तशरीफ़ ले गये। वहां की मशहूर दरगाह शाह क़ुतबे आ़लम से मिली हुई जामा मस्जिद में अवाम की भीड़ में जुमा की नमाज़ अदा फ़रमायी। उसके बाद हसन बरकाती साहब के घर तशरीफ़ ले गये, जहाँ पर घंटों तक आपसे मिलने और दुआ़एं लेने वालों की भीड़ लगी रही। शाम को हज़रत वहाँ से एक जलसे में तशरीफ़ ले गये, और बड़ी नसीहत आमेज़ तक़रीर फ़रमायी। आपकी तक़रीर सुनने के लिये लोगों की बेताबी देखने के लायक़ थी। जब जलसा ख़त्म हो गया तो कुछ लोग हुज़ूर के पास आये, और बोले ''हुज़ूर हम लोग अब तक गुमराही में थे। हमारा दिल वहाबियत की तरफ़ माइल था। मगर आप के ख़िताब ने हम पर हक़ को रौशन कर दिया।'' वह लोग हज़रत के हाथ पर तौबा करके सिलसिले में दाख़िल हो गये।

28 फ़रवरी को हज़रत शहरे बड़ौदा में तशरीफ़ ले गये। दूसरे दिन यानी 1 मार्च को बड़ौदा के सुन्नी भाईयों के घरों को ज़ीनत

बख़्शी। वहाँ के लोगों से मिले, ख़ैरियत मालूम की और उनके दुख़ दर्द को बाँटा। बड़ौदा के मुसलमानों ने आपको हद दर्जा मुहब्बतों से नवाज़ा।

**14 मार्च 2015 पूरनपुर, पीलीभीत (यू. पी) का दौराः**

14 मार्च बरोज़ जुमेरात हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत अपनी जागीर पूरनपुर में एक दीनी जलसा और निकाह की तक़रीब में शिरकत फ़रमाने की गरज़ से तशरीफ़ ले गऐ। पूरनपुर के मुसलमान अपने पीरो मुरशिद के इस्तक़बाल के लिये अपनी–अपनी गाड़ियों पर सवार हो कर कई किलोमीटर दूर निकल आये थे। हुजूर क़ाफ़िले की शक्ल में पूरनपुर में दाख़िल हुये। दिन में मुहतरम जनाब मुहम्मद नदीम बरकाती साहब का निकाह हुआ। हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत ने निकाह की रस्म अदा फ़रमायी। उसी रात जलसा हुआ जिसमें बहुत से उलमाए–ए–किराम की तक़रीरें हुईं। अख़िर में हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत साहब का लाजवाब ख़िताब हुआ। लोगों ने आपके ख़िताब को बड़ी सन्जीदगी से सुना। उसके बाद सलाम हुआ और आपकी दुआ पर महफ़िल ख़त्म हुई।

**22, 23 मार्च को मुरावाँ (उन्नाव) और भरवारी लाड (इलाहाबाद) का दौराः**

22 मार्च को हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत, मुफ़्ती मुहम्मद हनीफ़ बरकाती साहब के गाँव मुरावाँ तशरीफ़ ले गये। सफ़र के दौरान हज़रत एक जगह (पूरा) में एक घण्टें के लिये रूके। वहाँ के लोगों को पता चला तो उन्होंने परवानों की तरह आपको घेर लिया। आपने मौक़े का फ़ायदा उठाते हुये एक मुख्तसर ख़िताब फ़रमाया, जिसमें लोगों के मक़सदे हयात को बड़े ही ख़ूबसूरत अंदाज़ में वाज़ेह किया। ख़िताब के बाद बहुत से लोग दाख़िले सिलसिला भी हुये। वहाँ से रवाना होकर आप मुफ़्ती साहब के गाँव पहुँचे और आराम फ़रमाया। उसी रात एक जलसा हुआ, जिसमें हज़रत का इस्लाही ख़िताब हुआ। आपने मुआशरे में फ़ैली हुई बुराइयों और उनको दूर करने के तरीक़ों को बड़े उम्दा अंदाज़ में बयान फ़रमाया। आपने फ़रमाया कि ऐ लोगो! मज़ारों पर चादर डालने से पहले अपने आस–पास पड़ोसियों को देखो कि कहीं तुम्हारा कोई पड़ोसी भूखा तो नहीं है? अगर कोई भूखा मिले तो उसे पहले खाना खिलाओ, अगर कोई नंगा हो तो पहले उसका बदन छुपाओ, फ़िर कब्रों पर चादर चढ़ाना।

23 मार्च 2015 को वहाँ से हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद उवैस साहब की दावत पर भरवारी लाड (इलाहाबाद) तशरीफ़ ले गये। आपके साथ मुफ़्ती मुहम्मद हनीफ़ साहब और शाइर–ए–इस्लाम इमरान जयपुरी साहब भी थे। मुफ़्ती उवैस साहब का कहना था कि इस इलाक़े में अब तक कोई साहबे तरीक़त बुज़ुर्ग तशरीफ़ नहीं लाये। यह पहला मौक़ा था जब हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत साहब ने तमाम तर तकलीफ़ों को बर्दाशत कर के इस सर ज़मीन को ज़ीनत बख़्शी। रात में वहां एक जलसा भी था जिसमें हुजूर रफ़ीक़े मिल्लत साहब का ख़िताब हुआ। आपने माँ–बाप के अदब व एहतिराम के हवाले से बड़ी अच्छी तक़रीर फ़रमायी। आपने फ़रमायाः अपने माँ–बाप की

इज़्ज़त करो, उनको अपनी किसी भी ह़रकत से तक़लीफ़ न दो। लोगों को मुख़ातिब करते हुये फ़रमायाः ऐ ख़ुदा के बन्दो! अपने बच्चों को ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ाओ। आज पूरे मुआ़शरे में यह बात आम होती जा रही है कि लोग अपने पीर की तारीफ़ और दूसरों के पीरों की बुराइयाँ करते रहते हैं। आप ने बरकातियों को तम्बीह़ करते हुये फ़रमायाः अपने पीर को छोड़ो मत और दूसरे के पीर को छेड़ो मत। इस मौक़े पर आप ने ख़ानक़ाहे बरकातिया का नारा ''आधी रोटी खाइये बच्चों को पढ़ाइये'' भी दिया और लोगों को मसलके आला हज़रत पर क़ायमो दायम रहने की तल्क़ीन फरमायी।

**16 मई 2015 जामिया नूरिया (इंदौर) का दौराः**

16 मई बरोज़ सनीचर को हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत साह़ब जामिया नूरिया के सालाना जलस–ए–दस्तार बंदी में तशरीफ़ ले गये। स्टेशन पर हज़रत का शानदार इस्तक़बाल हुआ, फ़िर आप क़याम गाह पर पहुँचे। नमाज़े ज़ोहर से फ़ारिग़ हो कर आप अपने मुरीदीन के घरों को तशरीफ़ ले गये। सबकी ख़ैरियत ली और दुआ़ओं से नवाज़ा। इशा की नमाज़ के बाद प्रोग्राम शुरू हुआ। कुछ उ़लमा–ए–किराम के बयानात हुये फिर हज़रत के हाथों फ़ारिग़ीन के सरों पर दस्तार सजाई गयी। रस्मे दस्तार बंदी के बाद हज़रत का नसीहतों भरा बयान हुआ। आप ने ख़िताब के दौरान फ़रमायाः ऐ अपने पीरों से अक़ीदत का दम भरने वाले नौजवानों! अपने माँ–बाप की दस्त बोसी किया करो। तुम अपने पीरों के हाथ तो चूमते हो लेकिन अपने माँ–बाप की नाफ़रमानी करते हो। याद रखना माँ–बाप की नाफ़रमानी कर के तुम जन्नत हरगिज़ नहीं पा सकते। सलात व सलाम के बाद आपकी दुआ़ पर जलसा ख़त्म हुआ। उसके बाद बहुत से लोग सिलसिले में दाख़िल हुये। इस मौक़े पर आप ने मुफ़्ती–ए–मालवा हज़रत मुफ़्ती ह़बीब यार साह़ब नईमी की अ़यादत भी फ़रमायी जो बीमार होने की वजह से इस जलसे में नहीं आ सके। ★★★

★ उस्ताद शोबा–ए–ह़िफ़्ज़ मदरसा क़ासिमुल बरकात मारहरा शरीफ़।

## गुज़ारिश

हज़रात! ''बरकत नामा'' सिर्फ एक रिसाला ही नहीं बल्कि ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा मुक़द्दसा की एक दीनी व समाजी तह़रीक है। ''बरकत नामा टीम'' ने रात दिन मेहनत करके यह रिसाला तैयार किया है ताकि हर घर में दीन का चिराग़ रौशन हो सके और हम सब दीन की बातों को जानें और अपने घरों को इस्लामी माहौल में ढाल सकें। यह रिसाला कोई दुनियावी फ़ायदे की नीयत से नहीं बल्कि दीन की ख़िदमत की नीयत से शुरू किया जा रहा है। ताकि बराबर मुस्लिम अवाम की तरबियत होती रहे। आप से गुज़ारिश है कि आप भी हमारी टीम का ह़िस्सा बनें, रिसाले को ख़ुद भी पढें और अपने घर वालों को भी इसके पढ़ने का आदी बनायें।

**''बरकत नामा'' को पढ़कर अपने सुझाव हमें ज़रूर भेजें।** अगर कोई ख़ामी नज़र आए तो ज़रूर इत्तिला करें। अपने दोस्तों, रिश्तेदारों और दूसरे मुसलमानों को भी इसका मेम्बर बनवायें।

**इस तहरीक की कामयाबी के लिये हमें हमेशा आप की दुआ़ओं की ज़रूरत है।**

mybarkatnama@gmail.com

*''बरकत नामा'' का* Mob. *और* WhatsApp No: 07607207280

*दुआ़ओं का तालिबः*

***सय्यद मुह़म्मद अमान क़ादरी***

# मुश्किल अलफ़ाज़ की तशरीह़

इस शुमारे के जिन मज़ामीन में मुश्किल अलफ़ाज़ आए हैं उनके मआ़नी और तशरीहात को यहाँ लिखा जा रहा है।

**स्कॉलरशिपः** वज़ीफ़ा

**उश्शाकः** मुह़ब्बत करने वाले

**मसनद नशीनः** मसनद पर बैठने वाले, सज्जादा नशीन

**इक्तिसादी बुह़रानः** माली कमी, मआ़शी गिरावट

**ताबईः** वह ख़ुश नसीब मुसलमान जिसने सह़ाबा–ए–किराम की ज़ियारत की हो।

**मशाइख़ः** अकाबिरे दीन, औलिया ए किराम

**आतिशकदाः** वह बिल्डिंग जहाँ आग की पूजा होती है।

**ग़ज़्वाः** वह जिहाद जिसमें हुज़ूर ﷺ ख़ुद भी शरीक हुए हों।

**ह़ज्जतुल वदाः** हुज़ूर ﷺ की ज़ाहिरी ज़िन्दगी का आख़िरी ह़ज जो 10 हि0 में अदा किया गया।

**कुन्नियतः** वह नाम जो माँ–बाप, बेटा–बेटी वग़ैरह की तरफ़ मनसूब हो।

**तक़र्ररुः** मुक़र्रर करना।

**मुर्शिदः** सीधी राह बताने वाला, पीर।

**बिदअ़तः** दीन में कोई नई बात या नई रस्म निकालना। यहाँ बिदअ़त से मुराद बुरी रस्म है।

**सलासिले तरीक़तः** तरीक़त के सिलसिले जैसे क़ादरिया, चिश्तिया, नक्शबन्दिया वग़ैरह।

**सरशारः** मस्त, मुराद इश्के नबी से भरा हुआ

**रह़लतः** मौत, इन्तिक़ाल

**बरगुज़ीदाः** चुना हुआ, ख़ुदा रसीदा

**मज़म्मतः** बुराई, निंदा

**निफ़ाज़ः** लागू होना

**तक़रीबातः** महफ़िलें

**दस्तूरे असासीः** बुनियादी क़ानून

**क़ुतुबः** मुसलमानों के अ़क़ीदे में वह वली जिसके ज़िम्मा किसी बस्ती या इलाक़े का इन्तज़ाम हो।

**दुआ़ए बशमख़ः** एक ख़ास दुआ़ का नाम

**पुश्तोंः** नस्लों, ख़ानदानों

**इन्साईक्लोपीडियाः** वह किताब जिसमें तमाम उलूम व फ़ुनून से मुतअ़ल्लिक़ मालूमात लिखी हों।

**सवानेहः** तज़किरा, किसी शख़्स की ज़िन्दगी के ह़ालात।

**ख़ातमुल अकाबिरः** ह़ज़रत सय्यद शाह आले रसूल अह़मदी अलैहिर्रह़मा का लक़ब।

**मुदावाः** इलाज, तदबीर।

**असरारः** भेद, छुपी हुई बातें।

**मारेफ़तः** पहचान, ख़ुदा सनाशी

**तख़ल्लुसः** शायर का वह छोटा नाम जो शेर में लिखा जाता है।

**जहाँदीदाः** दुनिया देखा हुआ, तजुर्बाकार।

**संगरेज़ेः** पत्थर के छोटे टुकड़े, कंकड़।

**ह़ातिफ़े ग़ैबीः** ग़ैब की आवाज़ देने वाला फ़िरिश्ता।

**रत्बो याबिसः** ख़ुश्क व तर, सब कुछ।

**क़ुब्बा–ए–ख़ज़राः** हरा गुम्बद, रौज़ा–ए–रसूल ﷺ

**ख़ुर्शीदः** सूरज

**उरूसः** दुल्हन

**सलाबतः** मज़बूती, ठोसपन

**अदावतः** दुश्मनी

**उम्मीः** हुज़ूर ﷺ का लक़ब

**ज़ोहदः** परहेज़गारी

**ममनूआ़ः** मना की हुई, ख़िलाफ़े क़ानून

**गुलपोशीः** फूलों का हार पहनाना